हालार-गौरव वज्रसेन-सौरभ

-: लेखक एवं संग्राहक :-

पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

हालार-गौरव वज्रसेन-सौरभ

–: लेखक एवं संग्राहक :–

जिनशासन के महान ज्योतिर्धर पूज्यपाद आचार्यदेव
श्रीमद् विजय **रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.** के
तेजस्वी शिष्यरत्न, अध्यात्मयोगी, भावाचार्य तुल्य
पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के
कृपापात्र चरम शिष्यरत्न, सरस्वती नंदन,
जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव
श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

274

卐 **प्रकाशन** 卐
दिव्य सन्देश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor,
बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे,
डॉ.एम.बी. वेलकर स्ट्रीट,
कालबादेवी, मुंबई-400 002.
Cell 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

आवृत्ति : प्रथम • **मूल्य :** 200/- रुपये • **प्रतियाँ :** 750
विमोचन तिथि : 28-5-2026
विमोचन स्थल : आराधना भवन-पाली, (राज.)
• **Website :** divyasandesh.store

आजीवन सदस्य योजना

आजीवन सदस्यता शुल्क - 4000/- रु.

• आप जैन धर्म के रहस्य, जैन इतिहास, जैन तत्त्वज्ञान, जैन आचार मार्ग, प्रेरणादायी कथाएँ आदि का अध्ययन करना चाहते हों तो आज ही आप **दिव्य संदेश प्रकाशन** मुम्बई की आजीवन सदस्यता प्राप्त कर लें। सदस्य बनते ही अध्यात्मयोगी निःस्पृह शिरोमणि स्व. पूज्यपाद पंन्यासप्रवर **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** एवं उन्हीं के चरम शिष्यरत्न प्रवचन प्रभावक परम पूज्य ***आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.*** सा. द्वारा लिखित उपलब्ध 7 पुस्तकें दी जाएंगी और **अर्हद् दिव्य संदेश** मासिक तथा भविष्य में हिन्दी भाषा में प्रकाशित पुस्तकें (Open Book Exam साधु–साध्वी उपयोगी पुस्तकें एवं पुनः मुद्रित पुस्तकों को छोड़कर) घर बैठे प्राप्त होगी। आप आजीवन सदस्यता शुल्क मुंबई या बैंगलोर के पते पर दिव्य संदेश प्रकाशन-मुंबई के नाम से चैक व ड्राफ्ट से भेजें।

प्राप्ति स्थान

1. चेतन हसमुखलालजी मेहता
भायंदर (M.S.)
M. 9867058940

2. प्रवीण गुरुजी
C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि जैन पुस्तकालय
श्री आदिनाथ जैन टेंपल,
चिकपेठ, बेंगलोर-560 053.
M. 9036810930

3. राहुल वैद
C/o. अरिहंत मेटल कं.,
4403, लोटन जाट गली,
पहाड़ी धीरज, सदर बाजार,
दिल्ली-110 006.
M. 9810353108

4. चंदन एजेन्सी
607, चीरा बाजार,
मुंबई-400 002.M.9820303451

आजीवन सदस्यता शुल्क
Rs. 4000/- भिजवाने का पता एवं पुस्तक-प्राप्ति-स्थान :

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन
C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डिंग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Mobile : 84 84 84 84 51 (only whatsapp)

(2) दिव्य संदेश प्रचारक
प्रकाश बड़ोल्ला, 52, 3rd Cross, शंकरमट रोड, शंकरपुरा, बैंगलोर-560 004. M. 8971230600

प्रकाशक की कलम से

नमस्कार महामंत्र के बेजोड साधक, अध्यात्मयोगी, निःस्पृह शिरोमणि **पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** के कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, सरस्वती नंदन, प्रवचन प्रभावक **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** द्वारा हिन्दी भाषा में आलेखित **274वीं पुस्तक 'हालार-गौरव वज्रसेन-सौरभ'** (समतामूर्ति पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी गणिवर्य का संक्षिप्त जीवन परिचय) का प्रकाशन करते हुए हमें अत्यंत ही हर्ष हो रहा है ।

प्रस्तुत पुस्तक के लेखक पूज्य आचार्य भगवंत को बचपन से ही महापुरुषों के जीवन चरित्र पढने का बहुत ही शौक था-उन्होंने अपने बाल्यकाल में अनेक महापुरुषों के जैन-जैनेतर संतपुरुषों के आदर्श जीवन को उत्साह से पढा है ।

महापुरुष अपने आयुष्य की पूर्णाहूति के साथ इस जगत् से विदाई ले लेते है, परंतु वे आनेवाली भावी पीढी के लिए एक आदर्श छोडकर जाते है ।

'बृहत् शांति' स्तोत्र में ठीक ही कहा है–**'महाजनो येन गतः स पन्था'** महापुरुष जिस मार्ग से जाते हैं, वह पीछेवालों के लिए मार्ग बन जाता है ।

हालाररत्न पूज्य पंन्यासश्री वज्रसेनविजयजी म.सा. का जीवन-बाग भी अनेक गुण-पुष्पों से सुगंधित था । **सरस्वती-नंदन पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसनेसूरीश्वरजी म.सा.** ने उनके अनेकविध गुण-पुष्पों को संग्रहित कर इस पुस्तक में गुण पुष्पों की माला तैयार की है ।

हमें पूर्ण विश्वास है कि पूज्य पंन्यासजी म. के गुण-पुष्पों की यह **'गुणमाला'** अनेकों के जीवन में भी गुणों की सुवास फैलाए बिना नहीं रहेगी ।

नूतन मुनि श्री वज्रसेनविजयजी म. के आत्म विकास के संदर्भ में दादा गुरुदेव **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय प्रेमसूरीश्वरजी महाराजा** को लिखा गया **पूज्य पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** का

शुभ भावना भावित पत्र

वि.सं. 2012, वैशाख शुक्ल-9, दादर-मुंबई

पूज्यपादश्री की पवित्र सेवा में, **लि. सेवक भद्रंकर की वंदनावली स्वीकार करे ।**

'सुंदर' के साथ लिखा पत्र मिला । समाचार जानकर आनंद हुआ । **कई भाइयों के द्वारा भी वहां हुई दीक्षा के शुभ समाचार मिले है । नूतन मुनिराज आनंद में होंगे ?** सभी मनोरथों को पूर्ण कर विधिपूर्वक दीक्षा हुई होने से एवं आपश्री की अपार करुणा दृष्टि के प्रभाव से दिन-प्रतिदिन प्रगति होगी, उसमें शंका को स्थान नहीं है ।

यहां भी नूतन (मु. वज्रसेनविजय) को पूर्वकृत सुकृतों के योग से उत्तम संयोग मिले हैं । कई बार पुण्य से जो होता है, वह मनुष्य नहीं कर सकता है । करोडों प्रयत्नों से जो सामग्री नहीं मिले, ऐसी सामग्री उसे प्राप्त हुई हैं, यह नूतन मुनि के प्रबल पुण्योदय का सूचक है ।

आज दिन तक तीनों योग बाहर भटक रहे थे, उन्हें उतने ही वेग से प्रशस्त कार्यों में जोडकर ज्ञान, विनय, वैयावच्च आदि गुणों में आगे बढकर आदर्श मुनि जीवन जीकर स्व-पर का हित साधनेवाला बने, यही चाहता हूँ ।

जिस पुण्योदय से ये सभी शुभ संयोग प्राप्त हुए है, उन्हें इस प्रकार सफल बनाए कि भविष्य में 1-2 भव में ही परम गुरु तीर्थंकर का संयोग प्राप्त हो जाय ।

नूतन मुनि की खुब ही सुंदर प्रगति हो, ऐसे संयोग चारों ओर से दिखाई दे रहे है । उसे जो सामग्री मिली है, उसकी खुब अनुमोदना हो रही है । शीघ्रता से प्रगति करे, यही भावना रहती है और वह सब उसे सहज है ।

–भद्रंकर की वंदना ।

मुमुक्षु वर्धमानकुमार
अपने माता-पिता के साथ

शिक्षादाता
पू.मु. श्री महाभद्रविजयजी म.

गुरुदेव
पू.मु. श्री कुंदकुंदविजयजी म.

पूज्य मुनिश्री
वज्रसेनविजयजी म.

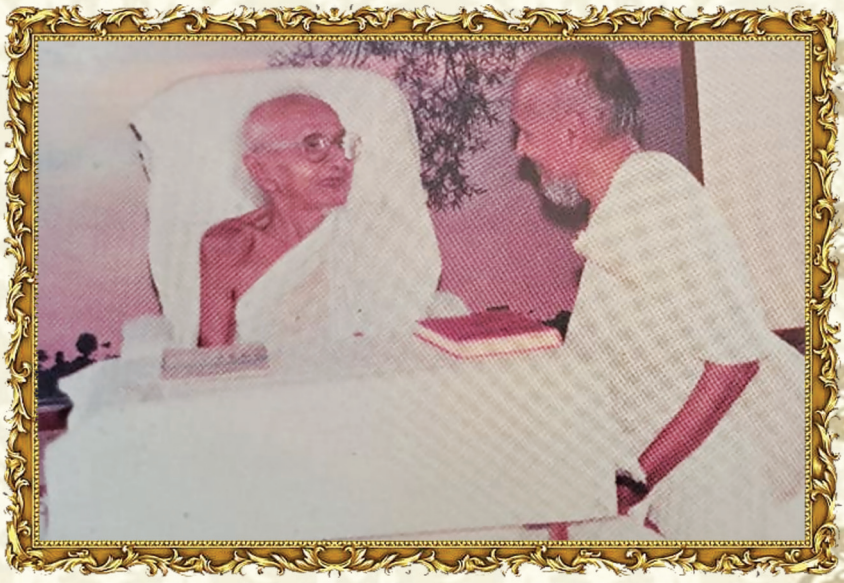

पू.आ. श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म., पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.
को 'आचार्यपद' हेतु आज्ञा करते हुए

पू. पिता मुनिश्री महासेनविजयजी म. के साथ
पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म. तथा पू.मु. श्री रत्नसेनविजयजी म.

पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. तथा
पू.आ.श्री कलापूर्णसूरिजी म. के साथ
पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.

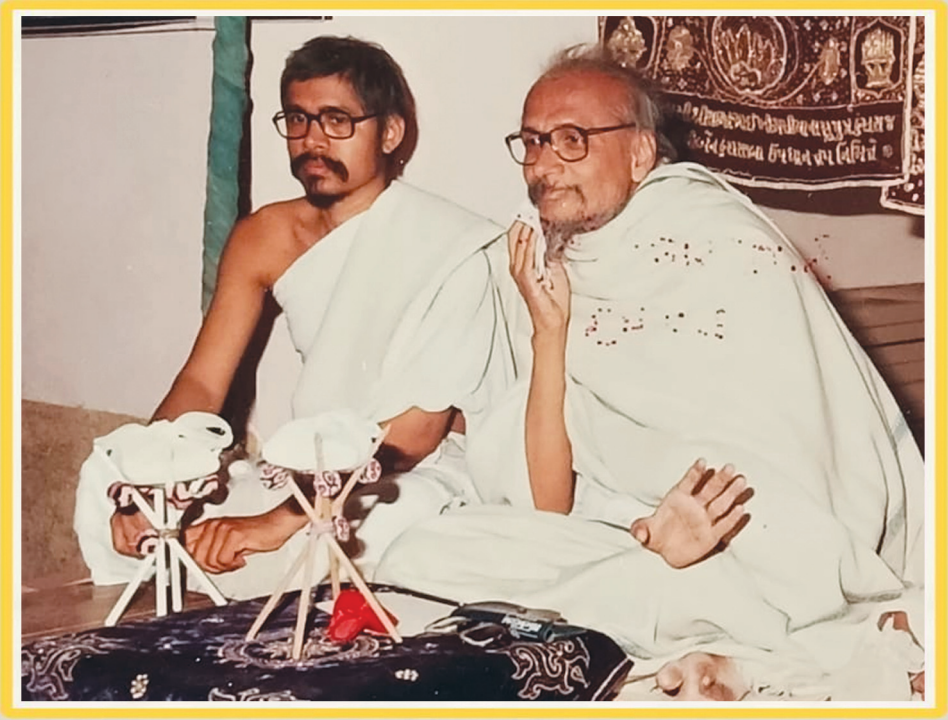

प्रवचन देते हुए पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.
पास में पू.मु. श्री रत्नसेनविजयजी म.

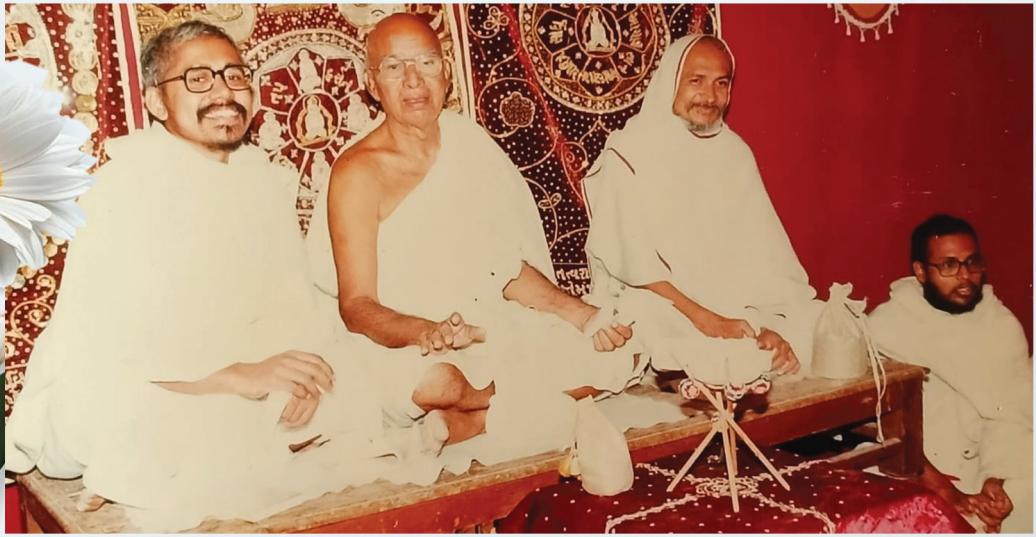

प्रसन्न मुद्रा में पू.आ. श्री प्रद्योतनसूरिजी म., पू.मु. श्री वज्रसेन वि.म.,
पू.मु.श्री रत्नसेन वि.म., पू.मु.श्री हेमप्रभविजयजी म.

विविध मुद्राओं में
पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.

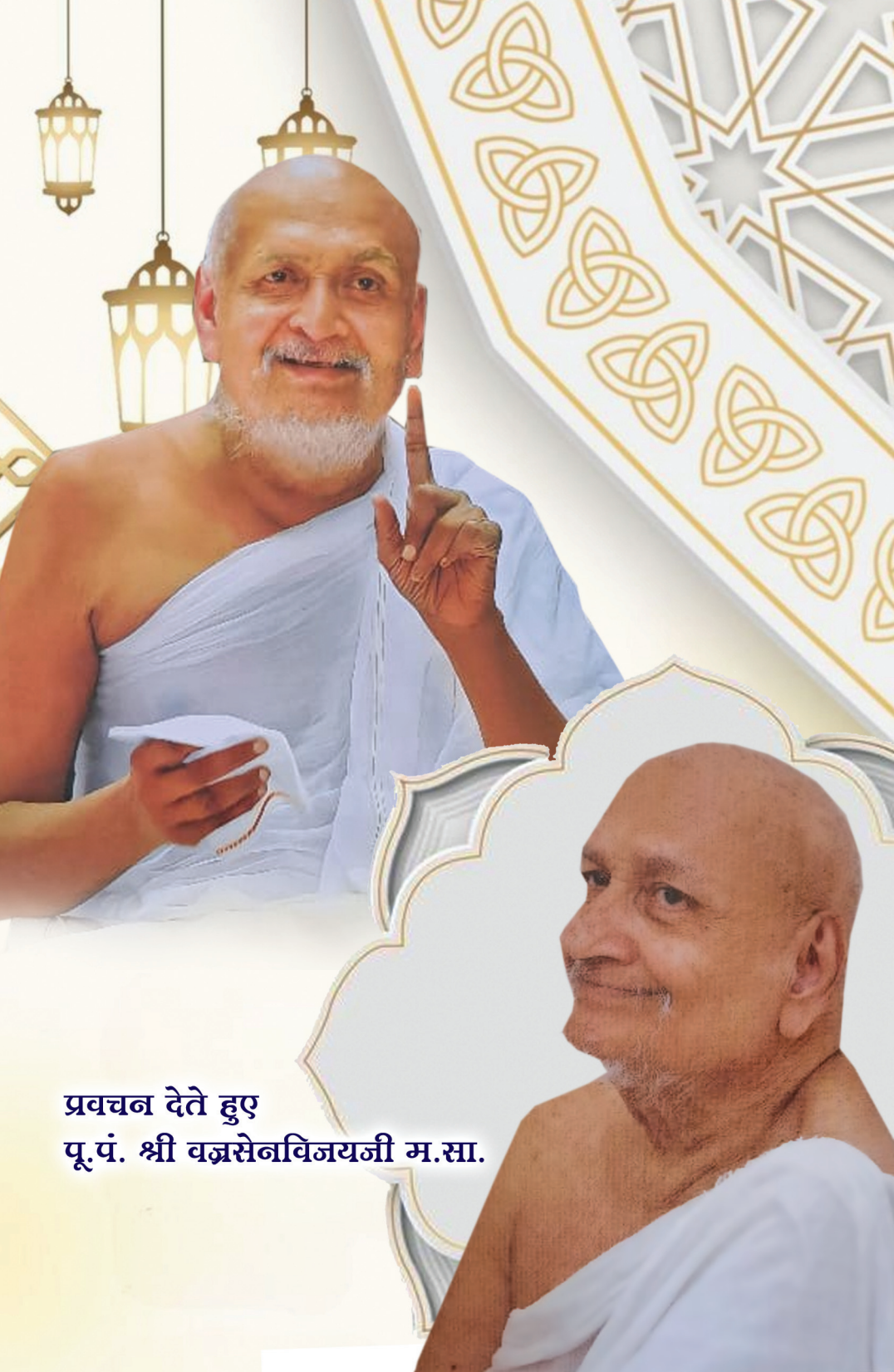

प्रवचन देते हुए
पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.

सरस्वती नंदन,
जैन हिन्दी साहित्य
दिवाकर पूज्य
आचार्यदेव
श्रीमद् विजय
रत्नसेनसूरीश्वरजी
महाराजा

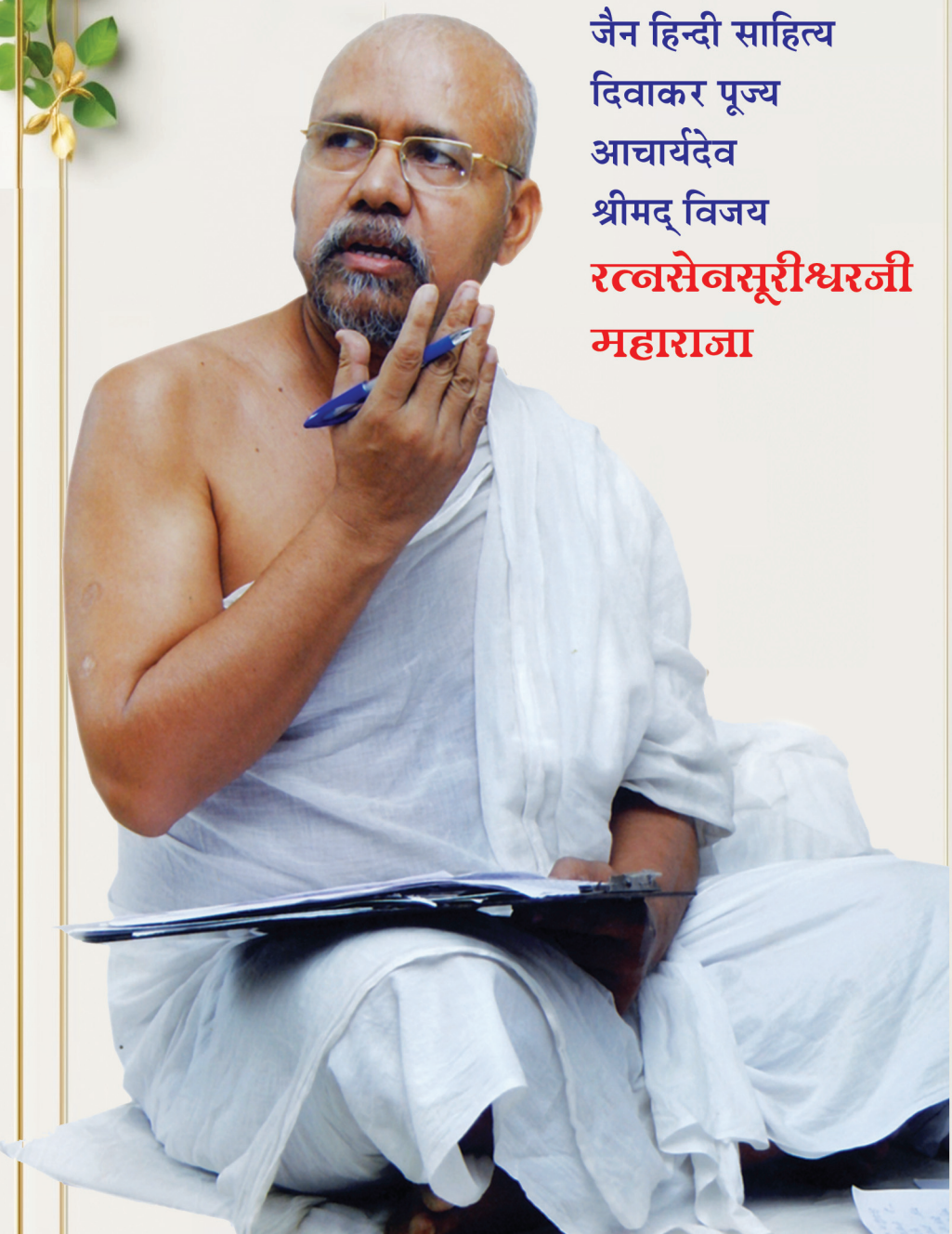

लेखक-संग्राहक की कलम से...

मेरे योग-क्षेम कर्ता पूज्य पंन्यास
श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.

जन्मभूमि बाली (राज.) की धन्यधरा पर वि.सं. 2033, माघ शुक्ला त्रयोदशी के शुभ दिन वर्धमान तपोनिधि **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री हर्षविजयजी गणिवर्य** के वरद हस्तों से मेरी भागवती-दीक्षा हुई और परम पुण्योदय से इस काल के श्रेष्ठ साधक, अध्यात्मयोगी, **निःस्पृहमूर्ति भावाचार्य तुल्य पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** का शिष्यत्व प्राप्त हुआ ।

दीक्षा जीवन से ही **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** ने मेरे अभ्यास की पूर्ण चिंता की है । मैं गुर्वाज्ञा से पाटण में अभ्यास कर रहा था, पूज्य **मु.श्री वज्रसेनविजयजी म.** उस समय पूज्यपाद गुरुदेव की सेवा में पिंडवाडा थे । दूर रहकर भी वे मेरे अभ्यास का पूरा-पूरा ध्यान रखते थे । उन्हीं की प्रेरणा से मैंने दीक्षा के पहले ही वर्ष में सिद्धहेम व्याकरण का अभ्यास किया था ।

मेरी दीक्षा के प्रथम वर्ष में **पू.पं. श्री हर्षविजयजी गणिवर** के सान्निध्य में पाटण में चातुर्मास था । **पूज्य गुरुदेव पू. पंन्यासजी भद्रंकरविजयजी म.** का चातुर्मास पिंडवाडा में था उस चातुर्मास में **पू.पंन्यासजी म.** का स्वास्थ्य खूब बिगड गया था ।

पूज्य गुरुदेवश्री की अस्वस्थता से मेरा मन विह्वल हो गया। मैंने **पूज्य मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** पर पत्र लिखा, मुझे वहां आने की भावना है।

पूज्यश्री ने खूब आत्मीयता से मुझे हितशिक्षा देते हुए पत्र लिखा, **'गुर्वाज्ञा से तुम दूर रहकर भी नजदीक हो। अभी अभ्यास की उम्र है अतः तुम्हारे लिए पाटण में रहकर दत्तचित्त से अभ्यास करना ही हितकारी है।'**

पत्रों के साथ-साथ प्रत्यक्ष मिलन में भी शास्त्र-अभ्यास में आगे बढाने में उनका खूब खूब मार्गदर्शन रहा है।

महोपाध्याय **श्रीमद् यशोविजयजी म.** ने सम्यक्त्व के 67 बोल की सज्झाय में कहा है :–

समकित दायक गुरुतणो, पच्चुवयार न थाय।
भव कोडा कोडे करी, करता सर्व उपाय ।।

सम्यक्त्व का दान करनेवाले का भी इतना उपकार है कि करोडों भवों तक उनकी सेवा की जाय तो भी उनके उपकार के ऋण में से मुक्त नहीं हो सकते है।

परार्थरसिक **पूज्य पंन्यासप्रवर श्री वज्रसेनविजयजी गणिवर** का मुझ पर असीम उपकार है।

यद्यपि मेरे महान पुण्योदय से उस काल के **महान योगी पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी** का शिष्यत्व प्राप्त हुआ परंतु मेरे दुर्भाग्य से मेरी दीक्षा के 3½ साल बाद ही उनका वियोग हो गया।

पूज्यपादश्री के वियोग के बाद मेरा संपूर्ण योगक्षेम **पूज्य पंन्यासजी श्री वज्रसेनविजय गणिवर** ने किया है।

मेरे संयम जीवन के 45 वर्षों में अनेक बार उनके सान्निध्य को पाने का मौका मिला, उनके सान्निध्य में परम निश्चिंतता का अनुभव किया है, वे मेरे ज्ञानदाता थे । मुमुक्षु अवस्था में जब मैं पूज्यपाद गुरुदेवश्री के सान्निध्य में संयम जीवन का प्रशिक्षण ले रहा था, तब लुणावा चातुर्मास (वि.सं. 2032) में **पूज्य मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** ने ही मुझे संस्कृत की दूसरी बुक का अभ्यास कराया था ।

वि.सं. 2036 में **पूज्य पं. श्री प्रद्योतनविजयजी म.** आदि के सान्निध्य में पाटण (गुज.) में चातुर्मास था । तब उस चातुर्मास दरम्यान **पू. हरिभद्रसूरिजी विरचित 'उपदेश पद'** ग्रंथ एवं **पू. विनयविजयजी विरचित 'कल्पसूत्र की सुबोधिका टीका'** का वाचन **श्री वज्रसेनविजयजी महाराज** ने कराया था ।

इसके सिवाय भी किसी भी ग्रंथ के वाचन दरम्यान कोई शंका पैदा होती तो उसका समुचित समाधान पूज्यश्री खूब संतोषप्रद रीति से करते थे ।

–मेरे सभी योगोद्वहन भी उन्हीं के मार्गदर्शनानुसार संपन्न हुए थे ।

–वि.सं. 2035 व 2036 के चातुर्मास में मेरी बैठक उन्हीं के पास थी ।

–पूज्यपाद गुरुदेवश्री के कालधर्म के बाद **पू.पं. श्री प्रद्योतनविजयजी म.सा.** के साथ मेरा मारवाड में आगमन हुआ । उनका विचरण गुजरात में था । क्षेत्र से दूर रहने पर भी वे मेरा पूरा-पूरा ध्यान रखते थे ।

मुझे चातुर्मास कहाँ और किसके साथ करना ? यह सब जवाबदारी वे पूर्ण निष्ठा से निभाते थे ।

–कभी-कभार जब भी छोटी-बडी बीमारी आई, दूर रहते हुए भी उन्होंने मेरा पूरा-पूरा ध्यान रखा है ।

–मेरे लेखन कार्य में भी उनका पूरा-पूरा सहयोग एवं मार्गदर्शन रहा है ।

–मेरी गणि-पंन्यास एवं आचार्य पदवी में भी उन्हीं का मार्गदर्शन रहा है ।

–प्राचीन साहित्य के समुद्धार एवं नवीन हिन्दी साहित्य के सर्जन एवं पूज्यपाद गुरुदेवश्री के गुजराती साहित्य के हिन्दीकरण आदि में भी उनका अपूर्व योगदान रहा है ।

–उनके स्वर्ग-गगन से मैंने बहुत कुछ खोया है । वे निःस्वार्थ वात्सल्य मूर्ति थे, वे मेरे शिर छत्र थे ।

–किसी से किसी भी प्रकार की मदद करने के बाद वे किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं रखते थे ।

आज मेरे जीवन में जो कुछ वह **स्व. पूज्य गुरुदेवश्री** की दिव्यकृपा और **पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी महाराज** की शुभाशिष का फल है ।

हर व्यक्ति के जीवन में उतार-चढाव आते है । परिस्थितियाँ सदैव एकसमान नहीं रहती है । मेरे जीवन में भी कई संयोग बदले, परंतु वे सदैव मेरे हितैषी रहे और सहयोग देते रहे उनके उपकारों को मैं कभी भूल नहीं सकूंगा ।

वि.सं. 2061 में मेरी **पंन्यासपदवी हेतु स्व. गच्छाधिपति पू.आ. श्री हेमभूषणसूरिजी म.सा.** ने उन्हें पूछाया तो उनका जवाब था, **'गणि श्री रत्नसेनविजयजी** को **पंन्यासपदवी** तो क्या **आचार्य पदवी** प्रदान करे तो उसमें भी मेरी सहर्ष सम्मति है ।'

वे स्वयं पद के प्रति निःस्पृही होने पर भी अपने से छोटों को आचार्यपद दिलाने में खूब राजी थे ।

पू.आ. श्री मल्लिषेणसूरिजी म.सा., पू.आ. श्री मनमोहनसूरिजी म., मैं तथा **आ.**

श्री हेमप्रभसूरिजी म. आदि उनसे पर्याय में बहुत छोटे होने पर भी हम सभी को **आचार्यपद प्रदान** कराया था ।

–ऐसे मेरे परमोपकारी पूज्य पंन्यासजी म. के अनेक गुणों का वर्णन **'पंन्यासजी ना पंन्यासजी'** गुण स्मरण ग्रंथ में है ।

–वह विस्तृत ग्रंथ गुजराती भाषा में है ।

हिन्दी भाषी प्रजा भी उनके गुण संपन्न जीवन से परिचित बने, इसी मंगल भावना से उस महाकाय ग्रंथ में से चूंट-चूंटकर यह **गुणमाला** तैयार की है ।

इसमें जो कुछ भी सुंदर है, उसके यश के भागी तो उस ग्रंथ के संपादक **पू.आ.श्री पूर्णचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा** एवं **आ. श्री हेमप्रभसूरिजी म.** है ।

मुझे आत्म विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक के स्वाध्याय से एक **'गुणवान आत्मा'** का जीवन-परिचय होगा । उनके गुणों की सुवास अनेक के जीवन को सुवासित करेगी ।

मतिमंदता से आलेखन में कहीं भी स्खलना रही हो तो उसके लिए **त्रिविधि-त्रिविध मिच्छा मि दुक्कडम् !**

आराधना भवन,
महावीर नगर,
पाली, (राज.)

–रत्नसेनसूरि
रविवार,
दि. 10-05-2026

पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म. का संक्षिप्त जीवन-परिचय

जन्म स्थल	:	आमला (हालार)
जन्म तिथि	:	वि.सं. 1998, जेठ सुदी दूज, दि. 28-05-1941
नाम	:	वर्धमान, प्रसिद्ध नाम – 'केशु'
माता-पिता	:	जीवीबेन माणेकभाई पूंजाभाई खिमसिया
व्यवहारिक अभ्यास	:	7 वीं
दीक्षा तिथि	:	वि.सं. 2011, वैशाख सुदी-7, दि. 08-05-1954
दीक्षा उम्र	:	13 वर्ष
दीक्षा दाता	:	पू. पंन्यास श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.
दीक्षा स्थल	:	लोणावला (महाराष्ट्र)
बडी दीक्षा	:	वि.सं. 2011, जेठ सुदी-पंचमी
बडी दीक्षा दाता	:	पू. आचार्यश्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा.
बडी दीक्षा स्थल	:	भायखला-मुंबई
गुरुदेव	:	पू.मु.श्री कुंदकुंदविजयजी (बाद में आचार्य) (संसारी काका)
प्रगुरुदेव	:	पूं.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.
प्रदादा-गुरुदेव	:	पू.आचार्य श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.
पिता महाराज	:	मु.श्री महासेनविजयजी म.सा.
गणि पदवी	:	वि.सं. 2044, मार्गशीष शुक्ला सप्तमी दि. 07-12-1985
गणि पदवी प्रदाता	:	पू.आ. श्री जयंतशेखरसूरिजी तथा पू.आ.श्री प्रद्योतनसूरिजी म.सा.
स्थल	:	हालार तीर्थ
पंन्यास पदवी	:	वि.सं. 2044, फाल्गुण शुक्ला तृतीया, दि. 18-3-1986
पद-प्रदाता	:	पू.आ. श्री प्रद्योतनसूरीश्वरजी म.सा.

स्थल	:	**शंखेश्वर तीर्थ**
अंतिम निर्यामक	:	**पू.आ.श्री मनमोहनसूरिजी म., आ. श्री हेमप्रभसूरिजी म.**
काल-धर्म	:	**वि.सं. 2077, ज्येष्ठ कृष्णा एकादशी, दि. 5-7-2021**
स्थल	:	**ओसवाल कोलोनी, दर्शन विला, जामनगर**
आजीवन अंतेवासी	:	**आ. श्री हेमप्रभसूरिजी म.सा.**
शिष्य संपदा	:	**1. मु. श्री पुण्यसेनविजयजी म. 2. मु. श्री दिव्यसेनविजयजी म. 3. मु. श्री धन्यसेनविजयजी म. 4. मु. श्री हेमहर्षविजयजी म.**
विहार क्षेत्र	:	**राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र**
चातुर्मास क्षेत्र	:	**राजस्थान में 15, गुजरात में 49, महाराष्ट्र में 2**
दीक्षा-प्रदान	:	**10 श्रमण, 20 साध्वीजी**
छ'री पालक संघ	:	
निश्रा प्रदान		**6**
अंजनशलाका-प्रतिष्ठाएं	:	**22**
उपधान निश्रादाता	:	**9**
समाधि प्रदान	:	**26 महात्मा**
उपाश्रय व विहारधाम	:	**21**
पद-प्रदान	:	**9 महात्माओं को गणि पदवी 8 महात्माओं को पंन्यास पदवी 2 महात्माओं को उपाध्याय पदवी 2 महात्माओं को आचार्य पदवी**
गुण-संपदा	:	**गुरु वैयावच्च, पद निःस्पृहता, सहनशीलता, मैत्री भाव के श्रेष्ठ उपासक, नवकार साधक, नम्रता, करुणापूर्ण हृदय, श्रमण सेवा, जीवदया प्रेमी ।**

Introduction

लेखक एवं संग्राहक का संक्षिप्त-जीवन

परिचय

गृहस्थ नाम	: राजु (राजमल चोपड़ा)
माता का नाम	: चंपाबाई
पिता का नाम	: छगनराजजी गेनमलजी चोपड़ा
जन्मभूमि	: बाली (राज.)
जन्म तिथि	: भादो सुद-3, संवत् 2014 दि. 16-9-1958
बचपन में धार्मिक अभ्यास	: पंच प्रतिक्रमण-नवस्मरण आदि
ब्रह्मचर्यव्रत स्वीकार	: 18 जून 1974
व्यावहारिक अभ्यास	: 1st year B.Com. (पार्श्वनाथ उम्मेद कॉलेज फालना-राज.)
दीक्षा दाता	: पू.पं. श्री हर्षविजयजी गणिवर्य
गुरुदेव	: अध्यात्मयोगी पू. पंन्यास **श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**
दीक्षा दिन	: माघ शुक्ला 13, संवत् 2033 दि. 2-2-1977
समुदाय	: शासन प्रभावक पू.आ. **श्री रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**
दीक्षा दिन विशेषता	: भारत भर में लगभग 50 ऊपर दीक्षाएँ
108 मुमुक्षु वरघोड़ा	: 9 जनवरी 1977, मुंबई
दीक्षा स्थल	: न्याति नोहरा-बाली राज.
दीक्षा समय उम्र	: 18 वर्ष
बड़ी दीक्षा	: फाल्गुन शुक्ला 12, संवत् 2033
बड़ी दीक्षा स्थल	: घाणेराव (राज.)
प्रथम चातुर्मास	: संवत् 2033 पाटण पू.पं. श्री हर्षविजयजी के सान्निध्य में ।

- **अभ्यास :** प्रकरण, भाष्य, 6 कर्मग्रंथ, कम्मपयडी, पंचसंग्रह, न्याय, काव्य, कोश, संस्कृत-प्राकृत व्याकरण, संस्कृत-प्राकृत साहित्य वाचन, ज्योतिष, आगम वाचन आदि ।
- **भाषा बोध :** हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती, राजस्थानी, संस्कृत, प्राकृत, मराठी आदि ।
- **प्रथम प्रवचन प्रारंभ :** फागुन सुदी 14, संवत् 2034 पाटण (गुजरात) ।
- **चातुर्मासिक प्रवचन प्रारंभ :** बाली संवत् 2038 ।

- **विहार क्षेत्र :** राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, कर्णाटक तामिलनाडू आदि ।
- **पादविहार :** लगभग 49,000 कि.मी. ।
- **अंजन शलाका एवं प्रतिष्ठायें :** मंड्या (कर्णाटक) वलवण, कामसेट, भायंदर (महा.) राजपुरा, भोपाल सागर, राजसमंद भारुंदा (राज.) आदि में अंजनशलाका प्रतिष्ठा, भायखला (वे.), कल्याणी नगर (पूणे), जयपुर (राज.) में प्रतिष्ठा बेंगलोर में 3 गृह जिनालय, पूना तथा कोयम्बत्तुर में एक-एक गृह जिनालय प्रतिष्ठा ।
- **(छ'री पालित संघ में मार्गदर्शन-प्रवचन) :** बरलूट से शत्रुंजय, गोदन से जैसलमेर, वल्लभीपुर से पालीताणा, लुणावा से राणकपुर पंचतीर्थी ।
- **छ'री पालक निश्रादाता :** उदयपुर से केशरियाजी, गिरधरनगर से शंखेश्वर, धूलिया से नेर, कराड़ से कुंभोज, सोलापुर से बार्शी, भिवंडी से महावीर धाम, कर्जत से मानस मंदिर, हस्तगिरि से शत्रुंजय होकर गिरनार, शत्रुंजय बारह गाऊ, सेवाडी से राणकपूर पंचतीर्थी, बेंगलोर से सुशीलधाम, कोयम्बत्तूर से अव्वलपुंदरी, उदयपुर से दयालशा किल्ला ।
- **प्रथम पुस्तक आलेखन :** **''वात्सल्य के महासागर''** वि.सं.संवत् 2038 ।
- **अद्यावधि प्रकाशित पुस्तकें :** 267 ।
- **शिष्य-प्रशिष्य : स्व.मु. श्री उदयरत्नविजयजी म.,**
  स्व.मुनि श्री केवलरत्नविजयजी म.,
  स्व.मुनि श्री कीर्तिरत्नविजयजी म.,
  मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी म., मुनि श्री शालिभद्रविजयजी म.,
  मुनि श्री स्थूलभद्रविजयजी म., स्व. मुनि श्री यशोभद्रविजयजी म.,
  मुनि श्री विमलपुण्यविजयजी म., मुनि श्री निर्वाणभद्रविजयजी म.
  मुनि श्री पुण्यबलविजयजी म.
- **उपधान निश्रा दाता :** कुर्ला, धुले, नेर (महा.), येरवडा (पूना), आदीश्वर धाम (दो), कर्जत, विक्रोली, मोहना (कल्याण), पालीताणा (दो बार), सेसली, कीर्तिस्तंभ (घाणेराव), नासिक, सुशीलधाम (बेंगलोर), मैसूर, महावीर धाम (मुंबई), लोढा धाम (मुंबई), सुखधाम (राज.), महावीर जैन विद्यालय-उदयपुर ।
- **गणि पदवी :** वैशाख वदी-6, विक्रम संवत् 2055, दि.7-5-1999 चिंचवड गाँव, पूना ।
- **पंन्यास पदवी :** कार्तिक वदी-5, विक्रम संवत् 2061,
  दि.2-12-2004 श्रीपालनगर, मुंबई ।
- **आचार्य पदवी :** पोष वदी-1, विक्रम संवत् 2067, दि. 20-1-2011 थाणा ।

अनुक्रमणिका

नं.	विषय	पृ.संख्या
1.	उत्तम बीज से उत्तम फल	1
2.	गुरू-कृपा	5
3.	ज्ञान वैभव स्वाध्याय रसिकता	6
4.	गुरू समर्पण	7
5.	समाधि प्रदान	9
6.	हित शिक्षा दाता	20
7.	एक अद्‌भुत सर्जन	24
8.	प्राचीन साहित्य उद्धार	26
9.	समता-समाधिसाधक	27
10.	सहन करे वह साधु	29
11.	पद नि:स्पृहता	30
12.	कस्तुर धाम-समतालय के उपदेशक	34
13.	'मैत्री-वात्सल्य धाम' के उपदेशक	36
14.	डोलिया तीर्थ के सहयोगी	38
15.	गुरू भक्ति	38
16.	असीम उदारता	39
17.	कृतज्ञता गुण के स्वामी	39
18.	परार्थप्रेमी	40
19.	परोपकार मूर्ति	41
20.	प्रकृष्ट पुण्यबल	41
21.	करूणा मूर्ति	42
22.	साधर्मिक भक्ति	43
23.	सेवा भावना	45
24.	भेदज्ञान की अनुभूति	45
25.	परोपकार परायण	46
26.	औचित्य पालन में जागरूक	46
27.	कुशल-संचालन	47
28.	नम्रता	49
29.	गुरू हृदय में प्रतिष्ठित	49
30.	प्रभावक वचन	50
31.	जन्म व समाधि स्थल में जिनालय	51
32.	चमत्कार	51
33.	परम हितैषी	52
34.	समझाने की कला	53
35.	भूल-सुधार	55
36.	स्थिरीकरण की कला	55
37.	सूक्ष्म प्रज्ञा के स्वामी	56
38.	समता-साधक	56
39.	अत्यंत प्रियग्रंथ-उपमिति	57
40.	नवकार-प्रेमी	58
41.	महान्-अनुप्रेक्षक	58
42.	आश्रित गण चिंता	61
43.	कल्पनातीत उदारता	61
44.	जीवदया प्रेमी	62
45.	नवकार-प्रेरक	63
46.	आत्मा के चिकित्सक	64
47.	मित भाषी	64
48.	दु:ख में अदीन	64
49.	कृतज्ञता की पराकाष्ठा	65
50.	द्रव्य-भाव करुणा	66
51.	गीता के स्थित प्रज्ञ	66
52.	तीर्थ-उद्धार	67
53.	निर्मल पुण्य के स्वामी	67
54.	सकारात्मक विचार धारा के स्वामी	68
55.	प्रभु की झांकी करानेवाले	69
56.	वचन सिद्ध महापुरुष	69
57.	हितशिक्षा	70
58.	हृदय की विशालता	70
59.	पुण्य प्रभाव	71
60.	त्याग धर्म की प्रेरणा	71
61.	जूनागढ के उपकारी	72
62.	उदारता	73
63.	दान धर्म की प्रेरणा	73
64.	श्रमण सेवा का आदर्श	74
65.	कृतज्ञता	75
66.	विशाल उदार मनोवृत्ति	77
67.	अंतिम-भावना	78
68.	मृत्यु के आगमन को जाननेवाले	80
69.	पूर्व संदेश का पालन	82
70.	पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी चातुर्मास सूची	84
71.	गुरू स्तुति	87
72.	एक जन्म्यो संघ सितारो	88
73.	हे जिनशासन शणगार	89
74.	पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी को भाव भरी श्रद्धांजलि	90

1 उत्तम बीज से उत्तम फल

बीज अच्छा हो तो उससे उत्तम फल की आशा की जा सकती हैं, परंतु बीज ही यदि सडा हुआ हो तो उससे उत्तम फल की आशा कैसे रखी जा सकती है ?

माता-पिता यदि संस्कारी हो तो उत्तम व संस्कारी संतान की आशा रखी जा सकती है । परंतु माता-पिता ही यदि व्यसनी नास्तिक या संस्कारहीन हो तो उनसे संस्कारी संतान की आशा रखना व्यर्थ ही है ।

हालाररत्न **पू. पंन्यासप्रवर श्री वज्रसेनविजयजी म.** इतने महान् बने, उसमें उनके माता-पिता का भी कम योगदान नहीं था ।

जामनगर-हालार की धन्यधरा पर **'मोटा मांढा'** गांव में सद्धर्मोपासक पूंजाभाई नोंघाभाई खिमसिया की धर्मपत्नी मांकाबाई ने 6 पुत्ररत्नों को जन्म दिया । वीरपाल, गोसरभाई, कानजीभाई, माणेकभाई, केशव (केशुभाई) और मेघजीभाई !

छोटी उम्र में ही माणेकभाई व केशुभाई व्यवसाय के लिए गांव छोडकर मुंबई आ गए थे और न्यायनीतिपूर्वक घी का व्यवसाय करने लगे थे ।

वि.सं. 1996 में **पू.मु. श्री भद्रंकरविजयजी म.** का माधव बाग (लालबाग) मुंबई में चातुर्मास था ।

माणेकभाई ने **पू. भद्रंकरविजयजी म.** का एक ही प्रवचन सुना और वे इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने हृदय में पूज्यश्री को **'गुरु'** के रुप में प्रतिष्ठित कर दिया ।

उसके बाद माणेकभाई ने अपने छोटेभाई केशु को भी पूज्यश्री के प्रवचन श्रवण की प्रेरणा की । प्रथम दर्शन-वंदन व प्रवचन श्रवण से केशुभाई भी खूब प्रभावित हुए ।

वि.सं. 1998 में **पू.मु. श्री भद्रंकरविजयजी म.** की निश्रा में अंधेरी-मुंबई में भाणजीभाई शापरिया की ओर से उपधानतप का आयोजन हुआ । इस उपधान में माणेकभाई, केशुभाई और मेघजीभाई आदि तीनों भाई तथा माणेकभाई की धर्मपत्नी जीवीबेन भी जुडी ।

इस उपधान तप में पूज्यश्री के निरंतर सत्संग से केशुभाई की वैराग्य भावना अत्यंत दृढ हो गई । वे दीक्षा के लिए तैयार हो गए परंतु परिवार में माणेकभाई को छोड अन्य कोई दीक्षा के लिए सम्मत नहीं हुए ।

आखिर माता-पिता के मोह को दूर करने के लिए केशुभाई ने **'जब तक दीक्षा की अनुमति नहीं मिलेगी, तब तक छह विगई का त्याग ।'**

छह मास के बाद माता-पिता का मोह दूर हुआ और उन्होंने दीक्षा के लिए अपनी सम्मति दे दी ।

वै.सु. 5 वि.सं. 1998 के शुभ दिन **पू.मु. श्री भद्रंकरविजयजी म.** की शुभ निश्रा में वणी-महाराष्ट्र में केशुभाई की भागवती दीक्षा हुई और वे **पू.मु. श्री भद्रंकरविजयजी म.** के शिष्य **मु. श्री कुंदकुंदविजयजी** बने ।

भीष्म-अभिग्रह

अपने छोटे भाई की भागवती दीक्षा के बाद माणेकभाई का मन भी संसार से उठ गया ।

उनकी धर्मपत्नी जीवीबेन गर्भवती थी । उसकी सहमति प्राप्तकर मात्र 26 वर्ष की युवावय में माणेकभाई ने चतुर्थ ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार कर लिया ।

पुत के लक्षण पालने में

वि.सं. 1998 जेठ शुक्ला द्वितीया शुक्रवार दि. 17-5-1942 के शुभ दिन जीवीबेन एक तेजस्वी पुत्र रत्न को जन्म दिया ।

बालक का नाम **'वर्धमान'** रखा गया । अपने नाम के अनुरुप ही बालक हर तरह से आगे बढने लगा ।

वि.सं. 2001 में **पू.मु. श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** की शुभ निश्रा में मालेगांव से मांडवगढ का छ'री पालक संघ निकला ।

मांडवगढ में संघ के समापन प्रसंग पर माणेकभाई ने संघ के आराधकों का सोने की गिन्नी से बहुमान किया ।

यात्रा संघ में जितना खर्च हुआ था, उससे भी डेढा खर्च माणेकभाई ने संघपूजन में किया ।

वर्धमानकुमार को पिता की उदारता के संस्कार वारसे में प्राप्त हुए ।

माणेकभाई ने मात्र 2 वर्ष की उम्र से ही वर्धमानकुमार में धर्म संस्कारों का सिंचन प्रारंभ कर दिया था ।

मात्र 2 वर्ष की उम्र में ही बालक वर्धमान ने रात्रि भोजन का त्याग कर लिया ।

बाल-बाल बचे

माता जीवीबहन पीने के लिए गर्मपानी का उपयोग करती थी ।

एक बार जीवीबहन ने पानी उबालकर उसे ठंडा करने के लिए परात में डाला, उसी समय वर्धमानकुमार परात में गिर गया ।

गर्म पानी से उसके शरीर की चमडी जल गई ।

बालक बचेगा या नहीं ? सभी को चिंता सता रही थी । परंतु माँ के शील धर्म के प्रभाव से और वैद्य के योग्य उपचार से बालक आबाद बच गया ।

संतति दान

गृहस्थ जीवन में धर्म की पहली सीढी दान है । गृहस्थ को प्रतिदिन दान धर्म की आराधना अवश्य करनी चाहिए ।

गृहस्थ जीवन में दान में मुख्यतया धन की प्रधानता होती है ।

वीतराग के शासन में संपत्तिदान से भी संततिदान को बढकर कहा हैं ।

अपनी इकलौती संतान जिन शासन के चरणों में समर्पित करना, सबसे बडी साधना है ।

सद्धर्म से भावित आत्मा ही संपत्तिदान से बढकर संततिदान कर सकती है । धर्म के रंग से रंगे माणेकचंदभाई ने अपनी इकलौती संतान के आत्मोकर्ष के लिए मात्र 8 वर्ष के वर्धमान को गुरु चरणों में समर्पित कर दिया ।

अध्यात्मयोगी पूज्यपाद **पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.** के शुभ सान्निध्य में वर्धमानकुमार का धार्मिक प्रशिक्षण चालू हुआ ।

तीक्ष्ण व सूक्ष्मबुद्धि के कारण बालक वर्धमान ने 2-3 वर्षों में बहुत ही अच्छा अभ्यास किया ।

बालक की योग्यता-पात्रता देखकर वि.सं. 2011 वै.सु. 7 बुधवार दि. 28-4-1955 के शुभ दिन **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** के वरद हस्तों से मुमुक्षु वर्धमान (केशु) की लोनावला (महाराष्ट्र) में भागवती दीक्षा संपन्न हुई ।

पूज्यश्री ने उन्हें **पू.मु. श्री कुंदकुंदविजयजी म.सा.** का शिष्य बनाया और उनका नाम **मुनिश्री वज्रसेनविजयजी** रखा ।

यद्यपि पू. मुनिश्री का हृदय और शरीर तो खूब कोमल था परंतु रोग आदि परीषहों को वे खूब समतापूर्वक सहन कर सके, इसलिए उनका नाम **वज्रसेनविजयजी** रखा ।

2

गुरु-कृपा

(संयम जीवन के स्वीकार के 7 मास के भीतर ही अपनी योग्यता-पात्रता द्वारा दादा गुरुदेव **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य** के ह्रदय में स्थान पाने का सौभाग्य पानेवाले **पूज्य मुनिराज श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.)**

वि.सं. 2012, मार्गशीर्ष कृष्णा, त्रयोदशी

विनयादि गुणोपेत **मुनि श्री कुंदकुंदविजयजी** आदि जोग, अनुवंदनादि ।

श्री वज्रसेनविजयजी का पत्र व टाइम टेबल देखा ।

उसकी प्रगति के लिए मुझे किसी प्रकार का संदेह नहीं है ।

इस काल में साधु धर्म के विकास के लिए जो सद्‌गुण चाहिए, वे उसमें दिखाई देते है ।

केवल बाह्य चतुराई से साधुता का विकास नहीं होता है । वर्तमान जीवों को वह चतुराई सुलभ है और लौकिक में उसकी कद्र व कीमत तुरंत हो जाती है । आत्मदृष्टि से उसमें कोई लाभ नहीं है ।

मोह का क्षयोपशमिक भाव हुआ या नहीं ? उसकी कसौटी आज्ञा पारतंत्र्य में है, जो आज अत्यंत दुर्लभ है ।

कोई एक भी साधु सांगोपांग शुद्ध साधुत्व को दीपाए, वैसा तैयार होने की खास जरुरत है ।

इस रीति से **वज्रसेन** का क्रमिक विकास हो और स्वच्छ दर्पण की तरह पूर्वाचार्य और पूर्व मुनियों के सभी गुण उसमें संक्रांत हो जाय, यह देखने का मेरा पूर्ण मनोरथ है ऐसी विशाल दृष्टि से उसके प्रशिक्षण Training की जरुरत है ।

बाह्य और अभ्यंतर उभय विशुद्धि किसी विरल आत्मा के भाग्य में ही होती है ।

–भद्रंकर वि.

3

ज्ञान वैभव स्वाध्याय रसिकता

स्वाध्याय साधना के लिए बाल्यवय सर्वश्रेष्ठ वय है ।

बाल्यवय में दीक्षित बने मुनि विशेष पुण्यशाली कहलाते हैं, क्योंकि इसी वय में जैन शासन के अमूल्य ज्ञान खजाने को सरलता से प्राप्त किया जा सकता है ।

पूज्य प्रेमसूरिजी म. कहते थे कि नूतन बालमुनि को 10 वर्ष तक एकेन्द्रिय बन जाना चाहिए अर्थात् अन्य सभी प्रवृत्तियों का त्याग कर स्वाध्याय में मशगूल बन जाना चाहिए ।

सिर्फ 10 साल के लिए यदि बाल मुनि अभ्यास में लीन बन जाय तो वे जिंदगी भर की कमाई कर सकते है ।

पूज्य मुनिराज श्री वज्रसेनविजयजी म. की भागवती दीक्षा मात्र 13 वर्ष की उम्र में लोनावला में हुई थी ।

उन्होंने दीक्षा के बाद 10 वर्ष तक प्रायः गृहस्थ से बातचीत नहीं की थी ।

वे प्रतिदिन एक घंटे में 15 गाथाएं कंठस्थ करते थे । उन्होंने सिर्फ 100 दिनों में अभिधान चिंतामणि (शब्दकोष) कंठस्थ किया था ।

वे प्रतिदिन रात्रि में उसका स्वाध्याय करते थे । उन्होंने 1¼ वर्ष में सिद्धहेम लघुवृत्ति के चार अध्याय कंठस्थ किए थे और उनका रात्रि में स्वाध्याय करते थे ।

उन्होंने सिद्धहेम का अभ्यास पंडितवर्य शिवलालभाई के पास किया था । वे प्रतिदिन पूज्यश्री को पूछते, **'मांडली का कार्य किया ?'**

मांडली का काम नहीं किया हो तो पंडितजी पाठ नहीं देते थे । परंतु एक दिन भी ऐसा नहीं गया कि पंडितजी ने पाठ नहीं दिया हो अर्थात् वे मांडली का काम अवश्य करते थे ।

उन्होंने व्याकरण के पांचों अंग शब्दानुशासन, लिंगानुशासन, छंदोनुशासन, उणादि तथा धातुपाठ का अभ्यास किया था ।

न्याय में तर्कसंग्रह, मुक्तावली, व्याप्तिपंचक आदि का अभ्यास किया था ।

बचपन में उन्होंने चार प्रकरण, तीन भाष्य, छह कर्मग्रंथ, बृहत्संग्रहणी, लघुक्षेत्र समास, ज्ञानसार, योगशास्त्र, अध्यात्म कल्पद्रम, प्रशमरति, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन सूत्र, आचारांग, समवायांग, उपमिति भव प्रपंचा, समराइच्च कहा, वीतराग स्तोत्र, हारिभद्रीय अष्टक, षोडशक, सिंदुरप्रकर, उपदेश पद, लोकप्रकाश आदि अनेक ग्रंथों का संगीन अभ्यास किया था ।

4 गुरु समर्पण

श्रमण जीवन का मुख्य गुण है–गुरु समर्पण । जो गुण अन्य सभी गुणों को खींचकर ले आता है ।

अन्य ढेर सारे गुण हो, परंतु गुरु समर्पण भाव नहीं है तो वे सारे गुण एक के अंक रहित Zero जैसे है ।

जिस प्रकार Zero के पहले 1 का अंक हो तो उस Zero की कीमत दस गुणा हो जाती है, परंतु एक के अंक का ही अभाव हो तो तो ढेर सारे Zero भी Zero ही कहलाते है ।

पूज्यपाद मुनि श्री वज्रसेनविजयजी म. में यह गुण पराकाष्ठा पर था । इसी गुण के कारण वे अनेक गुण संपन्न बने थे । इसी गुण ने उन्हें जिनशासन का Hero बनाया था ।

उनकी दीक्षा अध्यात्ययोगी **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री** के कर कमलों से संपन्न हुई थी ।

महान्योगी पुरुष के हाथों से उन्हें रजोहरण की प्राप्ति हुई थी ।

व्यवहारिक दृष्टि से भले ही वे अपने सांसारिक चाचा **पू.मु. श्री कुंदकुंदविजयजी म.** (बाद में आचार्य) के शिष्य कहलाते थे ।

परंतु उनके जीवन शिल्पी थे, **पूज्यपाद पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.,** उनके हृदय में अपने गुरुदेव के प्रति अपूर्व समर्पण भाव था ।

उत्तराध्ययन सूत्र में समर्पित शिष्य का एक विशेषण दिया है **'इंगियागार संपन्नो ।'** अर्थात् समर्पित शिष्य को आज्ञा करनी नहीं पडती है, वह गुरु के भावों को ईशारे में ही समझ जाता है ।

उन्होंने अपना तन-मन गुरु चरणों में इस प्रकार समर्पित कर दिया था कि आगे चलकर वे स्वयं ही गुरुदेव की प्रतिकृति बन गए थे ।

अध्यात्मयोगी पूज्यपाद पंन्यासजी भगवंत को जिन्होंने प्रत्यक्ष नहीं देखा वे भी **पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** को देखकर अध्यात्मयोगी पू. पंन्यासजी म. की कल्पना करते थे ।

'जिनकी प्रतिमा इतनी सुंदर, वो कितना सुंदर होगा !'

पूज्य पंन्यासजी म. (पू. वज्रसेनविजयजी) इतने महान् थे तो उनके जीवन निर्माता कितने महान् होंगे ।

गुरू आज्ञा करे और शिष्य उस आज्ञा का पालन करे, इसमें शिष्य की महत्ता नहीं है परंतु गुरू क्या चाहते है ? उसे जानकर, उसके अनुसार शिष्य प्रवृत्ति करे, यह शिष्य की महानता है ।

'गुरू को आज्ञा करनी ही नहीं पडे ।' आज्ञा के पूर्व ही शिष्य गुरू के मनोगत भावों को जानकर तदनुसार प्रवृत्ति कर देता है ।

अपने गुरूदेव की हाजरी में तो वे सदैव समर्पित शिष्य की तरह रहे ही है परंतु अपने गुरुदेवश्री के कालधर्म के बाद भी उनके आदर्शों को जीवंत रखते हुए जीवन जीकर उन्होंने एक आदर्श स्थापित किया है ।

योग्यता पात्रता होते हुए भी जिस प्रकार अध्यात्मयोगी पू. पंन्यासजी म. ने आचार्य पदवी स्वीकार नहीं की थी, उसी प्रकार योग्यता-पात्रता और प्रतिभा होते हुए भी **पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** ने आचार्य पदवी स्वीकार नहीं की थी ।

पूज्य पंन्यासजी म. की भांति उन्होंने भी अपने कालधर्म बाद गुरुमूर्ति आदि बनाने का निषेध किया था ।

5 समाधि प्रदान

महावीर प्रभु ने कहा है—**'जो ग्लान की सेवा करता है, वह मेरी सेवा करता है ।'**

शारीरिक रुग्नता में असमाधि होने की खूब संभावना रहती है ।

रोग के परीषह को समता पूर्वक सहन करना और शारीरिक रुग्नता में आर्त्तध्यान नहीं करना, सबसे बडी साधना है ।

अपनी शारीरिक रुग्नता में **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी म.** ने जो अपूर्व समाधि प्राप्त की, उसके मूल में है- अनेकों को समाधि प्रदान !

उन्होंने अपने जीवन में अनेक महात्माओं की खूब खूब वैयावच्च की है ।

1) अपने दादा गुरुदेव पूज्यपाद **पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म. सा.** की उन्होंने 16-17 वर्षों तक निरंतर खडे पांव सेवा की है ।

पूज्य पंन्यासजी म. के जीवन का उत्तरार्द्ध काल एक ओर अनेकविध आध्यात्मिक सिद्धियों से भरापूरा है तो दूसरी ओर उस काल में भूतकालीन अशाता वेदनीय कर्म के उदय के फलस्वरुप खूब अशाता युक्त रहा था ।

ऐसे संयोगों में **पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** ने अपनी सारी शक्ति पूज्यपाद पंन्यासजी म. के आरोग्य प्राप्ति के लिए लगा दी थी ।

इस हेतु उन्होंने एलोपेथी, होमियोपेथी व आयुर्वेद का गहन अभ्यास भी किया था । **'शारीरिक रुग्नावस्था में पूज्य पंन्यासजी म. को कैसे साता मिले ?'** उसके लिए वे सतत प्रयत्नशील रहते थे ।

रात्रि में इंजेक्शन लगाना हो या ग्लुकोज की बॉटल चढाना हो, वे खडे पांव सेवा में Active रहते थे ।

विहार दरम्यान गोचरी-पानी-अनुपान आदि के लिए वे खूब सक्रिय रहते थे ।

वि.सं. 2021 से 2036 तक पूज्य पंन्यासजी भगवंत के जीवन के अंतिम समय तक **पू. मुनिराज श्री वज्रसेनविजयजी म.** ने जो सेवा वैयावच्च की है, वह बेजोड थी ।

2) पू. पिता मुनि श्री महासेनविजयजी म.सा. :–

वि.सं. 2042 में पूज्य **मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** का विद्याशाला अहमदाबाद में चातुर्मास था, उस समय मेरा ज्ञानमंदिर अहमदाबाद में चातुर्मास था ।

चातुर्मास के बाद आराधना धाम-हालार में उपधान तप होने से हम दोनों का अहमदाबाद से जामनगर की ओर विहार प्रारंभ हुआ ।

आराधनाधाम पहुँचने के बाद वर्षों बाद **पू. पिता मुनि श्री महासेनविजयजी म.** के साथ उनका मिलन हुआ ।

यद्यपि दीक्षा में **पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** बडे थे, फिर भी अपने पिता मुनि के आगे उनकी लघुता-नम्रता अजब-गजब की थी ।

कुछ मास साथ में रहे और अचानक ही **पू. महासेनविजयजी म.** का स्वास्थ्य खराब हो गया । अचानक वे कोमा में चले गए ।

उस समय कई दिनों तक पू.मु. श्री ने अपने पिता **मुनि श्री महासेनविजयजी म.** की खूब सेवा भक्ति की ।

वि.सं. 2043 जेठ वदी-6 के दिन पू.पंन्यासजी म. के श्रीमुख से नवकार आदि श्रवण करते हुए **पू. महासेनविजयजी म.** ने सदा के लिए विदाई ले ली ।

अपने पिता मुनि को **'समाधि-दान'** प्रदान कर पूज्यश्री ने अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया ।

3) पू. आचार्य श्री प्रद्योतनसूरिजी म.सा.

पू.आ. श्री प्रद्योतनसूरिजी म. की भागवती दीक्षा वि.सं. 1998 वै.सु. 5 के शुभ दिन **पू.मु. श्री भद्रंकरविजयजी म.** के वरदहस्तों से वणी (महा.) में हुई थी, उनका नाम प्रद्योतनविजयजी रखा गया और वे **पू.मु. चरणविजयजी म.** के शिष्य बने ।

निर्मल संयमधर्म की साधना में आगे बढते हुए गणी, पंन्यास पदवी के बाद वि.सं. 2038 में आचार्य पदारुढ हुए ।

अध्यात्मयोगी पू. पंन्यासजी म. के कालधर्म बाद ग्रुप की जवाबदारी उनके कंधों पर आ पडी ।

वि.सं. 2049 में उनका चातुर्मास पोरबंदर में हुआ । पोरबंदर में 22 वर्षों के बाद चातुर्मास हुआ था । संघ में अपूर्व उत्साह था ।

इस चातुर्मास में पू. आचार्य भगवंत का स्वास्थ्य बिगड गया । इस समय **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** आदि महात्माओं ने खूब सेवा भक्ति की । अंत में वि.सं. 2050 पोष वदी-2 के दिन पोरबंदर में उनका अत्यंत समाधिपूर्वक कालधर्म हुआ ।

पू. पंन्यासजी म. ने अपने ग्रुप के वडिल पू. आचार्य भगवंत को खूब समाधि प्रदान की ।

4) तपस्वी मु. श्री चंद्रांशुविजयजी म.सा. :–

लुणावा (राज.) निवासी हंसराजजी के 45 वर्षीय सुपुत्र चुन्नीलालभाई ने वि.सं. 2009 माघ शुक्ला 11 के शुभ दिन मुंबई में **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.** के वरदहस्तों से भागवती दीक्षा स्वीकार की और वे **मु. श्री प्रद्योतनविजयजी** के शिष्य **मु. श्री चंद्रांशुविजयजी म.** बने ।

दीक्षा स्वीकार के बाद वर्धमान तप की 100 वीं ओली मासक्षमण के साथ पूर्ण की, फिर 16 वर्षों तक वर्षीताप किए ।

अंतिम वर्षों में वे **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** के साथ में थे ।

वि.सं. 2050 जेठ सुदी-4 के दिन 88 वर्ष की उम्र में 42 वर्ष के संयम पर्याय को पूर्ण कर अत्यंत समाधिपूर्वक आराधना धाम (हालार तीर्थ) में कालधर्म हुए ।

अंतिम वर्षों में पू.पंन्यासजी म. तथा **पू. हेमप्रभविजयजी म. ने उनकी अपूर्व सेवा की थी ।**

5) पू. मु. श्री जयमंगलविजयजी म.सा. :—

जुनागढ (गुज.) निवासी मोहनभाई ने वि.सं. 2026 जेठ सुदी-10 के शुभ दिन बेडा (राज.) में **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.** के वरदहस्तों से दीक्षा स्वीकार की और वे **पू. महाभद्रविजयजी म.** के शिष्य **मु. श्री जयमंगलविजयजी** बने ।

वि.सं. 2030 में उन्होंने वर्धमान तप की 100 ओली पूर्ण की थी ।

उन्होंने ज्ञानमंदिर अहमदाबाद में स्थिरवास रहे दीर्घ **संयमी पू. प्रकाशविजयजी म.** की खूब सेवा की थी । अपनी वृद्धावस्था में वे **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** के सान्निध्य में थे, जहां चार वर्ष तक उनकी सुंदर सेवा भक्ति हुई । स्मरण शक्ति घट रही थी, परंतु वे आराधना में खूब जागरुक थे । अंत में वि.सं. 2053 में वढवाण चातुर्मास में श्रा. सु.-12 के दिन **पू. पं. वज्रसेनवि.** एवं **पू.मु. श्री हेमप्रभवि. म.** के मुख से नवकार मंत्र श्रवण करते हुए कालधर्म हुए ।

6) पू.मु. श्री पुण्यसेनविजयजी म.सा. :–

वांकी (कच्छ) के निवासी देवशीभाई के पुत्र प्रेमजीभाई ने 69 वर्ष की उम्र में वि.सं. 2043 जेठ सुदी-4 के शुभ दिन वडालिया सिंहण में प्रतिष्ठा प्रसंग पर दीक्षा अंगीकार की और वे **पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** के शिष्य बने ।

मात्र 6 वर्ष के दीक्षा पर्याय में सुंदर आराधना कर वि.सं. 2049 में जेठ वदी-1 के दिन पुत्र **मुनि श्री हेमप्रभविजयजी म.** एवं पुत्री साध्वीजी के मुख से नवकार सुनते हुए आराधना धाम-हालार में अत्यंत समाधि पूर्वक कालधर्म हुए ।

7) पू.मु. श्री वीरसेनविजयजी म.सा. :–

58 वर्ष की प्रौढ वय में सिंगच हालार निवासी वेलजीभाई ने वै.सु.-13, वि.सं. 2036 में भागवती दीक्षा अंगीकार की और वे **पू.मु. श्री कुंदकुंदविजयजी म.** के शिष्य **मु. वीरसेनविजयजी** बने ।

19 वर्ष का निर्मल संयम पालन कर **पू. वज्रसेनविजयजी म.** की

निश्रा में वै.वदी-8, वि.सं. 2055 में आराधना धाम से मोटा मांढा विहार में सामान्य ठोकर लगने से नीचे गिर पडे और मु. जयधर्म वि. म. के मुख से नवकार सुनते हुए कालधर्म को प्राप्त हुए ।

8) मु. श्री तपोधनविजयजी म.सा. :–

37 वर्ष की उम्र में वि.सं. 2023 जेठ सुदी-13 के दिन खंभात निवासी बाबुभाई ने दीक्षा स्वीकार की और वे **पू.आ. श्री रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.** के शिष्य मु. श्री तपोधनविजयजी म. बने ।

अपने गुरूदेवश्री के कालधर्म बाद वे **पू.पं. वज्रसेनविजयजी म.** की निश्रा में आराधना करने लगे । वि.सं. 2056 माघ शुक्ला-14 के दिन 33 वर्ष का संयम पालन कर हालार तीर्थ आराधना धाम में अत्यंत समाधि पूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

9) पू.आ. श्री मल्लिषेणसूरिजी म.सा. :–

कैलाशनगर निवासी 36 वर्षीय मगनभाई ने वि.सं. 2016 माघ शुक्ला-10 के दिन भागवती दीक्षा स्वीकार की और वे **मु. हर्षविजयजी म.सा.** के शिष्य **मु. श्री मल्लिषेणविजयजी** बने ।

प्रगुरूदेव पंन्यासजी म. की निश्रा में रहते हुए उन्होंने अनेक महात्माओं की सेवा की ।

वि.सं. 2055 में मग.सुद-10 को **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** की निश्रा में उनकी गणी-पंन्यास पदवी एवं मगसर वदी-3 को आचार्य पदवी हुई ।

उन्होंने 6 मासक्षमण व 400 अट्ठम भी किए । वि.सं. 2057 में आ.सुद-2 के दिन सावरकुंडला में उनका अत्यंत समाधिपूर्वक कालधर्म हुआ ।

10) मु. श्री दिव्यसेनविजयजी म.सा. :–

पाटण निवासी 38 वर्षीय चंद्रकांत ने वि.सं. 2050 में वै.सुद-5 को भागवती दीक्षा अंगीकार की और वे पं. श्री वज्रसेनविजयजी म. के शिष्य **मु. श्री दिव्यसेनविजयजी** बने । मात्र 4 वर्ष के पर्याय में पालीताणा

में 2055 मगसर वदी अमावस्या के दिन अत्यंत समाधि पूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

11) मु. श्री पंकजरत्नविजयजी म.सा. :–

56 वर्ष की उम्र में सादडी निवासी पुखराजभाई ने माधव बाग-मुंबई में **पू.आ. रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.** के वरदहस्तों से दीक्षा अंगीकार की और वे **पू.मु. श्री जितेन्द्रविजयजी म.** के शिष्य **मु. श्री पंकजरत्नविजयजी** बने ।

कुछ वर्षों तक गुरु निश्रा में रहने के बाद स्वभाव दोष के कारण एकाकी विहार करने लगे ।

वि.सं. 2059 में स्मृतिमंदिर प्रतिष्ठा प्रसंग पद सांसारिक पुत्री सा. मदनरेखाश्रीजी म. की विनती से वे **पू. पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** की निश्रा में आ गए । 7 वर्ष तक सभी महात्माओं ने उनकी खूब सेवा की ।

वि.सं. 2065 जेठ सुदी-8 के शुभ दिन **पं. हेमप्रभवि. म.** के मुख से नवकार सुनते हुए 34 वर्ष संयम पालन कर जाम जोधपुर में अत्यंत समाधि पूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

12) पू.पं. श्री जिनसेनविजयजी म.सा. :–

उथमण (राज.) निवासी 29 वर्षीय जेठमल ने वि.सं. 2014 माघ शुक्ला 13 के दिन **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.** के पास दीक्षा स्वीकार की और वे **पू. कल्याणप्रभवि.** म. के शिष्य **मु. श्री जिनसेनविजयजी** बने ।

वर्धमान तप की 100 + 100 + 48 ओली (अर्थात् 11750 आयंबिल तथा 1200 उपवास) की तपश्चर्या के साथ अपने 52 वर्ष के संयम पर्याय में उन्होंने अनेक महात्माओं की सेवा की ।

पिछले अनेक वर्षों से वे **पू.पं. वज्रसेनविजयजी म.** की निश्रा में थे ।

पालीताणा की धन्यभूमि पर वि.सं. 2066 भादो सुदी-5 के शुभदिन अत्यंत समाधि पूर्वक कालधर्म हुए ।

13) मु. श्री पुण्यभद्रविजयजी म.सा. :–

पत्री (कच्छ) निवासी प्रेमजीभाई ने 54 वर्ष की उम्र में जुनागढ में **पू.आ. श्री हिमांशु सू. म.** के वरदहस्तों से वि.सं. 2058 का वदी-14 के दिन दीक्षा स्वीकार की और वे **पू. मनमोहनविजयजी म.** के शिष्य मु. पुण्यभद्रवि. बने ।

मात्र 9 वर्ष के पर्याय में सुंदर आराधना कर वि.सं. 2067 चैत्र सुदी-1 के दिन पालीताणा में **पू.पं. वज्रसेनवि. म.** एवं पुत्र **मुनि श्री जिनभद्रविजयजी म.** के मुख से नवकार श्रवण करते हुए अत्यंत समाधिपूर्वक कालधर्म हुए ।

14) मु. श्री मुक्तिसेनविजयजी म.सा. :–

65 वर्ष की उम्र में मोहनभाई के तीव्र वैराग्य भाव को देखकर **पू. वज्रसेनविजयजी म.** ने दीक्षा हेतु सम्मति दी और वि.सं. 2054 माघ शुक्ला 13 के शुभ दिन दीक्षित होकर **पू.मु. श्री मल्लिषेणविजयजी** के शिष्य **मुक्तिसेनविजयजी** बने ।

मात्र 6 वर्ष, के पर्याय में सुंदर संयम धर्म का पालन कर, वि.सं. 2060 का.व. 3 के दिन डीसा गांव में अत्यंत समाधि पूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

15) मु. श्री नयविजयजी म.सा. :–

72 वर्षीय गोकुलभाई को दीक्षा की तीव्र भावना थी । परंतु बडी उम्र के कारण कोई दीक्षा नहीं दे रहे थे ।

परम कृपालु **पू. वज्रसेनविजयजी म.** ने उनकी भावना पूर्ण की ।

वि.सं. 2067 जेठ वदी-5 को पाटण में उनकी दीक्षा हुई और वे आ. मनमोहनसू म. के शिष्य **मु. नयविजयजी म.** बने ।

मात्र 10 मास व 10 दिन का संयम पालन कर मोटामांढा में जिन भक्ति महोत्सव में अत्यंत समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

16) मु. श्री चंद्रसेनविजयजी म.सा. :–

25 वर्ष की उम्र में चंपकभाई ने वि.सं. 2009 माघ शुक्ला-11 के

दिन **पू. प्रेमसूरिजी म.** के हाथों से दीक्षा स्वीकार की और वे **पू. चंद्रशेखरविजयजी म.** के प्रथम शिष्य **मु. श्री चंद्रसेनविजयजी** बने ।

वर्षों तक गुरु निश्रा व **पू. मानतुंगसू म.** की निश्रा में रहे ।

वि.सं. 2060 में वे **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** की निश्रा में आ गए ।

56 वर्ष का संयम पालन कर वि.सं. 2065 आ.सु. 12 की रात्रि में नीलम विहार पालीताणा में **पं. श्री हेमप्रभविजयजी म.** के मुख से नवकार सुनते हुए समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

17) तपस्वी मु. मित्रविजयजी म.सा. :–

28 वर्षीय आहोर निवासी मिश्रीमल ने बापजी म. के सौभाग्यविजयजी म. के पास दीक्षा ली और वे मित्रविजयजी बने ।

वर्षों तक वे पू. वे प्रेमसूरिजी म., पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म. और फिर जीवन के अंत तक पू.पं. वज्रसेनविजयजी म. की निश्रा में रहे ।

57 वर्ष के दीक्षा पर्याय में अनेक महात्माओं की सेवा की ।

87 वर्ष की उम्र में पू.पंन्यासजी म. की निश्रा में वि.सं. 2067 मगसर सुदी-2 के दिन नीलम विहार पालीताणा में उपवास में नवकार श्रवण करते हुए कालधर्म हुए ।

18) पू.मु. श्री कनकसेनविजयजी म.सा. :–

कैलाश नगर (राज.) निवासी कांतिलाल ने 60 वर्ष की उम्र में अपनी जन्मभूमि में वि.सं. 2056 में दीक्षा स्वीकार की । वे **पू. मल्लिषेणसू. म.** के शिष्य मु. श्री कनकसेनविजयजी बने ।

अपने गुरूदेव के कालधर्म बाद **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** की निश्रा में रहे ।

14 वर्ष का संयम पालन कर वि.सं. 2070 भादो सुदी-11 के शुभदिन 8 दिन के अनशन पूर्वक नवकार श्रवण करते हुए अपने देह का त्याग किया ।

19) मु. श्री हितविजयजी म.सा. :–

सावरकुंडला निवासी हीराभाई ने 29 वर्ष की उम्र में वि.सं. 2018 पोष सुदी-12 के शुभदिन **पू. प्रेमसूरिजी म.** की निश्रा में दीक्षा अंगीकार की और वे **पू.आ. श्री रविचंद्रसूरिजी म.** के शिष्य **मु. हितविजयजी म.सा.** बने ।

जंघाबल क्षीण होने पर ज्ञान मंदिर अहमदाबाद में स्थिरता की ।

वि.सं. 2070 व 2072 में **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** के सान्निध्य में रहे । 54 वर्ष का संयम पालनकर शांतिनगर-अहमदाबाद में श्रावण वदी-8 वि.सं. 2072 की रात्रि में 3.10 बजे **पू. हेमप्रभसूरिजी म.** के मुख से नवकार मंत्र का श्रवण करते हुए अत्यंत समाधि पूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

20) मुनि श्री मनोबलविजयजी म.सा. :–

उमेटा (गुज.) निवासी मनसुखभाई ने वि.सं. 2021 वैशाख सुदी-6 के दिन **पू. राजतिलकसूरिजी म.** के पास दीक्षा अंगीकार की और वे **पू. राजतिलकसूरिजी म.** के शिष्य **मु. मनोबलविजयजी** बने ।

वर्षों तक उन्होंने अपने गुरूदेवश्री की खूब सेवा की ।

अपने गुरूदेव के कालधर्म बाद वे अपने गुरूभाई विनयबल वि.म. के साथ रहे । **मु. विनयबलविजयजी म.** के कालधर्म बाद पालीताणा में रहे थे, वहां गिर जाने से उन्हें फेक्चर हो गया । श्रवण शक्ति भी कम हो गई थी ।

वे. वि.सं. 2070 में **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** की निश्रा में आ गए । सभी महात्माओं ने उनकी खूब सेवा भक्ति की ।

वि.सं. 2073 में बोरसद चातुर्मास में भादो सुदी-11 के दिन 52 वर्ष का संयम पालन कर अत्यंत समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

21) मु. श्री सुव्रतविजयजी म.सा. :–

42 वर्षीय जगजीवनदास ने वि.सं. 2024 वै.सुद-6 के शुभदिन **पू. मानतुंगसूरिजी म.सा.** के वरदहस्तों से दीक्षा ली और वे **पू. सुधांशुविजयजी म.** के शिष्य **मु. श्री सुव्रतविजयजी म.सा.** बने ।

अपने गुरुदेव के कालधर्म बाद वे **पू. रविप्रभसूरिजी म.सा.** के साथ रहे ।

वि.सं. 2056 में वे **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** की निश्रा में आ गए । 15 वर्षों तप वे पूज्यश्री की निश्रा में रहे ।

वि.सं. 2071 मगसर वदी-5 के दिन **पू. वज्रसेनविजयजी म.सा.** के मुख से नवकार सुनते हुए समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

22) मु. श्री विमलरक्षितविजयजी म.सा. :–

वरसोडा-अहमदाबाद निवासी विट्ठलभाई ने 63 वर्ष की उम्र में **पू. प्रभाकरसूरिजी म.** के पास वि.सं. 2043 वै.वदी-5 के दिन दीक्षा स्वीकार की और वे **धर्मदासविजयजी म.** के शिष्य बने ।

90 वर्ष की उम्र में उनकी जबान बंद हो गई वे **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** की निश्रा में आ गए । तीन वर्ष तक महात्माओं ने खूब सेवा की । वि.सं. 2073 कार्तिक सुद-12 के दिन कामदार कॉलोनी जामनगर में उनका समाधिपूर्वक कालधर्म हुआ ।

23) मु. श्री धन्यसेनविजयजी म.सा. :–

कैलाशनगर (राज.) निवासी फूलचंदभाई ने 63 वर्ष की उम्र में दीक्षा ली और वे **पू. वज्रसेनविजयजी म.** के शिष्य **मु. श्री धन्यसेनविजयजी** बने ।

वि.सं. 2066 में उन्हें Accident हो गया और वे कोमा में चले गए । 10 मास तक महात्माओं ने खूब सेवा की । अंत में सं. 2067 पोष वदी-12 के दिन पालीताणा नीलम विहार में उनका कालधर्म हुआ ।

24) मु. श्री हर्षसेनविजयजी म.सा. :–

मांडवी (कच्छ) निवासी हरिभाई ने 61 वर्ष की उम्र में वि.सं. 2053 वै.सुद-6 के शुभदिन अपनी पुत्री व पत्नी के साथ मांडवी में **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** के पास दीक्षा स्वीकार की और वे **मु. श्री जिनसेनविजयजी म.सा.** के शिष्य **मु. श्री हर्षसेनविजयजी म.सा.** बने ।

मु.श्री ने 18 वर्षों तक **पू.उपा. श्री महायशविजयजी म.सा.** की खूब सेवा की, साथ में वर्धमान तप की 100 ओली भी पूर्ण की ।

वि.सं. 2072 वै.सु. 9 के दिन नवकार का श्रवण करते हुए कालधर्म को प्राप्त हुए ।

25) मु. श्री श्रमणरत्नविजयजी म.सा. :–

पाटण निवासी शशिकांतभाई ने 66 वर्ष की उम्र में वि.सं. 2056 मग.सुद-6 के शुभदिन भागवती दीक्षा अंगीकार की और **पू.पं. श्री भव्यदर्शनविजय.जी म.सा.** के शिष्य **मु. श्रमणरत्नविजयजी म.सा.** बने । वर्षों तक गुरु निश्रा में रहकर सुंदर आराधना की । वयोवृद्ध उम्र में वे पू. पंन्यासजी म. की निश्रा में आ गए और छ वर्ष तक रहे ।

जीवन के अंतिम समय तक सहवर्ती मुनियों ने खूब सेवा की । वि.सं. 2078 पोष वदी-11 के दिन अत्यंत समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

26) मु. श्री मुक्तिधरविजयजी म.सा. :–

सुश्रावक हिम्मतभाई के साथी रोहिडा (राज.) निवासी मगनभाई ने 68 वर्ष की परिपक्व उम्र में **पू. वज्रसेनविजयजी म.सा.** के पास दीक्षा अंगीकार की और वे **पू.मु. श्री धुरंधरविजयजी म.सा.** के शिष्य बने । उन्होंने वर्धमान तप की 100 ओली भी पूर्ण की ।

वि.सं. के दिन नवकार का श्रवण करते हुए समाधिपूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

27) मुनि श्री चंद्रयशविजयजी म.सा. :–

बिसलपुर (राज.) निवासी चुन्निलाल ने 20 वर्ष की उम्र में **पू.मु. श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** के पास भागवती-दीक्षा अंगीकार की और वे पूज्यश्री के शिष्य **मु. श्री चंद्रयशविजयजी म.सा.** बने ।

एक साथ 1008 आयंबिल का तप किया, तबसे वे 1008 के नाम से प्रख्यात हुए ।

जीवन में खूब तपश्चार्याएं की परंतु कर्म संयोग से स्वभाव शांत नहीं हो पाया ।

कठोर व उग्र स्वभाववाले महात्मा को भी पूज्यश्री ने खूब संभाला । खूब शाता दी । अंतिम समय में गेगरीन के कारण पाँव काटने की नौबत आ गई ।

उस समय सभी महात्माओं ने खूब सेवा की । वि.सं. 2050 वैशाख वदी-13 के दिन आराधना धाम-हालार तीर्थ में समाधि पूर्वक कालधर्म को प्राप्त हुए ।

6 हित शिक्षा दाता

पूज्यपाद पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.सा. के हृदय में जगत् के सभी जीवों के प्रति हित कामना रही हुई थी ।

अतः जब जब भी साधु-साध्वीजी म. उनके पास हितशिक्षा की प्रार्थना करते, तब वे बहुत ही सुंदर आत्महितकारी हितशिक्षाएं देते थे ।

1) पूज्यश्री बारबार कहते थे–'प्राणना भोगे पण समता न जवी जोइए' अर्थात् किसी भी संयोग में समता का भंग नहीं होना चाहिए । समता तो साधु जीवन का प्राण है ।

2) बधाने अनुकूल थइने रहेवुं :– हर संयोग या हर परिस्थिति में सहवर्ती आदि के अनुकूल बनने की कोशिश करनी चाहिए । मात्र अपने स्वार्थ या अनुकूलता का विचार नहीं करना चाहिए । इस प्रवृत्ति से परस्पर प्रेमभाव बढेगा ।

3) जीवनमां समर्पण भाव केळवजो :– नूतन दीक्षित को प्रेरणा देते हुए खास प्रेरणा करते थे कि संयम जीवन में सबसे अधिक महत्त्व का गुण **गुरू समर्पण भाव** है । इसे जीवन में आत्मसात् करने की कोशिश करना ! अन्य गुण कम-ज्यादा होंगें तो चलेगा परंतु **'गुरू समर्पण'** तो 100% ही चाहिए । अपनी भूल न हो, फिर भी गुरु महाराज ठपका दे तो भी उसे प्रेम से स्वीकार कर लेना चाहिए, प्रतिकार नहीं करना चाहिए ।

4) बीजाना दोषो न जोवा :– देखने के लिए आंख मिली है परंतु उसका उपयोग दूसरों के दोष दर्शन में नहीं करना चाहिए । दूसरों के दोष देखने से भविष्य में वे ही दोष अपने जीवन में आते है ।

छद्मस्थदशा है, अतः हर जीव में दोष रहने ही वाले है, अतः देखना हो तो गुण देखे, दोष देखने में अपनी दृष्टि अंध हो जानी चाहिए । दोष देखने से दोष बढते हैं और गुण देखने से गुण बढते है ।

5) मोटेथी न बोलवुं :– उपाश्रय में गृहस्थों का भी आवागमन होता रहता हैं, अतः गृहस्थों की हाजरी में किसी को कुछ कहना भी पडे तो धीरे

से व शांति से कहना, परंतु जोर से या चिल्लाकर नहीं बोलना । साधु-साध्वी को चिल्लाते या झगडा करते देख गृहस्थ भी अधर्म पा जाते है ।

6) મર્યાદામાં રહેવું :– छोटे-बडे की मर्यादा का अवश्य पालन करना चाहिए । बडो के साथ विनय-विवेक का ख्याल रखना चाहिए और छोटों के साथ प्रेम और वात्सल्य का भाव रखना चाहिए ।

7) કાંઇ પણ ભૂલ થાય તો કબૂલ કરી લેવી :– छद्मस्थ दशा है, अज्ञान दशा है–अतः कदम कदम पर भूल होने की संभावना है, अतः जब भी अपनी भूल का ख्याल आए, तो तुरंत ही उसका स्वीकार होना चाहिए । अपनी भूल का बचाव नहीं करना चाहिए । भूल को छिपाने से भूल का अनुबंध पडता है, वह भूल दृढ बनती है ।

8) સમતાભાવ વધે તેમ તપ કરવું જોઇએ :– अपनी शक्ति के उपरांत तप का ज्यादा आग्रह रखते है, तब मन असमाधिग्रस्त बनता है । दूसरों को अपने कारण से तकलीफ पडती हो, उस ढंग से तप भी नहीं करना चाहिए ।

पूज्यश्री मध्यम मार्ग की प्रेरणा करते थे, शक्ति उपरांत या खींचकर तप करने से अन्य कई तकलीफें खडी हो जाती हैं, अतः मध्यम नार्ग अपनाना चाहिए । आचार पालन में बार-बार या निष्कारण अपवाद का सेवन नहीं करना चाहिए कि खूब ढीले हो जाय ।

9) માંડલીના કામમાં ઉપેક્ષા ન કરવી :– समुदाय की व्यवस्था में जो जवाबदारी सौंपी गई हो, उस जवाबदारी को निष्ठापूर्वक वहन करना चाहिए । मांडली के काम में उपेक्षा नहीं करनी चाहिए ।

10) સાચું તો સ્વીકારવાનું જ હોય છે :– एक बार पूज्यश्री **'सहनशीलता'** गुण पर हितशिक्षा प्रदान कर रहे थे ।

किसी ने प्रश्न किया, **'ખોટું સહન થતું નથી'** जो झूठ बात हैं, वह सहन नहीं होती है ।

पूज्यश्री ने बहुत ही मार्मिक बात कहते हुए कहा, **'जो झूठ है, उसी को सहन करना है, जो सत्य है उसका तो स्वीकार ही होना चाहिए ।'**

जो सत्य है, उसमें तो सहन करने का प्रश्न ही नहीं आता है, उसे तो सहर्ष स्वीकार करना चाहिए ।

11) જીવનમાં નમ્રતા, સમતા, સરલતા અને ઉદારતા રાખજો તો પ્રસન્નતા આપોઆપ મળશે :–

जीवन में शांति पाने के लिए व्यक्ति कहां कहां नहीं घूमता है, परंतु सच्ची शांति तो आत्म गुणों के माध्यम से ही प्राप्त हो सकती है ।

पूज्यश्री ने मात्र चार शब्दों के माध्यम से धर्म का सार समझा दिया ।

12) જીવનમાં કૃતજ્ઞ બનવું, બીજાને મદદરૂપ થવું, કોઇકનું ઋણ ચુકવવાની ભાવનાવાળા બનવું :–

अपने जीवन में हम अनेकों के उपकार तले दबे हुए है । उपकारी के उपकार को भूल जाने वाला कृतघ्नी कहलाता है । कृतघ्नी आत्मा का कभी उद्धार नहीं होता है । अतः अपना भला चाहते हो तो अपने उपकारियों के उपकार को याद कर उनके प्रति कृतज्ञ बनना चाहिए ।

13) સુકૃતને શક્ય એટલું ગુપ્ત રાખવું - બીજ ધરતીમાં હોય તો પાંગરે :–

बीज भूमि के भीतर रहे तो ही विकसित होता है । बाहर आ जाय तो विकास अवरुद्ध हो जाता है । जीवन में हुए सुकृत भी बीज की भांति है । उसे गुप्त रखने में ही मजा है । वह जितना गुप्त रहेगा, विशेष लाभ का कारण बनेगा ।

14) કોઇને તકલીફ હોય તો તરત મદદ કરવી, તે ન થાય તો હમ દર્દી તો બતાવવી જ :–

कोई व्यक्ति तकलीफ में हो और अपनी शक्ति हो तो उसे अवश्य मदद Help करनी चाहिए, कदाचित् मदद करना शक्य न हो तो कम से कम सहानुभूति के दो शब्द तो अवश्य कहने चाहिए ।

दुःखी व्यक्ति को कहे गए सहानुभूति के शब्द उसके मनोबल-आत्मबल को मजबूत कर देता है ।

दुःखी व्यक्ति का अपमान, अनादर व तिरस्कार करने से उसका

मनोबल कमजोर हो जाता है । किसी के घाव को भर न सको तो कम से कम लात मारने का काम तो नहीं करना चाहिए ।

15) આપણો અધિકાર ન હોય તો કોઇ ને કાંઇ ન કહેવું :–

परस्पर के अनेक संघर्षों का मूल अपनी अनधिकृत चेष्टाएं होती है ।

जहां अपना अधिकार या जवाबदारी न हो, वहां कुछ भी नहीं कहना चाहिए ।

16) જ્ઞાતા દ્રષ્ટા બનવું જોઇએ :– दुनिया में कई घटनाएं बनती है, जिनका हमारे साथ कोई संबंध नहीं होता है, ऐसे संयोगों में वहां सिर्फ ज्ञाता दृष्टा भाव रखना चाहिए ।

17) કોઇને દુઃખ ન દેવું, ન તો નિમિત્ત બનવું, કેમ કે આપેલી ચીજ હજાર ગણી થઇને પાછી ફરે છે :–

कुदरत का नियम है ! जो हम दूसरों को देते हैं, वही हमें वापस अनेक गुणा मिलता है । दूसरों को सुख दोगे तो सुख मिलेगा, दुःख दोगे तो दुःख मिलेगा । दुःख पसंद नहीं है तो किसी को दुःख नहीं देना चाहिए ।

18) કોઇની પણ નિંદા નહિ કરવું :– गुणानुरागी ऐसे पूज्यश्री को किसी की निंदा में रस नहीं था । वे बार-बार कहते, `जिसकी हम निंदा करते है, उसके दुर्गुण अपनी आत्मा में आए बिना नहीं रहते है ।

दुर्गुणों से बचना हो तो दूसरों की निंदा से कोसों दूर रहना चाहिए ।

7

एक अद्भुत सर्जन

हस्ताक्षरनुं अक्षयपात्र

पूज्यपाद गुरूदेव **पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** का अंतरंग साधना की अनुभूति के बाद प्राप्त नवनीत को **'शब्ददेह'** देते थे ।

वि.सं. 2020 के आसपास से लेकर वि.सं. 2033-34 तक पूज्यपाद पंन्यासजी म. ने जो डायरियाँ लिखी थी, वे पूज्यश्री के कालधर्म के बाद **पू.मु.श्री कुंदकुंदविजयजी म.** के पास संग्रहित थी । उसके बाद वे डायरियाँ शशिकांतभाई महेता (राजकोट) के पास थी । शशिकांतभाई के स्वर्गवास के बाद वे डायरियाँ **पूज्य पंन्यासजी वज्रसेनविजयजी म.सा.** को सौंपी गई ।

शास्त्र के निचोड व अवगाहन स्वरुप ये डायरियाँ जैन शासन के अमूल्य खजाने रुप थी, परंतु काल के प्रभाव से जर्जरित हो रही थी, उनका पुनः जीर्णोद्धार होना, खूब जरुरी था ।

पूज्य पंन्यासजी म. की प्रेरणा, गुरु भक्त सी. के महेता के आर्थिक सहयोग एवं भारतीबेन दीपकभाई महेता के अथक प्रयास से पूज्य पंन्यासजी म. द्वारा आलेखित 250 हस्तलिखित डायरियों को Scaning कर पुनः प्रकाशित किया गया जिनका नाम **हस्ताक्षरनुं अक्षयपात्र'** रखा गया ।

शास्त्रों के दोहनरुप और आगमों के अर्क रुप ये ग्रंथ Volume अध्यात्म रसिकों के लिए श्रेष्ठ आलंबन रुप है ।

पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा. ने अपने जीवन में जो नवकार एवं मैत्री आदि भावनाओं विषयक जो साहित्य सर्जन किया था, उस सब साहित्य को पुनः मुद्रित कर प्रकाशित करने का काम **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** ने किया ।

पू.आ. श्री कुंदकुंदसूरिजी म.सा. के संग्रह में पूज्य पंन्यासजी

भगवंत का **'प्रवचन-साहित्य'** था उसे भी प्रकाशित किया गया ।

इतना ही नहीं पूज्यपाद अध्यात्मयोगी पंन्यासजी भगवंत की जो 250 लगभग डायरिया थी, उन्हें भी Scaning करवाकर 68 भागों में पुनः प्रकाश में लाने का ऐतिहासित कार्य भी पूज्यश्री की प्रेरणा से संपन्न हुआ ।

स्व. पूज्यपाद पंन्यासजी भगवंत के कालधर्म के बाद उनके दो जीवन चरित्र **'पूज्य पंन्यासजी महाराज'** एवं **'पारसमणि'** भी प्रकाशित करवाया ।

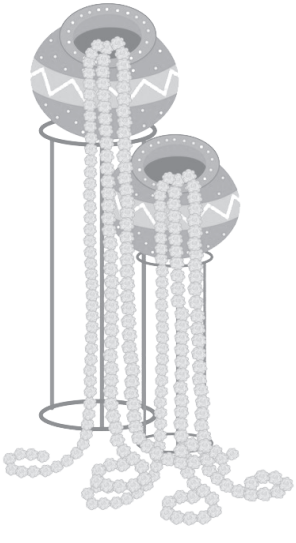

8 प्राचीन साहित्य उद्धार

पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी म. का जिनशासन के प्रधान अंगभूत **'साहित्य क्षेत्र'** में भी अपूर्व योगदान था ।

साधु-साध्वीजी के अध्ययन अध्यापन में अति उपयोगी कई ग्रंथों के गुजराती अनुवादों का प्रकाशन करवाया था ।

(1) लोक प्रकाश–5 भाग (तीन बार) ।

(2) उपमिति कथा–3 भाग (पांच बार) ।

(3) प्रवचन सारोद्धार–2 भाग (दो बार) ।

(4) उत्तराध्ययन सूत्र–दो भाग (दो बार) ।

(5) अध्यात्म कल्पद्रुम–(एक बार) ।

(6) लघुक्षेत्र समास ।

(7) शत्रुंजय माहात्म्य ।

(8) हेमसंस्कृत प्रवेशिका–तीन भाग ।

(9) उपदेश माला ।

(10) शांतसुधारस ।

(11) पार्श्वनाथ चरित्र ।

(12) बृहत्कल्प–छ भाग (तीन बार) ।

(13) भरतेश्वर वृत्ति ।

9 समता-समाधिसाधक

पूर्वकृत अशुभ कर्म के उदय से इस जीवन में अनेक प्रकार के शारीरिक रोग पैदा होते है, परंतु उन रोगों को भी कर्म निर्जरा का साधन मानकर अनेक साधक आत्माएं रोग परीषह को समतापूर्वक सहन करती है।

पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी म. के जीवन में भी पूर्वकृत अशातावेदनीय कर्म के उदय से खूब खूब रोगों के हमले हुए थे, परंतु उन परीषहों को भी उन्होंने समता पूर्वक सहन कर अपूर्व कर्म निर्जरा की थी।

❋ वि.सं. 2001 में माता जीवीबहन ने पानी उबालकर उसे ठंडा करने के लिए परात में डाला।

उसी समय 2½ वर्षीय बाल केशु गर्म पानी की परात में गिर गया। पानी मे गिरने से उसकी सारी चमडी जल गई। अनेक उपचारों के बाद केशु पुनः स्वस्थ हुआ। इस प्रकार बचपन में ही चमडी जलने की भयंकर पीडा को सहन की।

❋ 23 वर्ष की उम्र में पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म. के पूरे शरीर Small-Pox का रोग फैल गया। चेचक के उस रोग के कारण वे मृत्युदंड जैसी पीडा का अनुभव कर रहे थे, परंतु उस पीडा को भी उन्होंने खूब समता पूर्वक सहन किया था।

❋ वि.सं. 2053 में वढवाण (सौराष्ट्र) के चातुर्मास में पित्त के विस्फोट रुप पेंकीगस बल्गारीश का रोग लागू पडा।

प्रारंभ में मुख में फोडे चालू हुए फिर धीरे धीरे पीठ-छाती और मस्तक पर भी फोडे हो गए।

रोग का उपद्रव इतना बढ गया कि रात-दिन के उजागरे होने लगे। स्वयं उठना-बैठना मुश्किल हो गया। कई बार वे कहते कि जलते हुए अंगारे का स्पर्श हो, ऐसी पीडा होती है।

फिर भी उस भयंकर पीडा को वे समतापूर्वक सहन करते थे ।

एक बार रात्रि में थोडासा झोंका आ गया । **मुनिश्री हेमप्रभविजयजी म.** पास में ही बैठे थे ।

पूज्य पंन्यासजी म. एकदम जग गए और बोले, **'मुझे बिठाओ । उनको पाट पर बिठाया गया ।'**

फिर वे धीरे से बोला, **'अभी मैंने स्वप्न देखा'** पूर्वभव में मैंने किसी को अंगारे का डाम दिया था । **'वह कर्म उदय में आया है । अतः इस पीडा को मुझे समझ पूर्वक सहन करना है ।'**

लगभग 1-1½ साल तक उस पीडा को पूज्यश्री ने सहन किया ।

वे वढवाण से विहार कर जामनगर पधारे । वहां ओसवाल जैन उपाश्रय में विराजमान थे ।

ट्रीटमेंट हेतु डॉ. के.एम. आचार्य का आगमन हुआ ।

उन्होंने देखा, 'पूज्यश्री के पूरे शरीर में फोडे हो गए है । फोडे फूटने पर पानी व रसी निकलती है । इसे पेंफीगस रोग कहते है । दो लाख में कोई ऐसा दर्दी होता है । चमडी का यह रोग घातक कहलाता है । इसमें से बचना बहुत मुश्किल होता है । इस असह्य वेदना को भी पूज्यश्री समता पूर्वक सहन कर रहे थे ।

डॉ. ने उन्हें Hospital में Admit करने की सलह दी, परंतु उन्होने मना कर दिया । आखिर उपाश्रय में ही वे सब सुविधाएं उपलब्ध की गई ।

डॉ. ने पूरा पूरा प्रयत्न किया । दवाई लागू पडी ! डेढ महिने में रिकवरी होने लगी । तीने महिने बाद वे पडखा घुमाने लगे । छ मास बाद चलने लगे और धीरे धीरे पूर्ण स्वस्थ हुए और फिर प्रवचन करने में भी सक्षम बने !

10 सहन करें वह साधु

अपने किए हुए कर्मों की सज्जा जीवात्मा को भुगतनी ही पडती है ।

हंसते हंसते पापकर्म किए है तो उन पाप कर्मों की सजा जीवात्मा को भुगतनी ही पडती है ।

`कर्म के न्याय को समझना आसान है, परंतु कर्म के उस न्याय को हृदय से स्वीकार करना, खूब कठिन है ।'

मात्र 2½ वर्ष की सुकोमल लघुवय से लेकर 80 वर्ष तक पूज्य पंन्यासजी म. के जीवन में अनेक बार शारीरिक आपदाएं आई । एक रोग से मुक्ति मिलती है तो दूसरा रोग उनके स्वागत के लिए तैयार ही खडा था ।

रोगों के निरंतर हमलों में भी वे कभी विचलित नहीं हुए ।

कर्म के ऋण को चुकाने में वे सदैव प्रसन्न ही रहे ।

वे यही सोचते थे, भूतकाल में मैंने हंसते हंसते कर्म बांधे है तो उन कर्मों की सजा मुझे हंसते हंसते सहन करनी ही चाहिए ।

वे मानते थे कि **`क्रूर बनी कर्मसत्ता की सजा को प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया तो भविष्य में वही कर्मसत्ता बहुत बडा इनाम देगी ।'** और कर्म के न्याय को स्वीकार नहीं किया तो वह बूरी तरह से पछाडे बिना नहीं रहेगी ।

`सहन करे वह साधु' इस सूत्र को वे मात्र मानते ही नहीं थे, बल्कि उस सूत्र को उन्होंने अपने जीवन में एकदम आत्मसात् कर लिया था ।

11 पद निःस्पृहता

मोह माया के बंधनों को तोडकर संयम जीवन का स्वीकार करने के बाद भी जीवात्मा को पद का मोह खूब सताता है ।

कोई विरल आत्मा ही पद के मोह से संपूर्ण बच पाती है ।

पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म. किसी अलग ही माटी के थे ।

संयम जीवन स्वीकार के 33 वर्ष के बाद हालार तीर्थ आराधना धाम में वि.सं. 2044 मगसिर सुदी-7, दि. 7-12-1985 के शुभ दिन वयोवृद्ध **पू.आ. श्री जयंतशेखरसूरिजी म.सा.** तथा **पू.आ. श्री प्रद्योतनसूरिजी म.सा.** की शुभ निश्रा में भगवती सूत्र की अनुज्ञा रुप उनकी **गणि पदवी हुई** तथा वि.सं. 2044 फाल्गुण वदी-3 दि. 18-3-1986 के शुभदिन शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा के शुभ सान्निध्य में **प.पू. आचार्य श्री प्रद्योतनसूरीश्वरजी महाराजा** के वरदहस्तों से सर्व अनुयोगों की अनुज्ञा रुप उनकी **पंन्यास पदवी** हुई ।

उसके बाद वि.सं. 2047 में व्याख्यान वाचस्पति **पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** की अनुज्ञा से समुदाय में अनेक पंन्यासजी भगवंतों की आचार्य पदवी निश्चित हुई- उसी क्रम में **पू. पंन्यासजी वज्रसेनविजयजी म.** के ऊपर भी आचार्य पदवी के स्वीकार हेतु आज्ञा पत्र आया ।

उस समय पू. पंन्यासजी म. पालीताणा विराज रहे थे, उन्होंने अत्यंत ही नम्रता के साथ सूचित किया कि संपूर्ण योग्यता होने पर भी प्रगुरुदेव पू. पंन्यासजी म. ने आचार्य पद स्वीकार नहीं किया था, अतः मेरी भी इच्छा इस पद के स्वीकार की नहीं है ।

उसके बाद **पू. पंन्यासजी श्री वज्रसेनविजयजी म.** पालीताणा से विहारकर अहमदाबाद पधारे ।

उस समय **पू. गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय**

रामचंद्रसूरीश्वरजी महाराजा पाछिया की पोल-अहमदाबाद में विराजमान थे ।

उस समय मैं **(मु. रत्नसेनविजयजी)** भी पूज्य पंन्यायसजी म. के साथ था ।

जैसे ही **पू. वज्रसेनविजयजी म.** ने **पू. गच्छाधिपतिश्री** की केबिन में प्रवेश किया, त्योंहि वे बोले, **'वज्रसेन !'**

मेरी बात मान लेना, मना मत करना । तुझे आचार्यपदवी लेनी है ।

उसी समय पूज्य आचार्य भगवंत के चरणों में नमन करने हुए पूज्यश्री ने कहा, **'साहेबजी !**

आपकी कृपादृष्टि ही मेरे लिए सबसे बडा पद है ।

पूज्य पंन्यासजी भगवंत की कृपा से जो संयम जीवन मिला है । जिंदगीभर उसके प्रति वफादार रह सकूं, ऐसे आशीर्वाद प्रदान करे ।'

आचार्यपद के लिए पूज्यश्री की निःस्पृहता को देख पूज्य आचार्य भगवंत भी प्रसन्न हो गए और बोले, **'आजे केटलाक पदवीओ मांगता थई गया छे अने तने सामेथी आपीए तो तूं ना पाडे छे ।'**

इतना कहकर पूज्य आचार्य भगवंत ने पूज्यश्री की पीठ थपथपाई और अंतर से आशीर्वाद प्रदान किए ।

पू. आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रामचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. के कालधर्म के बाद में तपस्वी सम्राट् **पू.आ. श्री राजतिलकसूरीश्वरजी म.सा.** समर्पण मूर्ति **पू.आ. श्री महोदयसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ने भी पूज्यश्री को आचार्य पदवी स्वीकार के लिए खूब खूब आग्रह किया, परंतु अध्यात्मयोगी पू. पंन्यासजी म. के पद चिह्नों पर चलने के लिए दृढ संकल्पी पूज्यश्री लेश भी विचलित नहीं हुए ।

वि.सं. 2067 में उनसे खूब लघु पंन्यासजी भगवंतों के आचार्य पदवी प्रसंग पर **पू. वात्सल्यमूर्ति आ. श्री महाबलसूरिजी म.** ने पुनः पूज्यश्री को आचार्य पदवी स्वीकार के लिए खूब आग्रह किया परंतु वे अपने संकल्प में लेश भी विचलित नहीं हुए ।

जीवन पर्यंत वे पंन्यास पद ही रहे, जब कि अपने ही शिष्यवत् लघु गुरुबंधुओं को उन्होंने आचार्य पद प्रदान किया ।

नि:स्पृहता का आदर्श

देश-विदेश में हजारों भक्त होने पर भी पूज्य पंन्यासजी म. की नि:स्पृहता अजब गजब की थी ।

अपना नाम और प्रसिद्धि पाने के लिए आज व्यक्ति क्या नहीं करता है अथवा क्या नहीं चाहता हैं ?

पूज्य पंन्यासजी म. ने अपने कालधर्म के 1 वर्ष पूर्व लिखे पत्र में खास सूचित किया कि मेरे पीछे मेरा मंदिर या मूर्ति मत बनाना । वयोवृद्ध साधु-साध्वीजी की वैयावच्च और समाधि के लिए विशेष प्रयत्न करना ।

अनादि काल से आत्मा में नाम और रुप की ममता रही हुई है । अपने नाम की प्रसिद्धि के लिए व्यक्ति क्या क्या नहीं करता ?

नामना की कामना का सर्वत्र साम्राज्य देखने को मिलता है । वर्तमान में साधु संस्था भी इससे बच नहीं पाई है ।

ऐसे काल में भी अपने प्रगुरुदेवश्री के आदर्श को जीवंत रखकर नामना की कामना से मुक्त बने पूज्य पंन्यासजी म. को भावपूर्ण वंदना ।

परम नि:स्पृही

धन, पुत्र व पत्नी के मोह को उतारकर संयम जीवन स्वीकार करने के बाद भी प्रसिद्धि के मोह को उतारना खूब कठिन होता है ।

त्याग, तप व संयम की साधना करनेवालों को भी 'प्रसिद्धि' का मोह खूब सताता है ।

प्रसिद्धि के लिए कई उपाय अजमाते है । कोई पत्र-पत्रिकाओं में अपने समाचार छपवाते है तो कोई मासिक या स्वतंत्र ग्रंथ, पुस्तक आदि के रुप में अपना जीवन चरित्र छपवाते हैं तो कोई अपनी मूर्ति या फोटो लगवाते है ।

पूज्य पंन्यासजी म. इस स्पृहा से पर बने हुए थे ।

उन्हें नाम की प्रसिद्धि का मोह नहीं था । वे अपने नाम के आगे किसी प्रकार का **'विशेषण'** भी लगाना पसंद नहीं करते थे ।

अभ्यास के लिए आए मुमुक्षु को अपना शिष्य बनाने का प्रयत्न नहीं किया ।

उनके चार शिष्य हुए, परंतु एक भी शिष्य के लिए उन्होंने प्रयत्न नहीं किया था ।

'श्रुत रत्नाकर' संस्था के सक्रिय कार्यकर्ता **पंडितवर्य जितेन्द्रभाई शाह** एक बार अहमदाबाद में पूज्य पंन्यासजी म. के पास आए । वंदन आदि औपचारिक विधि के बाद पंडितजी ने निवेदन करते हुए कहा, 'जैन शासन को आपका अपूर्व योगदान रहा है, मेरी और मेरे जैसे अनेक की इच्छा है कि जाहिर में आपका अभिनंदन किया जाय और उस हेतु हम आपका **'अभिनंदन ग्रंथ'** प्रकाशित करना चाहते है । इस शुभ कार्य हेतु आपकी सम्मति चाहिए ।

पंडितजी की बात सुनकर तुरंत ही पंन्यासजी भगवंत ने कहा, **'जब तक जीवित हूँ तब तक तो मैं आपको इस कार्य के लिए सम्मति नहीं दूंगा ।'**

मेरे में ऐसी कोई योग्यता नहीं है, कि मेरा जाहिर में सन्मान हो ।

अनेक प्रयत्न करने परे भी पंडितजी को इस कार्य के लिए सफलता नहीं मिली । उनकी जीवंत अवस्था में उनका **'अभिनंदन ग्रंथ'** का प्रकाशन न हो सका ।

12

कस्तुर धाम-समतालय के उपदेशक

वि.सं. 2062 में **पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** पालीताणा में विराजमान थे ।

उसी समय एक साध्वीजी भगवंत का ग्रुप उन्हें वंदनार्थ आया ।

वंदनविधि के बाद पूज्यश्री ने भी साध्वी वृंद की शाता पूछी ।

मुख्य साध्वीजी भगवंत की आंखों में आंसू थे ।

उन्होंने निवेदन करते हुए कहा कि वे बहुत दूर से शत्रुंजय महातीर्थ की यात्रार्थ चातुर्मास हेतु आए है ।

शत्रुंजय महातीर्थ है अनेक धर्मशालाएं है, परंतु धर्मशाला में उतरने के लिए जगह नहीं है । चातुर्मास हेतु रुम चाहिए तो भाडा मांगा जाता है ।

साध्वीजी वयोवृद्ध है, अतः यहां स्थिरता के लिए जगह नहीं है ।

साध्वीजी म. के दर्दभरे थोडे से शब्दों से पूज्यश्री को शत्रुंजय तीर्थ की वर्तमान परिस्थिति का ख्याल आ गया । उस समय तो किसी धर्मशाला में साध्वीजी म. की व्यवस्था करा दी ।

पूज्यश्री ने देखा, **'वयोवृद्ध और ग्लान साध्वीजी के लिए शत्रुंजय महातीर्थ में ठहरने के लिए बहुत बडी समस्या है ।'**

पूज्यश्री इस समस्या के समाधान के लिए विचार मग्न थे, तभी अफ्रिका से कस्तुरबेन अपने पुत्र आदि परिवार के साथ पूज्यश्री को वंदनार्थ उपस्थित हुइ ।

वंदन-विधि के बाद कस्तुरबेन ने पूज्यश्री को कार्यसेवा फरमाने के लिए विनती की । उसी समय पूज्यश्री ने पालीताणा में वयोवृद्ध व ग्लान साध्वीजी भगवंतों की स्थायी व्यवस्था की आवश्यकता की बात की ।

पूज्यश्री के मुख से इस बात को सुनते ही कस्तुरबेन ने निवेदन

करते हुए कहा, **'जंगम तीर्थ समान, दीर्घ संयमी पूज्य साध्वीजी भगवंतों की स्थायी सेवा का पुण्य लाभ मुझे देने की कृपा करे ।'**

प्रबल पुण्य के स्वामी पूज्यश्री ने जैसे ही वयोवृद्ध साध्वीजी के स्थायी आवास व व्यवस्था की बात रखी, त्योंही सामने से लाभ लेने की विनती आ गयी । कुछ ही समय बाद योग्य कार्यकर्ताओं ने प्लान तैयार किया और अल्प समय में ही कस्तुरधाम का निर्माण हो गया।

पूज्यश्री की प्रेरणा से निर्मित इस कस्तुर धाम में हर समुदाय के वयोवृद्ध व ग्लान साध्वीजी के स्थिरवास आदि की सुंदर व्यवस्था हो रही है ।

पूज्यश्री साध्वीजी भगवंतों को वाचना देते समय खास कहते– 'जिस प्रकार नूतन जिनालय के निर्माण से भी प्राचीन जिनालय के जीर्णोद्धार में आठ गुणा लाभ प्राप्त होता हैं, उसी प्रकार नयी शिष्या बनाने के बजाय वृद्धसाध्वी, जो रोग ग्रस्त हो या अकेले हो गए हो, उन्हें जीवन के अंतिम समय तक समाधि प्रदान करने में अनेक गुणा लाभ है ।

कस्तुधाम के अन्तर्गत ही समतालय बना है, जहां विविध समुदाय के वयोवृद्ध साध्वीजी खूब निश्चिंततापूर्वक समाधिपूर्वक आराधना कर रहे है ।

आज तक लगभग 100 साध्वीजी भगवंत अत्यंत समाधि के साथ कालधर्म हुए है ।

13 'मैत्री-वात्सल्य धाम' के उपदेशक

एक बार पूज्य पंन्यासजी भगवंत पालडी-अहमदाबाद में विराजमान थे । उस समय एक साध्वीजी भगवंत ने द्रवित हृदय से विनती करते हुए कहा, **'अहमदाबाद में ट्रीटमेंट आदि की सुविधा होने से दूर-दूर से साध्वीजी भगवंत इलाज आदि के लिए यहां आते हैं, परंतु उनकी स्थिरता आदि के लिए कोई स्थायी व्यवस्था नहीं है ।'**

वयोवृद्ध व ग्लान साध्वीजी भगवंतों के लिए पालडी विस्तार में प्राइवेट फ्लेट आदि में स्थिरवास हो रहा हैं, वह भी चिंता का विषय है ।

वयोवृद्ध और ग्लान साध्वीजी के लिए पूज्यश्री सतत चिंतित रहते थे ।

योगानुयोग उसी समय उदारदिल गुणानुरागी सुश्रावक ने आकर पूज्यश्री को विनती की, **'पालीताणा में कस्तूरधाम की तरह अहमदाबाद में भी योग्य स्थान बनाना हो तो मुझे स्वद्रव्य से लाभ लेने की भावना है ।'**

पूज्यश्री की अंतरंग भावना का यह प्रतिबिंब ही था ।

पूज्यश्री के पुण्यप्रभाव से कार्यकर्ताओं की टीम सक्रिय हो गई और कुछ ही समय में योग्य जगह मिल गई ।

इस शुभ कार्य में वात्सल्यमूर्ति **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय महाबलसूरीश्वरजी म.सा.** का भी पूर्ण सहयोग व अन्तर से आशीर्वाद था ।

पूज्यश्री के हृदय में रहे जीवमात्र के प्रति रहे **'मैत्री भाव'** और वात्सल्यमूर्ति **आ. श्री महाबलसूरिजी म.** के **'वात्सल्य भाव'** को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण संकुल का नाम **'मैत्री वात्सल्य धाम'** रखा गया ।

इस विशाल संकुल में उपाश्रय, मंदिर, धर्मशाला, भोजनशाला एवं ग्लान-वयोवृद्ध साध्वीजी के ट्रीटमेंट के लिए ICU रुम आदि तात्कालिक उपचार आदि की भी सुयोग्य सुंदर व्यवस्था की गई ।

तीन मंजिलें इस भवन में तीनों Floor में मंदिर आदि की व्यवस्था की गई ।

पूज्यश्री की भावना को साकार रुप देनेवाले संकुल का कार्य लगभग पूर्ण हो चूका था ।

उस समय पूज्यश्री जाम नगर में विराजमान थे ।

जिन मंदिर आदि के प्रतिष्ठा प्रसंग पर **प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय मुक्तिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा** की भी पावन निश्रा प्राप्त हुई ।

आज इस **'वैयावच्च धाम'** में विविध समुदाय के 130 साध्वीजी भगवंत आराधना कर रहे है ।

14 डोलिया तीर्थ के सहयोगी

पू. आचार्य श्री जिनेन्द्रसूरिजी म. के उपदेश से राजकोट के पास डोलिया तीर्थ का निर्माण हुआ । **प.पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** के वरदहस्तों से अंतिम अंजनशलाका प्रतिष्ठा डोलिया में संपन्न हुई । ई.सन् 2010 (विक्रम संवत् 2066) में **पू.आ. जिनेन्द्रसूरिजी म.** का कालधर्म हो गया ।

उनके कालधर्म के बाद उस तीर्थ के विकास आदि कार्यों में **पूज्य पंन्यासश्री वज्रसेनविजयजी म.** का मार्गदर्शन रहता था ।

डोलिया तीर्थ के श्रावक-श्राविका उपाश्रय में भी पूज्यश्री का अपूर्व सहयोग रहा है ।

गांव के अजैन बालकों में भी जैनत्व व मानवता के संस्कार सिंचन हेतु पूज्यश्री का निरंतर सहयोग रहा है और आज भी चालू है ।

15 गुरु भक्ति

यद्यपि अध्यात्मयोगी पूज्यपाद **पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** ने अपनी स्मृति में कुछ भी करने का मना किया था फिर भी हृदय में उछलती हुई गुरु भक्ति से प्रेरित होकर स्व. पूज्य गुरुदेवश्री की स्मृति शेष (अग्नि संस्कार भूमि) भूमि पर कुछ न कुछ करने का उन्हें तीव्र मनोरथ था ।

बीच में अनेक विघ्न आए, आखिर 27 वर्षों के बाद उस पुण्यभूमि पर उनके उपदेश एवं उन्हीं की निश्रा में शंखेश्वर पार्श्व प्रभु के जिनालय का निर्माण हुआ, सिद्धचक्र की देहरी बनी और दादा गुरुदेव के चरणों की पादुका की प्रतिष्ठा हुई ।

जिनालय निर्माण के समय कइयों का सुझाव था कि पाटण के कालका विस्तार व एकांत स्थल में पूजा के लिए कौन आएगा ?

शंखेश्वर दादा की कृपा से आज वहां आसपास में 85 बंगले हैं जैन अजैन सभी प्रभु दर्शनार्थ आते हैं ।

16 असीम उदारता

वि.सं. 2048 में रामजन्म भूमि के विवाद में शंखेश्वर के पास आए हारीज गांव में भी दंगे फैल गए। उस दंगे में गांव में रहा उपाश्रय जलकर भस्मीभूत हो गया।

दूसरे दिन ये समाचार दैनिक पत्र Newspaper में छपे।

जैसे ही पूज्यश्री ने ये समाचार पढे। उनका हृदय द्रवित हो गया। उन्होंने तुरंत ही संघ के अग्रणियों को बुलाकर आश्वासन दिया।

हारिज संघ के साथ उनका कोई विशेष परिचय नहीं, फिर भी उदारदिल पूज्यश्री के उपदेश से नया उपाश्रय तैयार हो गया।

उनकी इस उदारवृत्ति को देख हारिज संघ खूब प्रभावित हुआ।

17 कृतज्ञता गुण के स्वामी

जामनगर (सौराष्ट्र) में संस्कृत भाषा के एक प्रकांड विद्वान् पंडितजी थे, जिनका नाम था **'पंडित व्रजलाल भाई !'**

वे साधु-साध्वीजी को पढाते थे। लगभग उन्होंने अपनी Last उम्र (90 वर्ष की उम्र) तक साधु-साध्वीजी को पढाया है।

अपनी धार्मिक संस्था की ओर से नियमित वेतन मिलता था, परंतु उस वेतन से उनका घर खर्च निकलता था। ऐसी कोई बचत नहीं थी कि जिससे वे अपना घर बना सके।

पूज्य पंन्यासजी श्री वज्रसेनविजयजी म. ने अपने संयम जीवन के प्रारंभिक वर्षों में एक बार एक वर्ष तक उनके पास अध्ययन किया था।

'ज्ञानदाता' के प्रति पूज्यश्री में विशिष्ट कोटि का कृतज्ञता का भाव था।

उनकी ही प्रेरणा से पंडितजी को वर्षों तक नियमित वेतन मिलता था, प्रसंग प्रसंग पर उनका बहुमान भी करवाते थे।

इतना ही नहीं, उनके परिवारजनों को ऐसा न लगे कि 'वर्षों तक जैन संघ में सेवा देने पर भी वे अपने परिवार हेतु अपना घर न बना सके ।

पूज्यश्री के ईशारे मात्र से गुरु भक्तों ने औचित्य दान देकर अपने विद्यादाता को चिंता मुक्त कर दिया और उनके और उनके परिवार को रहने के लिए अपना घर बन गया ।

परार्थप्रेमी

वि.सं. 2064 की घटना है ।

पूज्यश्री का बोटाद (सौराष्ट्र) में चातुर्मास हेतु मंगल प्रवेश हो चूका था ।

पूज्यश्री अपने शिष्यादि परिवार के साथ प्रभु दर्शनार्थ जा रहे थे ।

तभी सामने से भडकती हुई गाय आई और उस गाय की टक्कर से पूज्यश्री नीचे गिर पडे । उनके थापे में फेक्चर हो गया । तुरंत ही उन्हें उपाश्रय में लाया गया ।

बोटाद के ट्रस्टियों ने विचार विमर्श कर कहा, **'यहां इतना सही उपचार नहीं होगा, उन्हें अहमदाबाद ले जाए तो ज्यादा अच्छी ट्रीटमेंट हो सकती है ।'**

पूज्यश्री ने कहा, **'जैसी भी हो मेरी यही पर ट्रीटमेंट होनी चाहिए, मुझे अहमदाबाद ले जाने की जरुरत नहीं है ।'**

मेरे भरोसे इतने महात्मा व साध्वीजी पधारे है, उनकी समाधि का क्या ? अतः कुछ कमी रह जाय तो भी परवाह नहीं है, परंतु मेरा ओपरेशन आदि यही पर हो !

अपनी बीमारी में भी दूसरों की चिंता करनेवाले पूज्यश्री को लाख लाख वंदन !

19 परोपकार मूर्ति

जामनगर के एक अच्छे विधिकारक का नाम था–सुरेशभाई !

वर्षों से उनके दिल में संयम ग्रहण का मनोरथ था, परंतु पारिवारिक अडचनों के कारण काफी समय निकल गया ।

उम्र बढती गई और वे 80 वर्ष के हो गए ।

इतनी बडी उम्र में भी उनका संयम का प्रेम घटा नहीं ।

एक दिन वे पूज्यश्री के चरणों में बैठ गए और दीक्षा प्रदान करने के लिए आजीजी करने लगे । न पारिवारिक रिश्ता और न कोई सामाजिक रिश्ता ।

परंतु परम दयालु पंन्यासजी म. ने आखिर उनकी विनती स्वीकार की और 80 वर्ष की उम्र में भी दीक्षा प्रदान की और उन्हें अपने आश्रित **पू.आ. श्री हिमांशुसूरिजी म.** के शिष्य **मु. श्री नयनरत्नविजयजी म.** का शिष्य बना दिया । नाम रखा-**मु. सम्यग्रत्नविजयजी म.सा.** ।

मु. नयनरत्नविजयजी म. को भी भगवती के जोग करवाकर गणी-पंन्यास बना दिया ।

स्व-पर की भेद रेखा से मुक्त बने पूज्य पंन्यासजी म. अपने आश्रित को भी अपना ही समझते थे ।

20 प्रकृष्ट पुण्यबल

पूज्य पंन्यासजी म. के जीवन में पुण्य-पाप के उदय का प्रबल संगम था ।

एक ओर निकाचित अशाता वेदनीय कर्म का उदय भी सतत चलता रहता था तो दूसरी ओर उनका पुण्योदय-पुण्य प्रभाव भी अजब-गजब का था ।

उनको पुण्योदय से वे जो भी संकल्प करते वह अवश्य पूर्ण होता था, दुर्लभ वस्तु भी उन्हें सहज प्राप्त हो जाती थी ।

एक बार एक साध्वीजी म. कोई दवाई नियमित लेते थे । वह दवाई कहीं मिल नहीं रही थी । चारों ओर Medical Store में छानबीन करने पर भी नहीं मिल पाई । उन्होंने पूज्य पंन्यासजी म. से बात की । पूज्यश्री ने योग्य आश्वासन दिया ।

उसके बाद थोडी ही देर में केशुभाई का लंदन से फोन आया, **'मैं दो दिन बाद इंडिया आ रहा हूँ । मेरे योग्य सेवाकार्य फरमाए ।**

पूज्यश्री ने अपने सेवक द्वारा केशुभाई को सूचित किया कि अमुक दवाई की आवश्यकता है, मिल सके तो कोशिश करना ।'

दो दिन बाद केशुभाई भारत आए । दवाई लाकर पूज्यश्री को अर्पित की । पूज्यश्री ने साध्वीजी म. को पहुँचा दी ।

साध्वीजी म. के आश्चर्य का पार न रहा ।

21 करुणा मूर्ति

वि.सं. 2053 में पूज्यश्री को चमडी का असह्य रोग पैदा हुआ ।

उस समय पूज्य पंन्यासजी म. जामनगर में विराजमान थे ।

चर्मरोग के स्पेशियलिस्ट डॉ. आचार्य पूज्य श्री देखने के लिए उपाश्रय में पधारे । पूज्यश्री की शारीरिक स्थिति को देखकर डॉक्टर ने कहा, **'सुलगते हुए अंगारे को शरीर पर रखने से जो पीडा होती है, वैसी पीडा इस रोग में दर्दी को होती है ।'**

परंतु इस दर्द में भी इन महात्मा की समता-प्रसन्नता देखते हुए लगता है कि ये कोई योगी पुरुष है । (बस, उसी दिन से डॉक्टर सा. के दिल में पूज्यश्री के प्रति पूज्य भाव-अहोभाव बढता ही गया !)

योग्य ट्रीटमेंट की बात कर जाते समय डॉक्टर ने कहा, **'अभी इरवीन हॉस्पीटल में पूज्यश्री के जैसे ही रोग का एक दर्दी 35 वर्ष का नवयुवक है । उसे इस दर्द में बर्फ की लादी पर सुलाया गया है ।'**

डॉक्टर के जाने के बाद पूज्य पंन्यासजी म. ने **मु. हेमप्रभविजयजी म.** को कहा, **'मेरे इस दर्द में तो मेरी सेवा में पूरा संघ खडा है । परंतु**

उस दर्दी की क्या हालत होगी ? दो-तीन लोगों को हॉस्पीटल में भेजकर उस दर्दी की तपास कराओ ।'

उसकी आर्थिक व कौटुम्बिक स्थिति कैसी है ? योग्य जांचकर उसको योग्य सहायता की व्यवस्था कराओ ।

पूज्यश्री की इस उदात्त करुणा भावना को जानकर तुरंत ही **मु. श्री हेमप्रभविजयजी म.** ने उस दर्दी की सारी व्यवस्था करवा दी ।

अपनी स्वयं की असह्य वेदना में भी दूसरों की वेदना के प्रति कल्पनातीत संवेदना खूब आश्चर्यकारी है ।

स्वयं के दु:ख के प्रति तो प्राणी मात्र को करुणा होती है, परंतु दूसरों के दर्द में इतनी सहानुभूति की भावना और सहयोग करने की मनोवृत्ति विरल आत्माओं में ही देखने को मिल सकती है ।

साधर्मिक भक्ति

सद्धर्मप्रेमी परंतु आर्थिक दृष्टि से कमजोर, ग्लान व वयोवृद्ध साधर्मिकों के प्रति पंन्यासजी म. के दिल में अपार करुणा की भावना थी ।

साधु तो अकिंचन होता है, अत: वे तो दु:खी श्रावकों को धर्मोपदेश और धर्म आराधना की प्रेरणा द्वारा ही सहायता कर सकते है, वे स्वयं आर्थिक मदद तो नहीं कर सकते है ।

पूज्य पंन्यासजी म. का पुण्य प्रबल था । वे अपने भक्तों को गरीब, रुग्न वा आर्थिक दृष्टि से कमजोर श्रावकों को आर्थिक सहयोग की प्रेरणा करते थे । उनके उपदेश को पाकर अनेक साधर्मिकों को खूब सहयोग मिला है ।

किसी को सहयोग दिलाकर, उनसे कभी किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं रखते थे ।

एक बार पूज्यश्री कस्तुर धाम पालीताणा में विराजमान थे ।

उस समय अहमदाबाद से एक साधर्मिक उनके पास आया । वह श्रावक वैयावच्च प्रेमी था, परंतु आर्थिक दृष्टि से कमजोर था ।

उसके साले की उम्र 25 वर्ष की थी और दोनों किडनी Fail हो गई थी, उसकी माँ एक किडनी देनेवाली थी, परंतु ओपरेशन के लिए पैसे नहीं थे ।

उसने पूज्यश्री से बात की । पूज्यश्री ने पूछा, **'ओपरेशन कब है ? उस भाई ने Date बता दी । फिर उस का नाम Add. ले लिया ।'**

ठीक 1 मास के बाद जिस दिन ओपरेशन था,

पूज्यश्री के उपदेश से एक भाई ने आकर उन्हें 50,000 रु. Cash व 50,000 का चेक दे दिया ।

उस भाई का Operation Sucess हो गया ।

कोई संबंध नहीं, कोई परिचय नहीं ऐसे अज्ञात व अपरिचित व्यक्ति को भी वे पूरा पूरा सहयोग दिलाते थे ।

ऐसे एक नहीं, सैंकडों साधर्मिकों को सहयोग दिलाकर उन्हें सद्धर्म में स्थिर किया था ।

वि.सं. 2032 में अहमदाबाद में एक बहिन की भागवती दीक्षा हुई । दीक्षा के बाद बडी दीक्षा के जोग हेतु भयंकर गर्मी में अहमदाबाद से विहारकर सा.म. राणकपुर पधारे ।

उस समय **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.** एवं **पू.आ. श्री कलापूर्णसूरिजी म.सा.** राणकपूर विराजमान थे ।

भयंकर गर्मी के कारण **(सा. श्री सौम्यदर्शिताश्रीजी)** सा.म. को खून की Vomiting चालू हो गई । सा.म. को सादडी में Hospital में Admit किया गया ।

पू. पंन्यासजी म. की सूचना से तबीबी क्षेत्र में निष्णात **मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** को सादडी भेजा और उनके मार्गदर्शनानुसार साध्वीजी म. की योग्य ट्रीटमेंट चालू हुई ।

समय पर योग्य उपचार के फलस्वरुप साध्वीजी म. की घात दूर हो गई और उन्हें नया जीवन मिल गया । सा.म. को खून की कमी थी तो

पूज्यश्री की सत्प्रेरणा से सादडी के अनेक नवयुवकों ने Blood Donation कर साध्वीजी म. को बचा दिया ।

23 सेवा भावना

मैत्री वात्सल्य धाम के निर्माण के साथ ही संपूर्ण भारत में कोराना की महामारी फैल गई । उस समय पूज्य पंन्यासजी म. की प्रेरणा व उपदेश से मैत्री वात्सल्य में कोराना सेंटर खोला गया ।

बडी संख्या में साधु-साध्वीजी के ट्रीटमेंट की व्यवस्था की गई ।

60-70 साध्वीजी को पुनः स्वस्थता प्राप्त हुई ।

आज भी 100 से अधिक साध्वीजी भगवंतों की वहां सेवा शुश्रुषा हो रही है ।

24 भेदज्ञान की अनुभूति

देह और आत्मा के भेद की बात करना बहुत आसान हैं, परंतु देह और आत्मा के भेद की अनुभूति करना खूब कठिन है ।

पूज्य पंन्यासजी वज्रसेनविजयजी म. के जीवन में सतत रोगों का उपद्रव रहा है, परंतु उन रोगों के बीच भी वे देह और आत्मा के भेद की अनुभूति करते हुए देह के रोगों को समता-समाधि पूर्वक सहन करने में सक्षम थे ।

एक बार पूज्यश्री लिंबडी में विराजमान थे । वे संथारे में आराम कर रहे थे ।

उसी समय पं. अमृतभाई उन्हें वंदनार्थ आए ।

पंडितजी ने शाता पूछी तो पूज्यश्री ने कहा, **'जब तक शरीर है, तब तक वेदनीय कर्म है । वेदनीय कर्म है तो शाता-अशाता रहने ही वाली है ।'** इस पंचमकाल में शाता कम और अशाता ज्यादा रहती है । अशाता का मुख्य स्थान शरीर है । शरीर तो रोगों का घर हैं । संस्कृत में इसे **'गदालय'** कहते हैं ।

रोगों में हाय-हाय करेंगें तो वेदनीय कर्म **'गदा'** उठाएगा, जो परम ऐसी आत्मा को पामर बना देगा ! सहन करेंगें और समाधि पाने के लिए ही ट्रीटमेंट कराएंगें तो पामर आत्मा भी परम बन जाएगी ।

25 परोपकार परायण

पू.आ. विबुधप्रभसूरिजी म. गुजरात से मारवाड की ओर विहार करते हुए जा रहे थे, विहार दरम्यान वे पूल पर से नीचे खड्डे में गिर गए । 3 फूट गहरे खड्डे में से बडी मुश्किल से उन्हें बाहर निकाला गया ।

रणूज गांव में लाया गया । उस समय **पू. पंन्यासजी वज्रसेनविजयजी म.** पाटण में थे । उन्हें समाचार मिलते ही पूज्य आचार्य भगवंत की ट्रीटमेंट की सारी जवाबदारी संभाल ली । पूज्य आचार्य म. का मारवाड का विहार केंसल किया । पूज्य पंन्यासजी म. ने खडे पांव सेवा भक्ति कर पूज्य आचार्य भगवंत का दिल जीत लिया ।

26 औचित्य पालन में जागरुक

सभी गुणों में औचित्यपालन की खूब महत्ता है ।

अन्य सभी गुण हो परंतु औचित्य पालन न हो तो उन सब गुणों की भी कोई कीमत नहीं है ।

पूज्य पंन्यासश्री वज्रसेनविजयजी म. में औचित्य पालन का गुण दूस दूस कर भरा हुआ था । छोटे-बडे, स्व समुदाय एवं पर समुदाय के सभी महात्माओं के साथ उनका औचित्य पालन गुण विशिष्ट कोटि का था ।

औचित्य पालन में वे कहीं भी चूकते नहीं थे ।

वि.सं. 2053 की घटना है । आंबावाडी-अहमदाबाद में एक परिवार की ओर से जिन भक्ति महोत्सव का आयोजन था । महोत्सव में निश्रा प्रदान हेतु पू. पंन्यासजी म. के साथ **पू. आचार्य श्री हेमभूषणसूरिजी म.** को भी विनती थी ।

दोनों का सामैया हुआ । सामैये के बाद प्रवचन के समय पाट पर बैठने का प्रसंग आया तब दोनों में से एक भी प्रवचन पाट के बीच में बैठने के लिए तैयार नहीं हुए ।

पद से **पू.आ. श्री हेमभूषणसूरिजी** बडे थे तो पर्याय में पंन्यासजी म. बडे थे ।

दोनों एक दूसरे को बीच में बैठने के लिए आग्रह कर रहे थे । आखिर बीच में थोडी जगह छोडकर दोनों बैठें ।

फिर मांगलिक का प्रश्न आया तो पंन्यासजी म. का एक ही आग्रह था **'मांगलिक आपको ही करना है ।'** आचार्य भगवंत भी उन्हें आग्रह करने लगे ।

आखिर **पू.आ. श्री हेमभूषणसूरिजी म.** ने मांगलिक किया ।

पूज्य पंन्यासजी म. अपने से पद में बडे आचार्य भगवंत का भी पूर्ण औचित्य का पालन करते थे ।

27 कुशल-संचालन

संस्कृत में एक सुंदर सुभाषित है-**'आयोजकस्तु दुर्लभः ।'**

बिखरे हुए फूल होते हैं, वे सुंदर नहीं लगते हैं, परंतु एक माली मिल जाय तो उन फूलों में से एक सुंदर माला बन जाती है ।

दुनिया में काम करनेवाले कार्यकर्ता बहुत मिल जाएंगें परंतु उन सबको जोडने का काम करनेवाला आयोजक तो कोई विरल ही बन पाता है ।

पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म. सचमायने में **श्रेष्ठ आयोजक** थे ।

दीक्षा के प्रारंभिक जीवन में गहन शास्त्राभ्यास के बाद पू. प्रगुरुदेवश्री ने उनमें कुशल संचालक की योग्यता-पात्रता देखी, तदनुसार **पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.** ने अपने ग्रुप की सारी व्यवस्था की जवाबदारी **पू. मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** को सौंप दी ।

छोटे-बडे सभी गुरु भगवंतों के साथ पत्र व्यवहार की सारी जवाबदारी वे अच्छी तरह से संभालते थे ।

प्रति वर्ष अनेक क्षेत्रों से अनेक संघों की चातुर्मास हेतु विनतियाँ आती थी ।

किन महात्मा को किसके साथ किस क्षेत्र में भेजना ? इस कार्य भार को वहन करने में उनकी पूरी Mastery थी ।

सभी महात्माओं के प्रति उनका व्यवहार तटस्थतापूर्ण था ।

संघ को संतोष देना और महात्माओं को संतोष देना आसान काम नहीं है । परंतु इस कार्य में उनकी प्रज्ञा बहुत ही संतोषकारक थी ।

अपने कुशल संचालन के द्वारा वे अपने प्रगुरुदेव श्री को खूब सहायक बनते थे, उनके कार्यभार को खूब हल्का कर देते थे ।

वि.सं. 2036 में पूज्य प्रगुरुदेवश्री का पाटण में कालधर्म हो गया । उसके बाद पूज्य पंन्यासजी भगवंत के ग्रुप में वडील के रुप में **पू.आ. श्री प्रद्योतनसूरिजी म.सा.** और **पू.आ. श्री कुंदकुंदसूरिजी म.** थे परंतु उन दोनों ने पूरे ग्रुप की जवाबदारी **पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** के कंधों पर सौंप दी थी । अपने कुशल नेतृत्व के द्वारा उन्होंने छोटे-बडे सभी महात्माओं के दिल को जीत लिया था ।

वि.सं. 2040 की घटना है । व्याख्यान वाचस्पति **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** का चातुर्मास पन्नारुपा धर्मशाला पालीताणा में था । उस समय कुल 90 महात्मा थे । चातुर्मास के बाद नवाणुयात्रा प्रारंभ हुई । उस समय मांडली व्यवस्था की सारी जवाबदारी **पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** को सौंपी गई ।

मांडली के कार्य में 8-10 घडे पानी लाना या 8-10 महात्माओं की गोचरी लाना आसान कार्य है परंतु मांडली की संपूर्ण व्यवस्था संभालना खूब कठिन कार्य है ।

इतनी बडी जवाबदारी में उन्हें **पू.मु. श्री मुक्तिप्रभविजयजी म.** एवं **पू.मु. श्री भव्यरत्नविजयजी म.** का भी पूरा पूरा सहयोग था ।

कई बार **पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** स्वयं अन्य महात्माओं का कार्य भार वहन करके भी मांडली की व्यवस्था में कहीं कमी आने नहीं देते थे ।

28 नम्रता

एक बार किसी महात्मा ने **पू. पंन्यासश्री वज्रसेनविजयजी म.** को पूछा, **'स्व-पर का भेद रखे बिना इतने अधिक महात्माओं को जीवन के अंतिम समय तक समाधिप्रदान करने का भाव कैसे पैदा हुआ ?'**

बहुत ही सहजभाव से पंन्यासजी म. ने जवाब दिया, **'यह सब पूज्य गुरुदेवश्री की कृपा का फल है । उनकी ही प्रेरणा और उनके आशीर्वाद का परिणाम है ।'**

अपने गुरुदेव के वचन पालन के खातिर अपने जीवन का सर्वस्व अर्पण कर देना और उस कार्य में मिली सफलता का यश भी गुरु चरणों में धर देना, कोई सामान्य बात नहीं है ।

29 गुरु हृदय में प्रतिष्ठित

संयम जीवन की साधना का निचोड है–**''गुरु को हृदय में बसाना और गुरु के हृदय में बसना !''**

गुरु को हृदय में बसाना तो भी सरल है, परंतु गुरु के हृदय में बसना, यह तो कठिनतम साधना है ।

पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म. के हृदय में अपने गुरुदेव का वास था ।

दीक्षा अंगीकार के शुभदिन से ही गुरु की आज्ञा ही उनके लिए सर्वोपरि थी । गुर्वाज्ञा के पालन के खातिर वे कैसा भी कष्ट सहन करने के लिए तैयार थे ।

अपने इस समर्पण गुण के कारण ही वे **पूज्य पंन्यास श्री भद्रंकरविजयजी म.** के हृदय में बसे हुए थे ।

अपने कालधर्म के पूर्व पूज्य पंन्यासश्री भद्रंकरविजयजी म. ने अपने वसीयत नामे में लिखा था ।

'वज्रसेन वि. मारी घणी सेवा करी छे, एमने बराबर साचववा ।'

अपने गुरुदेवश्री के हृदय में उनका कैसा वास था, यह इन शब्दों से स्पष्ट हो जाता है ।

30 प्रभावक वचन

दुनिया में कई लोग ऐसे होते है जो बोलते ज्यादा हैं, परंतु उनके वचनों का प्रभाव बहुत ही कम दिखता है, जब कि कुछ लोग ऐसे होते हैं जो कम बोलते हैं, परंतु उसका असर बहुत ज्यादा दिखाई देता है ।

पूज्य पंन्यासजी म. खूब कम बोलते थे, परंतु उनके वचन का प्रभाव खूब देखने को मिलता था । ऐसा कह सकते है कि उनके पास वचन लब्धि थी ।

एक बार आराधना धाम में अर्हद् महापूजन का आयोजन था । एक ही परिवार ने संपूर्ण पूजन का लाभ लिया था ।

आयोजक परिवार की पुत्री साहेबजी को वंदन करने के लिए आई ।

पूज्यश्री को ख्याल था कि यह पुत्री अपने सास-ससुर की संभाल बराबर नहीं लेती है ।

पूज्यश्री ने खूब सहज व सरल भाव से कहा, **'माता-पिता अर्थात् सार-श्वसुर की भक्ति करके जो अरिहंत परमात्मा की भक्ति करता हैं, तो वह भक्ति शीघ्र फलदायी बनती है ।'**

पूज्यश्री के इन शब्दों ने उस बहन पर ऐसा जादुई असर किया कि उसका स्वभाव ही बदल गया और वह अपने सार-श्वसुर की बराबर संभाल लेने लगी ।

31 जन्म व समाधि स्थल में जिनालय

बहुत ही विरल आत्माएं होती हैं, जिनके जन्म स्थल और समाधि स्थल में जिनालय बनते है ।

पूज्य पंन्यासजी म. का जन्म जामनगर के जिले में आए हालार क्षेत्र में आए एक छोटे से गांव आमला गांव में हुआ था ।

उस गांव में जिनालय नहीं था । पूज्यश्री की दीक्षा के वर्षों बाद मगसर सुदी-10, वि.सं. 2044, दि. 30-11-1987 में उसी स्थल पर जिनालय का निर्माण हुआ और वहां भगवान प्रतिष्ठित किये गए । उस समय **पू.आ. श्री प्रद्योतनसूरिजी म.** की मुख्य निश्रा थी और पूज्यश्री भी वहां साथ में थे ।

पूज्यश्री के कालधर्म के बाद **कामदार कॉलोनी** जामनगर में जिस स्थल पर पूज्यश्री का अग्नि संस्कार हुआ, उस स्थल पर भी 1 ही वर्ष में जिन मंदिर का निर्माण हुआ और वहां प्रभुजी की पावन प्रतिष्ठा वि.सं. 2078 में **पू.आ. श्री मनमोहनसूरिजी म.** तथा **पू.आ. श्री हेमप्रभसूरिजी म.** आदि की शुभनिश्रा में भव्य महोत्सव के साथ संपन्न हुई ।

32 चमत्कार

जामनगर में एक दरबारभाई प्रतिदिन धर्मनाथ प्रभु के मंदिर में 1½ घंटें तक पूजा भक्ति करता था ।

एक बार उसे पीठ में भयंकर दर्द होने लगा ।

उसे लगा कि आज मेरी पूजा रह जाएगी ।

उसके पास पूज्यश्री के अग्नि संस्कार की राख थी, उसने वह राख अपनी पीठ पर लगाई और चंद क्षणों में ही उसकी पीठ का दर्द गायब हो गया ।

फिर उसने जाकर प्रभु की पूजा भक्ति की । पूज्यश्री का जीवन तो परोपकार मग्न था ही, परंतु उनके कालधर्म के बाद उनके देह की राख भी परोपकार कर सकती थी ।

33

परम हितैषी

भागवती-दीक्षा के बाद बाल मुनि (मु. हेमभद्र वि.) पूज्य पंन्यासजी म. के पास बैठकर सूत्र की गाथाएं कंठस्थ कर रहे थे ।

पूज्यश्री ने पूछा, **'कितनी गाथाएं याद करते हो ?**

बालमुनि ने कहा, पूरे दिन में दो गाथाएं ।' महेनत करता हूँ, परंतु बहुत समय लगता हैं याद नहीं रहता हैं ।

उसी समय परम दयालु परम हितैषी पूज्य पंन्यासजी म. ने प्रसन्न होकर बालमुनि को सरस्वती का मंत्र प्रदान किया और बोले, **'यह जाप रोज करना, तुम्हारी स्मरण शक्ति बढ जाएगी ।'**

बाल मुनि ने पूज्यश्री की आज्ञा शिरोधार्य की ।

उसके बाद बालमुनि की स्मरण शक्ति भी बढ गई ।

उन्होंने सैकडों गाथाएं कंठस्थ की ।

卐 卐 卐 卐

पूज्य म. श्री वज्रसेनविजयजी म. के उपदेश से `पाटण (गुज.) में **'विमल सेवा समिति'** अर्थात् साधु-साध्वी वैयावच्च हेतु ट्रस्ट बना था ।

पाटण के डॉ. हेमेन्द्रभाई अपने अनुभव में लिखते हैं आज से 30 वर्ष पूर्व पाटण में एक साध्वीजी म. को गोचरी वापरने में तकलीफ हो रही थी, निदान करने पर पता चला कि उन्हें अन्ननली में केंसर हो गया है ।

तत्काल पूज्यश्री की प्रेरणा से साध्वीजी भगवंत का ओपरेशन आदि उपचार किया गया और उस उपचार का संपूर्ण लाभ **'विमल सेवा समिति'** ने लिया ।

पिछले 40 वर्षों से यह ट्रस्ट साधु-साध्वीजी की चिकित्सा आदि में वैयावच्च का लाभ ले रहा है ।

ईस्वी सन् 2016 में पूज्य पंन्यासजी भगवंत की स्थिरता उस्मानपुरा शांतिनगर में थी ।

उस समय हेमेन्द्रभाई की धर्मपत्नी को केंसर हो गया । ओपरेशन के पूर्व पूज्यश्री को वंदन के लिए गए । पूज्यश्री ने ऐसी सुंदर प्रेरणा दी कि केंसर के रोग में भी समाधिभाव प्राप्त हो गया ।

34 समझाने की कला

40 वर्ष पूर्व की घटना है ।

पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.सा. का चातुर्मास गिरधर नगर में था ।

उस समय पं. अमृतभाई पटेल छोटे-साधुओं को पढाने के लिए आते थे । कॉलेज के अभ्यास के वर्तमान वातावरण के कारण वे पेंट-शर्ट पहनते थे ।

एक दिन पू.पंन्यासजी म. ने अत्यंत ही मधुर वाणी में वहा, **'पंडितजी ! आप साधुओं को अभ्यास कराते हो । साधु के वेष ओर जीवन में सादगी है । जिसका अभ्यास करा रहे हो, वह जिनवाणी भी पवित्र है । आप श्रद्धा संपन्न श्रावक हो अतः आपका वेष भी सादगीपूर्ण हो तो अच्छा रहेगा ।'**

पंन्यासजी म. के इस सुझाव से पंडितजी को लेश भी खेद नहीं हुआ, बल्कि दूसरे ही दिन से उनकी वेशभूषा बदल गई ।

पूज्य पंन्यासजी म. की यह विशेषता थी कि किसी को भूल सुधार के लिए भी वे इस ढंग से मधुर शब्दों में कहते कि सामने वाले को बुरा भी नहीं लगता और भूल सुधार भी हो जाता था ।

किसी के पांव में कांटा लगा हो तो उसको बाहर निकालने के लिए भी **'कला'** चाहिए ।

किसी व्यक्ति के जीवन में रही किसी बुराई को दूर करना हो तो उसके लिए भी खूब होशियारी चाहिए ।

किसी की भूल को सुधारने के लिए पूज्य पंन्यासजी म. में एक अद्‌भूत कला थी !

एक महात्मा **(पू. वैराग्यरति वि.)** लिखते है,

'बचपन से ही मेरे पिताजी के साथ मेरे संबंध अच्छे नहीं थे । मैं उनके प्रति खूब अविनयी और उद्धत था । उनकी सत्य बात भी मुझे पसंद नहीं पडती ।'

पिताजी का थोडा कडक स्वभाव था । मैं भी लोगों के बीच उनका अपमान कर लेता था ।

वि.सं. 2042 की घटना है । मेरा चातुर्मास ज्ञान मंदिर अहमदाबाद में था–**पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** का चातुर्मास विद्याशाला में था ।

एक बार उन्होंने मेरे पिता मुनि के प्रति मेरे उद्धत व्यवहार को प्रत्यक्ष देख लिया ।

वे मुझे सुधारना चाहते थे, परंतु प्रत्यक्ष तो उन्होंने कुछ भी ठपका नहीं दिया, परंतु एक बार प्रेम से बोले, महाराज ! तुमको पढने का बहुत शौक है । मेरे पास एक स्टोरी बुक है । पढोगे ?

मैने 'हाँ' भर दी ।

फिर उन्होंने मेरे हाथ में **'माँ-बाप ने भूलशो नहीं !'** पुस्तक थाम थी ।

'पहले तो मुझे कुछ धक्का लगा परंतु उनकी आंखों में रहे प्रेमभाव के कारण मैंने वह पुस्तक ग्रहण की ।'

उनकी प्रेरणा से वह पुस्तक एक बार पूरी पढी । उस पुस्तक में वर्तमान के कई जीवंत दृष्टांत थें ।

प्रारंभ में तो मेरे जीवन में कुछ भी परिवर्तन नहीं आया परंतु उस पुस्तक को पुनः पुनः पढने से पिता के उपकारों का ख्याल आया । मेरी भूलें समझ में आने लगी । मेरा अन्तर्मन पुकारने लगा और मैं पिता मुनि के खूब निकट आया ।

उनके अंतिम समय में सेवा-समाधि प्रदान करने का अवसर मिला ।

उपकारी पिताजी मुनि के निकट लाने का काम परोक्ष से पूज्य पंन्यासजी म. ने किया ।

किसी को ठपका दिए बिना प्रेम से सुधारने की उनकी कला वाकई में अद्‌भुत थी ।

35 भूल-सुधार

एक महात्मा **(मु. पुण्यनिधान वि.)** को कफ निगलने की बुरी आदत थी ।

एक बार वे महात्मा पू. पंन्यासजी म. की रुम में थे, अचानक उन्हें मुंह में कफ आया और वे धीरे से निगलने लगे ।

इस बात का पूज्य पंन्यासजी म. को ख्याल आ गया ।

उन्होंने धीरे से कहा, **'क्या कफ मीठा लगता है ?'**

फिर प्रेम से समझाते हुए बोले, **'कफ यह तो शरीर की विकृति है, अतः कफ निगलने से शरीर को नुकसान होता है अतः जब भी कफ आए उसे कुंडी या कपडे में साफ करना चाहिए ।'**

मुनिश्री को लगा, **'अहो ! पूज्यश्री को मेरे स्वास्थ्य की कितनी चिंता है ।'**

36 स्थिरीकरण की कला

वि.सं 2060 की घटना है । एक महात्मा **(मु. अर्हंप्रभ वि.)** मानसिक दृष्टि से पूर्ण अस्वस्थ थे । लगभग डिप्रेशन की असर थी ।

संयम में स्थिरीकरण के लिए उन्हें **पू. पंन्यासजी वज्रसेनविजयजी म.** के पास भेजा गया ।

पूज्यश्री खूब दीर्घ दृष्टिवाले और सूक्ष्म प्रज्ञा के धारक थे ।

एक महिने के सहवास से उन्हें ख्याल आ गया कि ग्लान महात्मा के स्थिरीकरण के लिए उन्हें मानसिक जवाबदारी देनी चाहिए ।

दो मास के बाद ही चातुर्मास प्रारंभ होने वाला था । पूज्य पंन्यासजी म. ने अपने एक महात्मा देकर उनको पाटण में चातुर्मास की जवाबदारी सौंप दी । प्रतिदिन व्याख्यान की जवाबदारी होने से ग्रंथों के स्वाध्याय-परिशीलन आदि में सतत व्यस्तता के कारण वे महात्मा एकदम स्वस्थ हो गए ।

फिर दूसरे वर्ष भी चातुर्मास हेतु महात्मा देकर उन्हें पूरा स्थिर कर दिया ।

जो काम बडा डॉक्टर भी न कर सके, वह काम पूज्य पंन्यासजी म. ने सरलता से कर दिया ।

मात्र दो वर्ष में वे महात्मा इतने स्वस्थ हो गए कि अब प्रवचन-चातुर्मास आदि के कार्यभार को बहुत सुगमतापूर्वक कर रहे है ।

37 सूक्ष्म प्रज्ञा के स्वामी

वि.सं. 2062 में **पू. आ. श्री नरचंद्रसूरिजी म.** का उनकी जन्मभूमि हलवद में चातुर्मास था ।

मौन एकादशी के दिन पू. आचार्य म. के संयम जीवन के 50 वें वर्ष में मंगल प्रवेश था ।

उस प्रसंग निमित्त अष्टाह्निक महोत्सव का आयोजन था ।

मु. श्री धर्मतिलक वि. ने पत्रिका का प्रुफ तैयार कर धांगध्रा चातुर्मास विराजमान **पू. पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** को भेजा ।

सूक्ष्म प्रज्ञा के धनी पू. पंन्यासजी म. ने प्रुफ देखकर सप्रेम सूचित करते हुए लिखा, `50 वीं दीक्षा तिथि पर जो **'गुणानुवाद सभा'** लिखा, वह बराबर नहीं है । अपने यहां **'गुणानुवाद सभा'** शब्द स्वर्गस्थ महात्माओं के लिए लिखने की परंपरा है, अतः गुणानुवाद के बदले **'गुणानुमोदन'** या **'संयम अनुमोदन'** लिखा जाय तो ज्यादा अच्छा रहेगा ।

महात्मा ने तुरंत ही भूल सुधार दी ।

38 समता-साधक

एक बार अध्यात्मयोगी पू. पंन्यासजी म. ने कहा था, **'वज्रसेन ! तुझे निकाचित अशाता वेदनीय कर्म का भयंकर उदय है ।'**

पूज्यपाद गुरुदेवश्री के वचन उनके जीवन में सत्य सिद्ध हुए ।

संपूर्ण जीवन में खूब खूब बीमारियाँ आई । परंतु पूज्य प्रगुरुदेवश्री के आशीर्वाद के बल से खूब समता पूर्वक उन वेदनाओं को सहन किया था । खूब समाधिभाव पूर्वक अपूर्व कर्म निर्जरा की थी ।

अत्यंत प्रियग्रंथ-उपमिति

एक बार दादा गुरूदेव पू. पंन्यासजी म. ने कहा, **'वज्रसेन ! तुझे, सात बार उपमिति भवप्रपंचा का वांचन करना है ।'**

अपने गुरूदेवश्री की आज्ञा को शिरोधार्य करते हुए उन्होंने छह बार उपमिति का वाचन कर लिया था ।

जीवन के संध्याकाल में अपनी अस्वस्थ अवस्था में भी सा. जिनमतिश्रीजी के पास उपमिति का संक्षेप में सार आ जाय, इस प्रकार गुजराती अनुवाद करवाया ।

एक बार रात्रि में नींद कम होने से पूज्यश्री दोपहर में सो गए थे ।

पाठ का समय होने पर साध्वीजी म. आए परंतु पूज्यश्री को सोये हुए देखकर वापस चले गये ।

थोडी देर बार पूज्यश्री जगे तब पूछा, **'सा.जिनमतिश्री आये थे ?'**

किसी महात्मा ने कहा, `आप आराम कर रहे थे, अतः वापस चले गये ।

पूज्यश्री ने कहा, **'पाठ तो करना ही है, अतः उन्हें वापस बुला दो ।'**

साध्वीजी म. के आने पर बोले, **'उपमिति तो मेरा खुराक है जब तक उपमिति का पाठ चलता है, मुझे स्वस्थता रहती है मुझे खूब आनंद आता है, अतः यह पाठ बंद नहीं रहना चाहिए ।'**

उपमिति ग्रंथ के बार बार स्वाध्याय से उन्हें यह ग्रंथ आत्मस्थ हो गया था ।

सातवी बार जब यह ग्रंथ पूर्ण हुआ, तब वे खूब प्रसन्नता से बोले, **'दादा गुरुदेव की आज्ञा पूरी हो गई, उसका आनंद है । उनकी कृपा से ही यह काम पूर्ण हुआ है ।'**

ग्रंथ के अनुवाद की समाप्ति के बाद उन्होंने यह ग्रंथ अपने शिष्यवत् रहे आचार्य हेमप्रभसूरिजी को समर्पित किया ।

किसी ने पूछा, **'ऐसा क्यों ?'**

उन्होंने कहा, **'हेमप्रभमहाराज की सेवा से ही अनेक रोगों के बीच मैं बच गया हूँ ।'** उनकी सहायता से ही यह काम शक्य बना है, अतः उनको समर्पण ।

इतिहास में ऐसे प्रसंग क्वचित् ही देखने को मिलेंगे कि गुरु अपना सर्जन शिष्य को समर्पित करे !

40 नवकार-प्रेमी

नवकार महामंत्र के बेजोड साधक **पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म.सा.** के सान्निध्य में रहकर वे स्वयं नवकार प्रेमी बन गए थे ।

अपनी स्वस्थ युवावस्था में वे प्रतिदिन नमस्कार महामंत्र की 25 मालाओं का जाप करते थे ।

वृद्धावस्था में शरीर कमजोर होने पर घटते घटते वे प्रतिदिन ग्यारह मालाएं अवश्य गिनते थे । जाप हेतु माला का आधार कम लेते थे, उनका अधिकांश जाप हाथों पर ही होता था ।

जब भी देखों, उनकी अंगुली घूमती रहती थी, अर्थात् उनका जाप चलता रहता था ।

41 महान्-अनुप्रेक्षक

पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म. ने मात्र पूर्वाचार्य कृत ग्रंथों का सिर्फ स्वाध्याय ही नहीं किया था, वे उन ग्रंथों के गहन पदार्थों की अनुप्रेक्षा भी करते थे ।

कईबार उनके प्रवचनों में सुंदर अनुप्रेक्षाएं सुनने को मिलती थी ।

बोटाद (सौराष्ट्र) में एक बार कार्तिक पूर्णिमा के दिन शत्रुंजय की महिमा के प्रसंग पर अनुप्रेक्षा करते हुए बोले,

शत्रुंजी नदी नाही ने :–

सच्ची शत्रुंजय नदी कौनसी ? अपने विरोधी को भी अपने वश करना हो तो उसका उपाय क्या ?

शत्रु के भी गुण गाए ! उसे स्नेह से नहला दे ।

स्नेह को पानी की उपमा दी है ।

आटे को भी बांधना हो तो थोडा पानी चाहिए । पानी यह सच्चा स्नेह है । पानी से ठंडक मिलती है । बस, इस प्रकार हम जितने स्नेहशील (आत्मीयता पूर्ण) बनेंगें, जगत् के सभी जीवों के साथ स्नेहपूर्ण बनेंगें तो फिर इस जगत् में अपना शत्रु ही नहीं रहेगा ।

स्नेह की नदी में स्नान करना, यही इस **'शत्रुंजी नदी नाही ने'** पद का रहस्य हैं ।

मुखबांधी मुखकोष :– प्रभु की पूजा के समय मुख कोष बांधते है ।

भाव मुखकोष कौनसा ?

इस मुख से असत्य, अप्रिय व असभ्य भाषण नहीं करना और अभक्ष्य भक्षण नहीं करना । शास्त्र में निर्देश है– **'जो व्यक्ति 12 वर्ष तक असत्य भाषण नहीं करता है, उसे वचन लब्धि प्राप्त होती है ।'**

देव युगादि पूजीय, आणी मन संतोष :–

जो व्यक्ति मन में संतोष भाव धारण करता है अर्थात् अपने कर्म के अनुसार जो कुछ मिला है, उसमें संतुष्ट होता है । संतोष भाव रखने से पूर्व पाप कर्मों का क्षय और पुण्य का बंध होता है ।

इस प्रकार सर्वजीवों के प्रति स्नेहभाव, वाणी पर अंकुश एवं मन में संतोष भाव धारण करता हैं, वही व्यक्ति आदिनाथ का सच्चा पूजक कहलाता है ।

(2) समवसरण के तीन गढ के संदर्भ में अनुप्रेक्षा करते हुए वे बोले, **'समवसरण में जाना हो तो पहले गढ में देवविमान, दूसरे में पशु व तीसरे में देव-मानव पर्षदा होती है ।'**

प्रभुपास जाने का अभ्यंतर मार्ग भी ऐसा ही है ।

सर्व प्रथम देवविमान को छोडना है अर्थात् पुद्गल के आकर्षण को दूर करना है ।

उसके बाद दूसरे गढ में पशु अर्थात् पाशविक दुर्गुणों (विषय-कषायों) का त्याग करना है ।

उसके बाद क्षायोपशमिक गुण भी छूट जाप तो सिंहासन अर्थात् हृदय सिंहासन पर विराजमान प्रभु का मिलन हो सकता है ।

(3) सौधर्म इन्द्र बैल बनकर सिंगों से प्रभु का अभिषेक करते है । इस विषय पर सुंदर अनुप्रेक्षा करते हुए बोले, 'बैल का मारक अंग सिंग कहलाता है । बैल सिंग से ही लडता है ।'

प्रभु के संपर्क में आने के बाद मारक अंग भी तारक बन जाते है अर्थात् सिंग में बहती दूध की धारा अर्थात् प्रेम और वात्सल्य का प्रतीक है ।

संसार का मूल

(अनुप्रेक्षा)

एक बार एक मुनिश्री (भव्यकीर्ति वि.) को पूछा, अपनी आत्मा के भवभ्रमण का मूल कौनसा ?

मुनि श्री ने कहा, **'साहेबजी ! आप ही कहो ।'**

उस समय पूज्य पंन्यासजी म. ने समझाया, **'अपनी आत्मा के भवभ्रमण का मूल हैं-जीव का द्वेष और पुद्गल का राग !'**

फिर दृष्टांत से समझाते हुए बोले, `बीच मार्ग में हम किसी स्तंभ (खंभे) से टकरा जाय तो स्तंभ पर गुस्सा नहीं करते है । परंतु किसी व्यक्ति से टकरा जाय तो तुरंत उसके ऊपर गुस्सा निकालते है । **'तुझे दिखता नहीं है, भान नहीं है ।'**

अपने राग के पात्र लगभग शब्द, रुप, रस, गंध और स्पर्श ही होते है और वे पुद्गल ही है ।

भीतर रहे जीव-द्वेष को दूर करने के लिए ही प्रतिदिन अपने हृदय को मैत्री भाव से भावित करना है-**'मित्ति मे सव्व भूएसु !'**

42 आश्रित गण चिंता

मात्र 1 वर्ष की उम्र में ही जिन माता-पिता ने अपनी संतान पूज्य पंन्यासजी म. को समर्पित कर दी थी ।

आगे चलकर उनकी भागवती दीक्षा हुई और वे **मुनिश्री जिनभद्रविजयजी म.सा.** के शिष्य **मुनि श्री हेमभद्रविजयजी** बने ।

बालमुनि के उत्तराध्ययन के जोग चल रहे थे ।

जोग दरम्यान बालमुनि ने वर्धमान तप की दो ओली पूर्ण की ।

दूसरी ओली के उपवास के दिन वे महात्मा दोपहर गोचरी के समय पूज्यश्री की रुम में बैठे थे ।

पूज्यश्री ने कहा, **'आज वापरना नहीं है ? क्या उपवास है ।'**

मुनिश्री ने कहा, **'आज दूसरी ओली का उपवास है और कल से तीसरी ओली करने की भावना है ।'**

पूज्यश्री को पता था कि बालमुनि को अशक्ति बढ रही है, अतः तुरंत कहा, **'कल पारणा कर लेना । तुम्हें अशक्ति रहती है ।'**

बालमुनि स्तब्ध हो गए । **'अहो ! मेरे जैसे बालमुनि की भी पूज्यश्री को कितनी चिंता !'**

पूज्यश्री छोटे-बडे सभी का पूरा पूरा ख्याल रखते थे ।

43 कल्पनातीत उदारता

वि.सं. 2065 के आसपास की घटना है ।

शासन सम्राट **पू. नेमिसूरिजी म.** के समुदाय के **पू. पंन्यास श्री चंद्रकीर्तिविजयजी म.** भावनगर में विराजमान थे ।

उस समय वे अपने सांसारिक पिता और **गुरुदेव मु. श्री दर्शनविजयजी म.** की सेवा मे लगे हुए थे ।

सहवर्ती महात्मा के अभाव के कारण पिता व गुरुदेव की सेवा में **पं. श्री चंद्रकीर्तिविजयजी म.** को सहायक मुनि की अपेक्षा थी ।

उन्होंने अपने हृदय की भावना पालीताणा में विराजमान पू. पंन्यासजी म. के पास व्यक्त की ।

तुरंत ही स्व-पर की भेद रेखा से ऊपर उठे पूज्य पंन्यासजी म. ने **मु. श्री जयधर्मविजयजी** आदि ठाणा को उनकी सेवा में भेजकर कल्पनातीत उदारता का परिचय दिया ।

सचमुच ही उन्होंने **'उपदेशमाला'** के उस उपदेश को आत्मसात् किया था ।

'उत्तम गुणों के धारक महात्माओं की अवश्य सेवा करनी चाहिए ।'

अन्य सब कुछ प्रतिपाती हैं, जब कि वैयावच्च से प्राप्त फल अप्रतिपाती है ।

44 जीवदया प्रेमी

पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म. का हृदय फूल से भी अधिक कोमल और मक्खन से भी अधिक मुलायम था ।

दुःखी प्राणियों के दुःख को देखकर या सुनकर उनका हृदय एकदम द्रवित हो जाता था और सहयोग के लिए शक्य प्रयत्न किए बिना नहीं रहते थे ।

वि.सं. 2043 की घटना है । उस समय समग्र गुजरात में भयंकर दुष्काल का वातावरण था ।

प्रकृति के इस प्रकोप से हालार भी वंचित नहीं था ।

वर्षा के अभाव के कारण पशुओं की खूब बूरी हालत थी ।

आराधना धाम-हालार तीर्थ की पांजरापोल में 7000 पशु थे । घास चारा और पानी की खूब तंगी थी ।

पशुओं की दुर्दशा की कल्पना से पू. पंन्यासजी म. का हृदय द्रवित हो गया ।

उन्होंने लंदन निवासी हीरजीभाई को यहां के दुष्काल व पशुओं की परिस्थिति बताई ।

तत्काल ही पूज्यश्री के उपदेश को शिरोधार्य कर हीरजीभाई ने 1 लाख पाउंड (उस समय के 33 लाख रुपए) का जीवदया का फंड इकट्ठा कर हालार पांजरापोल में भिजवा दिया ।

दुष्काल के कारण मौत के मुंह में प्रवेश कर रहे 7000 पशुओं को जीवनदान मिल गया ।

नवकार-प्रेरक

पूज्य पंन्यासजी म. नवकार महामंत्र के बेजोड साधक थे । अपने प्रगुरुदेव की विचारधारा को **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** ने भी आत्मसात् किया था ।

जब भी समय मिलता वे नवकार के जाप में लीन रहते थे उनके हाथ का अंगुठा निरंतर चलता रहता था ।

एक बार एक भाई (जयंतिभाई सोजपार) उनके पास आए और दिल की व्यथा व्यक्त करते हुए बोले, **'मैं खूब आपत्ति में हूँ और अपना धैर्य खो बैठा हूँ !'** अब, आप ही मेरे आधार भगवान हो, मुझे रास्ता बताए ।

पूज्य पंन्यासजी म. ने खूब प्रेम से आश्वासन देते हुए कहा, **'संसार चक्र है, इसमें सुख दुःख का चक्र चलता रहता है ।'**

पूर्व भव के अशुभ कर्म के उदय से जीवन में दुःख आता है अतः उसे भी समतापूर्वक सहनकर लेना । कर्म के क्षय बिना दुःख दूर होनेवाला नहीं है । चिंता मत करो । हिम्मत मत हारो ।

'नवकार का लेखन चालू करो, समय बीतने पर सब अच्छा होगा ।'

पूज्यश्री की प्रेरणा स्वीकार कर जयंतिभाई ने नवकार लेखन चालू किया । धीरे धीरे मन के सब विकल्प दूर होने लगे । मन प्रसन्नता से भरने लगा । मानों उन्हें नई जिंदगी मिल गई ।

धीरे धीरे नवकार के जाप के साथ सामायिक की आराधना में आगे बढे ।

क्रमशः प्रतिक्रमण के सूत्र कंठस्थ किए । उपधान तप कर मोक्ष माला परिधान की । वर्धमान तप में भी आगे बढे !

इस प्रकार प्राथमिक भूमिका में रहे अनेकों को नवकार का रसिक बनाकर पूज्यश्री ने उन्हें आराधना में जोडा है ।

46 आत्मा के चिकित्सक

शारीरिक रुग्नावस्था के कारण कई डॉक्टर **पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** के संपर्क में आए ।

अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध डॉक्टर सुधीरभाई शाह लिखते हैं कि **'पूज्यश्री को अपने देह का बिल्कुल मोह नहीं था ।'** चिकित्सा क्षेत्र के कार्यकाल में मैंने ऐसे विरल ही संतों के दर्शन किए हैं जो देहातीत होकर आत्मभाव में रमण करते हैं । **उनकी चिकित्सा के समय उनके मुख पर रहा मृदु स्मित उनकी भीतरी दिव्यता को प्रकट करता था ।**

47 मित भाषी

पूज्य पंन्यासजी वज्रसेनविजयजी म. खूब मितभाषी थे ।

आवश्यकता से अधिक वे शब्दों का प्रयोग नहीं करते थे ।

उनके मुख से निकलते हुए थोडे शब्द खूब मार्मिक होते थे ।

किसी को कुछ कहना हो, ठपका देना हो, तो भी वे खूब मधुर शब्दों में ही कहते थे ।

48 दुःख में अदीन

पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म. पालीताणा में विराजमान थे । तभी एक बार वि.सं. के दिन पूज्यश्री को Heart Attack आया । हृदय की धडकन बंद हो गई । **मु. हेमप्रभविजयजी म.** ने मसाज चालू की ।

उनकी गंभीर परिस्थिति को देखते हुए डॉ. संजयभाई ने उन्हें राजकोट Admit करने की सलाह दी ।

Hospital की विराधना आदि का विचार करते हुए एक बार तो पूज्य पंन्यासजी म. ने स्पष्ट इन्कार कर दिया ।

सभी के अति आग्रह आदि के कारण तथा डॉक्टर ने आश्वासन दिया कि ट्रीटमेंट में धर्म के नियमों का ध्यान रखते हुए कम से कम विराधना हो, उसका का ध्यान रखा जाएगा ।

आखिर उन्हें वोकर्ड हॉस्पीटल राजकोट में Admit किया गया और उनकी योग्य चिकित्सा हुई ।

डॉ. संजयभाई लिखते है कि `भारी बीमारी में भी मैंने कभी उनके मुख पर दीनता नहीं देखी और **'जल्दी स्वस्थ हो जाऊं'** ऐसी अधीरता भी नहीं देखी ।

49 कृतज्ञता की पराकाष्ठा

परोपकार में ही कर्मठ ऐसे **पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** को भी भयंकर बीमारी आदि में अनेक की सहायता लेनी पडती थे ।

जिन जिन व्यक्तियों ने उन्हें सहयोग किया, उनके प्रति उनके दिल में खूब कृतज्ञता का भाव रहता था ।

पूज्यश्री बार बार कहते, **'मेरे जीवन में जो भी बडी बडी बीमारियाँ तकलीफें आई हैं, उस समय अरिहंत परमात्मा और पूज्य गुरुदेव पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी म. की असीम कृपा से मैं पुनः ठीक हो गया हूँ । उस समय डॉक्टरों ने तो सहयोग किया ही है परंतु हेमप्रभविजयजी म. व सभी शिष्यों ने मेरी खूब सेवा की है-उन्हीं के सहयोग से मैं पुनः पुनः ठीक हुआ हूँ ।'**

पूज्यश्री की इस बात को सुनकर किसी ने कहा, **'आपने भी तो अपने गुरुदेव पन्यासजी म. की खूब सेवा की है, अतः आपकी भी वैसी सेवा हो रही है ।'**

उस समय कृतज्ञता गुण के स्वामी पूज्यश्री की आंखे अश्रुभिनी हो गई । रोगों की पीडा को सहन करने में वज्र हृदयी होने पर भी उनका हृदय खूब भावुक था ।

इसी भावुकता के फलस्वरुप ही उन्होंने अलग अलग रुप से सेवा करनेवालों के प्रति पूर्ण कृतज्ञता बतलाई है । स्वयं आचार्य पदारुढ नहीं बने, परंतु अपनी सेवा में रत **मु.श्री हेमप्रभविजयजी** को यावत् आचार्य पद प्रदान किया ।

द्रव्य-भाव करुणा

दुःखी व कमजोर साधर्मिकों के प्रति **पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी म.** के हृदय में अपार करुणा थी ।

उनके उपदेश से जामनगर में आर्थिक दृष्टि से कमजोर साधर्मिकों के आवास के लिए **168 फ्लेट साधर्मिकों को भेंट दिए गए और उन साधर्मिकों की पुण्यवृद्धि के लिए जिन मंदिर भी बनाया गया ताकि प्रभु दर्शन व पूजन कर धर्म आराधना में भी आगे बढ सके ।**

गीता के स्थित प्रज्ञ

भागवत गीता में **'स्थित प्रज्ञ'** के बहुत ही सुंदर लक्षण बताए है ।

'सुख में राग नहीं, दुःख में द्वेष नहीं । अनुकूलता में राग नहीं, प्रतिकूलता में द्वेष नहीं । मित्र पर राग नहीं, शत्रु पर द्वेष नहीं !'

राग-द्वेष के प्रसंगों में मध्यस्थता यही **'स्थितप्रज्ञता'** का लक्षण है ।

डॉ. भरतभाई बेडावाले बचपन से ही पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म. के परिचय एवं संपर्क में रहे ।

शारीरिक चिकित्सा हेतु पूजाश्री के अत्यंत निकट आए ।

वे अपने अनुभव में लिखते हैं, **'पूज्यश्री की शारीरिक चिकित्सा दरम्यान मैंने अनुभव किया है कि चाहे जितनी शारीरिक वेदना में भी वे हमेशा' 'स्थितप्रज्ञ' रहते थे ।** भयंकर दर्द में भी उनके मुख पर प्रेम, समता व स्मित ही दिखाई देता था ।

52 तीर्थ-उद्धार

जामनगर से 23 कि.मी. की दूरी पर मोटी भलासण में **सप्तफणा पार्श्वनाथ** का 450 वर्ष प्राचीन जिनालय था, जो 108 पार्श्वनाथ में आता है।

पूज्य पंन्यासजी म. ने इस तीर्थ के जीर्णोद्धार हेतु प्रेरणा की। उन्हीं के प्रेरणा से इस तीर्थ का उद्धार हुआ।

卐 卐 卐 卐 卐

पोरबंदर के पास 50 कि.मी. दूर **बलेज पार्श्वनाथ** का तीर्थ है। एक छोटे से कमरे में पार्श्व प्रभु विराजमान थे।

वि.सं. 2049 में **पूज्य आ. श्री प्रद्योतनसूरिजी म.** के साथ **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी** आदि पोरबंदर में चातुर्मास हेतु पधारे।

चातुर्मास के बाद पूज्यश्री बलेज पधारे। जिनालय की जीर्णशीर्ण स्थिति को देखकर पूज्य श्री ने तीर्थ के उद्धार की प्रेरणा की।

पूज्यश्री के उपदेश से कुछ ही वर्षों में तीर्थ का उद्धार हो गया और भव्य जिनालय तैयार हो गया। पूज्यश्री की निश्रा में भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ।

प्रतिष्ठा महोत्सव का संपूर्ण लाभ लंदन निवासी दिलीपभाई भाईचंद परिवार ने लिया। वहां के अजैन लोग भी प्रतिष्ठा महोत्सव में जुडें। गांव के सभी गरीब परिवारों को अनाज आदि का वितरण किया गया।

पूज्यश्री के उपदेश से आज 25 वर्षों से ग्राम में अनाज वितरण आदि चालू है।

53 निर्मल पुण्य के स्वामी

वि.सं. 2074 में नवागाम-हालार के चंद्रप्रभ जिनालय के 100 वर्ष पूर्ण हो रहे थे। **पू.आ.श्री हेमप्रभसूरिजी म.** की प्रेरणा से भव्य महोत्सव की तैयारी चल रही थी।

भयंकर गर्मी के कारण **पूज्य पंन्यासजी वज्रसेनविजयजी म.** का स्वास्थ्य कमजोर था । पूज्यश्री आराधना धाम विराजमान थे । नवागाम संघ की ओर से **मनसुखभाई** ने पूज्यश्री को शताब्दी महोत्सव पर पधारने की आग्रहपूर्ण विनती की ।

संघ की तीव्र भावना को देख अपने स्वास्थ्य की परवाह किए बिना पूज्यश्री ने अपनी सम्मति प्रदान की ।

पूज्यश्री की निश्रा में ऐतिहासिक शताब्दी महोत्सव का प्रारंभ हुआ ।

वैशाख सुदी-7 पूज्यश्री की दीक्षा का दिन था, उसी दिन जिनालय की ध्वजा थी ।

ध्वजा का चढावा 1 करोड में गया । पूज्यश्री के 63 वीं दीक्षा तिथि निमित्त पूज्यश्री के उपदेश से लाखों रुपए (प्रायः 63 लाख) जीवदया में इकट्ठे हुए और पूज्यश्री के मार्गदर्शन से जीवदया की लगभग रकम पांजरापोलों को वितरीत कर दी गई ।

उस समय पूज्यश्री के निर्मल पुण्य का प्रभाव प्रत्यक्ष देखने को मिला ।

54 सकारात्मक विचार धारा के स्वामी

पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म. के पास गजब की सकारात्मक विचार धारा थी । हर परिस्थिति में वे हमेशा Positive ही सोचते थे ।

एक बार पूज्य पंन्यासजी म. पाटण में विराजमान थे ।

पूज्यश्री के पास एक भाई आया और उसने दीनताभरे स्वर में अपनी व्यथा व्यक्त की ।

दयालु हृदयी पूज्यश्री ने उस समय 6,000 रुपयों की मदद दिलाई । उस भाई के जाने के बाद पता चला कि वह बनावट करके रुपए ले गया है ।

किसी ने कहा, **'आप ठगे गए ।'**

पूज्यश्री ने कहा, **'वह अपने भाग्य का ले गया । मैंने सत्य समझकर दिलाए, अपना काम हो गया ।'**

दुनिया में दानवीर तो बहुत होते है, परंतु पता चल जाय कि जिसे दान दिया है, वह व्यक्ति झूठा है तो **दूसरी बार दान देते हुए दस बार सोचेगा और दूसरे सच्चे व्यक्ति की भी मदद करते हुए विचार कर सकता है,** परंतु पूज्य पंन्यासजी भगवंत की उदारता अलग ही थी । ऐसे संयोगों में भी वे Postive ही सोचते थे–

(1) बनावट करके रुपए लेकर भी वह खुश हुआ न !

(2) अपना धन उसके पास जाएगा, चलो, उसे भी सद्‌बुद्धि सुझेगी ।

वे कभी भी Negative नहीं सोचते थे ।

Positive Thinking के कारण वे हर संयोग व हर परिस्थिति में प्रसन्न व समाधि मग्न रहते थे ।

बार बार बीमारी आने पर भी वे यही सोचते, 'मेरे कर्म का भार हल्का हो रहा है ।'

55 प्रभु की झांकी करानेवाले

पूज्य पंन्यासजी म. के विराट् व्यक्तित्व को देखकर हेमंतभाई अपने स्वानुभूति के संवेदनों में लिखते है,

'आज के युग में हम साक्षात् भगवान को देख नहीं पाते हैं, परंतु जिन्होंने पंन्यासजी म. को देख लिया, तो समझ लो कि उसने बहुत कुछ देख लिया है ।'

56 वचन सिद्ध महापुरुष

एक बार **पूज्य पंन्यासश्री वज्रसेनविजयजी म.** को एक दम्पत्ति ने भावपूर्वक वंदना की । बातचीत के दौरान पूज्यश्री के मुख से सहज शब्द निकले, **'तुम जल्दी ही भगवान के माता-पिता बनोगे ।'**

अंजनशलाका के पावन प्रसंग पर भगवान के माता-पिता बनने की उस दंपत्ति को कोई कल्पना भी नहीं थी या किसी अंजनशलाका महोत्सव का कोई प्रसंग भी सामने खडा नहीं था ।

पूज्यश्री के मुख से इन शब्दों को सुनकर वे दम्पत्ति प्रसन्न हो गए । योगानुयोग कुछ समय बाद पूज्यश्री का कालधर्म हुआ ।

पूज्यश्री के अग्नि संस्कार भूमि पर जिनालय बनाने का निर्णय हुआ । आदिनाथ प्रभु की अंजनशलाका प्रतिष्ठा का निर्णय हुआ ।

और उस पावन प्रसंग पर उसी दम्पत्ति को आदिनाथ प्रभु के माता-पिता बनने का सर्वोच्च सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

सचमुच, वचनसिद्ध महापुरुष के वचन निष्फल नहीं होते है ।

57 हितशिक्षा

एक बार पूज्यश्री ने अपने सांसारिक बंधु प्रेमचंदभाई के सुपुत्र तुषार को हितशिक्षा देते हुए कहा,

'तुषार ! तुम्हारे पिताजी जिस संस्था में ट्रस्टी है, उस संस्था की भोजनशाला में भी तुम्हें मुफ्त में भोजन नहीं करना चाहिए । अपने पैसे देकर ही भोजन करना चाहिए । अनीति व धर्मादा का भूल से भी खाने में न आ जाय, उसका पूरा पूरा ख्याल रखना ।'

58 हृदय की विशालता

मुजपूर (शंखेश्वर) निवासी सुरेन्द्रभाई गोदडलाल शाह की प्रबल इच्छा थी कि शांतिनाथ प्रभु के जिनालय का संपूर्ण जीर्णोद्धार हो । उन्होंने अपनी भावना **पूज्य पंन्यासश्री वज्रसेनविजयजी म.** को व्यक्त की ।

पूज्यश्री ने तुरंत अपनी सम्मति दी, उनके मार्गदर्शनानुसार थोडे ही समय में मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ ।

पूज्यश्री की पावन निश्रा में वि.सं 2071 में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न हुआ ।

पूज्यश्री की निश्रा में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव चल रहा था ।

दीक्षा कल्याणक के वरघोडे के दिन शंखेश्वर से विहार करते हुए **पू. नीतिसूरिजी** समुदाय के सरल हृदयी **पू.आ. श्री हेमप्रभसूरिजी म.** पधारे ।

दीक्षा कल्याणक वरघोडे बाद **पू.पं. श्री वज्रसेनवि. म.** ने संघ को कहा, **'आज भगवान के हाथों से भगवान का अंजन होगा अर्थात् भगवान जैसे सरल हृदयी आचार्य भगवंत के हाथों से प्रभु का अंजन होगा ।'**

अपनी निश्रा में चल रहे अंजन महोत्सव में भिन्न समुदाय के महात्मा पधारे हो, उनको भी उतना ही सन्मान देकर, अंजन विधि भी उनके हाथ से करवाना कितनी बडी बात है । इतना ही नहीं, एक दिन निश्रा प्रदान करनेवाले, तीनों आचार्य भगवंत का भी नाम जिनालय के शिलालेख में लगवाना, यह सब हृदय की विशालता के बिना शक्य नहीं है ।

मंदिर की प्रतिष्ठा दि. 18-1-2015 के शुभ दिन संपन्न हुई थी ।

59 पुण्य प्रभाव

अध्यात्मयोगी पूज्यपाद **पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी, पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** के उपदेश से शंखेश्वर तीर्थ में अनुकंपा के रुप में छाछ वितरण केन्द्र चालू था । वहां अमूल डेरी की छाछ का वितरण होता था, अमूल डेरी की छाछ उन्हें बासी लगती थी, अतः उनका मन मान नहीं रहा था ।

उनके पुण्य प्रभाव से शंखेश्वर में श्रीकांतभाई व श्रीपालभाई जैसे श्रावक मिल गए, जो प्रतिदिन प्रातः ताजी छाछ बनाकर वहां पहुँचाते थे ।

60 त्याग धर्म की प्रेरणा

पूज्य पंन्यासजी श्री वज्रसेनविजयजी म. संयम धर्म के साधक थे, अतः योग्य आत्मा को त्यागधर्म का ही उपदेश देते थे ।

संपूर्ण त्याग करने में असमर्थ आत्माओं को आंशिक त्याग की प्रेरणा देते थे ।

एक बहन (आशिका) को हित शिक्षा देते हुए पूज्यश्री ने कहा, **'40 वर्ष की उम्र में भी दीक्षा नहीं ली है तो अब साधु-साध्वीजी की वैयावच्च करना और अपनी वार्षिक Income का Minimum 10% सुकृत में सद्व्यय करना ।'**

हित शिक्षा

धर्मप्रेमी मिलनभाई अपने अनुभव में लिखते हैं ।

Lock Down के दो मास बाद मेरी सगाई तय हुई । मैं पूज्यश्री को वंदन के लिए आराधना धाम गया, तब पूज्यश्री ने 10-15 मिनिट तक सुंदर हितशिक्षा देते हुए कहा, **'मिलन ! लेने जैसा संयम ही है । तुझे संयम के भाव भी थे, परंतु तेरी मम्मी की बीमारी के कारण तुझे दीक्षा न दे पाए तो तेरे लग्न के लिए हाँ भी नहीं कह सकते है ।'**

अब संसार के बंधन को स्वीकार करना पड रहा है तो इतना ध्यान रखना, **'लग्न के बाद भी ऐसा जीवन जीना कि लोक तुम्हारा आदर्श ले । मम्मी-पप्पा को कभी छोडना मत और उनका कभी अनादर मत करना । माता-पिता को बराबर संभालना ! शासन के जो कार्य कर रहे हो, उसमें कमी मत लाना ।'**

61 जूनागढ के उपकारी

वि.सं. 2051 (ईस्वी सन् 1995) में पूज्य पंन्यास प्रवर श्री वज्रसेनविजयजी म. प्रथम बार जुनागढ चातुर्मास हेतु पधारे ।

संघ के अधिकांश लोग पूज्यश्री से अपरिचित थे, परंतु जहां चातुर्मास पूर्ण हुआ तब ऐसा लग रहा था मानों पूज्यश्री का संघ के साथ जन्मों-जन्म का नाता न हो !

जूनागढ में भी जगमाल चोक से डेढ किसी दूर सोसायटी विस्तार में जैन लोग बसने लगे । सोसायटी में 10 घर बसे परंतु प्रभुदर्शन-पूजन की सुविधा नहीं थी । पूज्यश्री का सोसायटी में चातुर्मास परिवर्तन हुआ ।

पूज्यश्री ने गांव से दूर क्षेत्र होने से जिन मंदिर हेतु प्रेरणा की । थोडा फंड भी हो गया परंतु मंदिर की व्यवस्था कौन संभालेगा यह प्रश्न था ।

जूनागढ संघ की पेढी के पास Extra फंड भी नहीं था । आखिर पूज्यश्री की प्रेरणा से मंदिर व्यवस्था हेतु नए ट्रस्ट का निर्माण किया गया ।

जूनागढ संघ पर **पू. तपस्वी आ. श्री हिमांशुसूरिजी म.सा.** का विशेष उपकार था, अतः इस कार्य हेतु उनके भी आशीर्वाद एवं सम्मति प्राप्त की गई ।

प्रारंभ में एक फ्लेट में मंदिर बना । कुछ वर्षों बाद ईस्वी सन् 2015 में शिखरबद्ध मंदिर में धर्मनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा पूज्यश्री की निश्रा में संपन्न हुई । प्रभु के प्रभाव से चारों ओर उन्नति होने लगी । उपाश्रय, पाठशाला एवं वाचनालय आदि भी बन गए ।

पूज्यश्री ने महत्त्व की हित शिक्षा देते हुए कहा, **'संघ और सोसायटी के दो भाग कभी मत करना । संघ की एक्यता टिकाए रखना । उसी में संघ का हित है और समुदाय आदि के विवाद में मत पडना ।'**

62 उदारता

मुंबई आदि में रहनेवाले कई श्रावक-श्राविकाएं पालीताणा में चातुर्मास करने के लिए आते है, **'परंतु आर्थिक स्थिति कमजोर होने से उन्हें ठहरने के लिए कहीं भी जगह नहीं मिल पाती है ।'** ऐसे लोग भी आराधना आदि से वंचित न रह जाय इसके लिए उनके आवास व भोजन आदि की संपूर्ण व्यवस्था **पूज्य पंन्यासश्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** के उपदेश से प्रारंभ में हुई, जिसकी संपूर्ण व्यवस्था वंथलीवाले वसंतभाई श्री वर्धमान संस्कार धाम करते है, जिसमें कभी 200 कभी 300-400 आराधक भी चातुर्मासिक आराधना करते है ।

पूज्यश्री के उपदेश से यह व्यवस्था 20 वर्षों से चल रही है ।

63 दान धर्म की प्रेरणा

संयम धर्म से सर्वथा अपरिचित और प्राथमिक कक्षा में रहे गुरु भक्तों को **पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** दान धर्म की प्रेरणा करते रहते थे ।

धर्म की प्राथमिक सीढी दान ही है । निष्काम भाव से किया दान जीवात्मा को अवश्य आगे बढाता है ।

पूज्यश्री कइयों को कहते **'सब कुछ त्याग नहीं कर सकते हो तो कम से कम अपनी आय Income का 10% सत्कार्य में व्यय करना चाहिए ।'**

पूज्यश्री की इस प्रेरणा के फलस्वरुप कइयों के जीवन में दान धर्म का प्रवेश हुआ है और उन्होंने दान की गंगा बहाकर जिन शासन की प्रभावना के अनेकविध कार्य किए है ।

64 श्रमण सेवा का आदर्श

पाटण (राज.) निवासी शशिकांतभाई जवेरी ने 66 वर्ष की उम्र में **पू.आ. श्री मित्रानंदसूरिजी म.** के पास दीक्षा अंगीकार की ओर वे **पू.आ. श्री भव्यदर्शनसूरिजी म.** के शिष्य मुनि श्रमणरत्न वि. बने ।

वर्षों तक उन्होंने खूब आराधना की । **पू.आ. श्री मित्रानंदसूरिजी म.** के कालधर्म बाद **पू.आ. श्री भव्यदर्शनसूरिजी म.** के सान्निध्य में सुंदर आराधना की । धीरे धीरे उम्र बढने लगी । वृद्धावस्था के कारण शरीर कमजोर हो गया ।

वि.सं 2072 में अपने गुरुदेव की अनुमति लेकर महोदयधाम में **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** की निश्रा में पधारे । उस समय उनके आगमन व स्वागत के लिए 15-20 महात्मा द्वार पर पधारे । मु. श्री श्रमणरत्न वि.म. की सेवा हेतु एक आदमी साथ में था ।

पू.पंन्यासजी म. ने कहा, **'यहां कोई आदमी (वेतनभोगी सेवक) नहीं, हमारे महात्मा ही उनकी सेवा करेंगें ।'**

लगभग 6 वर्षों तक सभी महात्माओं ने उनकी खूब सुंदर सेवा भक्ति की । वि.सं. 2072 पोष वदी-11 के दिन उनका अत्यंत समाधि के साथ कालधर्म हुआ ।

65

कृतज्ञता

वि.सं. 2035 में पाटण (गुजरात) में पूज्य दादा गुरुदेव परम शासन प्रभावक **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्रसूरीश्वरजी महाराजा** एवं परमोपकारी भवोदधितारक पूज्यपाद गुरुदेव पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्यश्री के शुभ सान्निध्य में चातुर्मास करने का सुअवसर मिला, इसे मैं अपने जीवन का परम सौभाग्य मानता हूँ ।

पूज्य गुरुदेवश्री शारीरिक अस्वस्थता के कारण चातुर्मास बाद भी पाटण में ही स्थिरता थी । ज्यों ज्यों समय बीत रहा था, त्यों त्यों पूज्य गुरुदेवश्री का शारीरिक स्वास्थ्य गिरता जा रहा था । परंतु उनकी चित्त प्रसन्नता और समाधि भाव उच्चतम स्थिति में था ।

वैशाख सुदी-13 के दिन नगीनदास मंडप में भायखला निवासी वेलजीभाई की भागवती दीक्षा विधि संपन्न हुई और वे **पू.मु. श्री कुंदकुंदविजयजी म.** के शिष्य **मु. श्री वीरसेनविजयजी** बने ।

उसी रात्रि में पूज्यपाद गुरुदेव पंन्यासजी भगवंत का स्वास्थ्य खूब चिंताजनक था ।

पूज्यश्री के शारीरिक स्वास्थ्य की संपूर्ण जवाबदारी **पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.** बखूबी से वहन कर रहे थे ।

देर रात तक **पूज्य मुनिराज श्री वज्रसेनविजयजी म.** खूब श्रम लेकर पूज्यश्री के स्वास्थ्य की चिंता कर रहे थे ।

वैशाख सुदी-14 का दिन पूज्य गुरुदेवश्री के लिए खूब भारी था ।

गत रात्रि और दिन भर के श्रम के कारण **पू.मु. श्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** भी खूब थके हुए थे ।

उस समय मैं भी पूज्यश्री के साथ में था । उस समय मेरी उम्र 21 वर्ष की और दीक्षा पर्याय 3¼ वर्ष का था । यद्यपि मैं हमेशा पूज्यों के साथ मांडली में ही प्रतिक्रमण करता था, फिर भी मैंने **पूज्य मु. श्री**

वज्रसेनविजयजी म.सा. को विनती की, **'आपकी अनुमति हो तो मैं भी पूज्यपाद गुरुदेवश्री के साथ प्रतिक्रमण करने आऊं ?'**

पूज्य मुनिराजश्री ने मेरी भावना को देख सहर्ष सम्मति दी !

पूज्य गुरुदेवश्री को अंतिम पक्खी प्रतिक्रमण पढाने का एवं उनकी अंतिम अद्‌भूत समाधिभाव को प्रत्यक्ष निहारने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ ।

इस कलियुग के महान योगी पुरुष की उत्कृष्ट समता और समाधि के साथ परलोक प्रयाण के दृश्य को नजरो नजर देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

यह सारा प्रभाव परमोपकारी **पूज्य मुनिराजश्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** का ही था उस उपकार को मैं कभी भूल नहीं सकता ।

卐 卐 卐 卐 卐

पूज्य गुरुदेवश्री का विदाई के साथ ही मेरा शिरछत्र चला गया ।

परंतु उसके बाद **पूज्य मुनिराजश्री वज्रसेनविजयजी म.** ही मेरे शिरछत्र रहे !

साधु जीवन के प्रत्येक अंग, फिर चाहे स्वाध्याय हो, योगोद्वहन की क्रिया हो, लेखन, प्रवचन, विहार चर्या एवं चातुर्मास कहाँ और किसके साथ ? यह सब जवाबदारी परमोपकारी **पूज्य मुनिश्री वज्रसेनविजयजी म.सा.** ने वहन की है, जीवन के अंतिम क्षण तक उनके उपकारों को मैं कभी भूल नहीं सकता ।

वि.सं. 2067 में मेरी आचार्य पदवी के बाद मेरा प्रथम चातुर्मास भायंदर हुआ । दिल में पूज्यश्री के दर्शन-वंदन की खूब उत्सुकता थी ।

चातुर्मास समाप्ति बाद तुरंत ही भायंदर से राजकोट की ओर विहार प्रारंभ हुआ ।

उस समय पूज्यश्री भी सुरेन्द्रनगर से विहार कर राजकोट पधार रहे थे । बराबर 18 वर्षों के बाद राजकोट में वि.सं. 2068 पोष सुद में पूज्यश्री के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त हुआ ।

पूज्यश्री ने प्रेम और वात्सल्य से नहला दिया ।

उसके बाद जामनगर तक विहार और आराधना धाम में 2-2½ मास तक साथ में रहने का सौभाग्य मिला । उनके जैसी उदार मनोवृत्ति, हृदय की विशालता, प्रेम और वात्सल्यभाव विरल आत्माओं में ही देखने को मिलता है ।

66 विशाल उदार मनोवृत्ति

वात्सल्यमूर्ति **पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी म.** का हृदय खूब विशाल व उदार था ।

दु:खी साधर्मिक या गरीब के दु:ख को देख उनका हृदय द्रवित हो जाता था ।

कमजोर को सहाय करना, उनका एक विशिष्ट गुण था ।

घटना वि.सं. 2071 की है । पूज्यश्री कस्तुर धाम में विराजमान थे उस समय मैं भी विहार करते हुए पालीताणा पहुँचा ।

एक दिन बात ही बात में मेरे साथ विहार सेवा में साथ रहनेवाले सहदेव ने पूज्यश्री को निवेदन किया, **'झारखंड के छोटे से गांव में रहता हूँ ! मेरे रहने का घर गिर गया है, उसे नया बनाने में थोडी मदद की आवश्यकता है ।'**

पूज्यश्री ने मेरी ओर देखा और पूछा, **'कितनी आवश्यकता है ?'**

मैंने कहा, **'थोडी मदद हो चुकी है, अब थोडी जरुरत है । दो लाख की जरुरत है ।'** इतनी मदद मिल जाय तो इसका काम हो जाएगा ।

एक क्षण का भी विलंब किए बिना पूज्यश्री ने कहा, **'काम हो जाएगा ।'**

दूसरे ही दिन पूज्यश्री के उपदेश से किसी भक्त ने सहदेव को 2 लाख की मदद कर ली ।

8-10 हजार के मासिक वेतन धारी को एक साथ में इतनी बडी रकम से मदद करवाना, दिल की उदारता के बिना संभव नहीं है ।

ऐसे एक नहीं, सैकडों प्रसंग पूज्यश्री के जीवन में बने है ।

उनके हृदय की विशालता को शत शत वंदन-नमन !

67

अंतिम-भावना

(कालधर्म के ठीक एक वर्ष पहले पूज्य पंन्यासजी म. के द्वारा लिखाया हुआ पत्र, जो छोटे महात्मा को दिया गया था ।

पूज्यश्री की सूचना थी कि मेरे कालधर्म के बाद यह पत्र **आ. श्री हेमप्रभसूरिजी म.सा.** को देना)

जेठ सुदी-6, संवत् 2076

मेरे आत्मीय गुरुबंधु **आ. श्री हेमप्रभसूरिजी** जोग,

इस जन्म में कर्मों के उदय के कारण कई कठिनाइयां, रोग आए । उनमें परमात्मा और पू. पंन्यासजी म. **(पू.पं. श्री भद्रंकरविजयजी म.)** की अदृश्य कृपा से इतने वर्ष तक आराधना कर सका हूँ । उसमें तुमने भी सभी रोगों में मेरी छाया की तरह साथ में रहकर मुझे सतत साता प्रदान कर नया जीवन दिलाया है ।

मेरी शारीरिक प्रतिकुलताओं में भी सभी योगोद्वहन में सहायक बनकर पंन्यास पदवी तक पहुँचाया ।

मेरी सभी शुभ इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए रात-दिन निरंतर महेनत कर उन्हें साकार रुप दिया है ।

सभी ज्येष्ट पूज्यों को एवं वृद्धों को संभाला और उन्हें समाधि प्रदान की ।

मेरी शारीरिक प्रतिकूलताओं में जीवदया-अनुकंपा और साधर्मिकों को सहायता कर मुझे साता दी ।

सभी कार्यों में तुमने महेनत की और मुझे आगे किया और मेरा नाम बढाया ।

मेरी निरंतर बीमारी में शारीरिक और मानसिक रीति से मुझे समाधि प्रदान करने में खूब सहायता की, अतः मेरी भावनाएं तुम्हें बताता हूँ, उसके अनुसार तुम करना ।

(1) अंतिम 3-4 वर्षों में मेरी शारीरिक शक्ति खूब घट गई है अतः अब कोई मरणांत तकलीफ आए तो मुझे जामनगर से आगे कहीं भी नहीं ले जाना ।

(2) मेरी 78 वर्ष की उम्र में साहेबजी की कृपा से अच्छी आराधना हुई है, अतः अब मरणांत बीमारी आए तो ओपरेशन या वेंटिलेटर पर रखकर मुझे बचाने का प्रयत्न मत करना ।

(3) मेरा आयुष्य जिस गांव में पूर्ण हो, उसी गांव में मेरा अग्नि संस्कार करना ।

(4) मेरे नाम से पगले या देहरी मत बनाना ।

(5) शक्य हो तो मेरी तबियत में, जिन्होंने मुझे सिरीयस स्थिति में बचाया, ऐसे डॉक्टरों के हाथों से अग्नि संस्कार कराना ।

(6) मेरी भावनानुसार जिन संस्थाओं में साधु-साध्वीजी म. की वैयावच्च आदि प्रवृत्तियाँ होती है, उसमें मेरे बाद तुम अपना मार्गदर्शन देकर उन प्रवृत्तियों को आगे बढाना ।

(7) मेरे इस जीवन दरम्यान मेरे से किसी का लेश भी मन दुःख हुआ हो तो उसके लिए मैं मिच्छा मि दुक्कडम् देता हूँ ।

(8) संयम जीवन में सभी संप से रहना, वैयावच्च के कार्य में रत रहना, सभी समुदायों के साथ औचित्य पालन में उद्यमवंत रहना, यही मेरी भावना है, जिससे साहेबजी का गौरव बढेगा ।

लि. वज्रसेनविजय

68 मृत्यु के आगमन को जाननेवाले

हालार की धन्यधरा पर वि.सं. 2077 **पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी म.** की पावन निश्रा में जेठ वदी-3 से 7 तक भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ ।

'निर्मल वसंत विहार' के मूलनायक महावीर स्वामी भगवान की अंजन विधि उनके वरद हस्तों से संपन्न हुई । उनका बचपन में वर्धमान नाम था, **अतः जीवन के अंत में भी वर्धमान स्वामी की अंजनविधि संपन्न की । मुमुक्षु शिल्पा एवं निशिबेन को भी अपने वरदहस्तों से रजोहरण प्रदान किया ।**

दीक्षा विधि के बाद गुरुभक्त मिलन भिवंडी-मुंबई जा रहा था, तब वह पूज्यश्री को वंदनार्थ गया ।

पूज्यश्री ने कहा, **'क्या अब मुंबई जाना है ?'**

मिलन ने कहा, **'बहन के घर प्रभुजी का प्रवेश कराकर वापस जल्दी आ जाऊंगा ।'**

मुंबई या भिवंडी का कोई काम है ?

'पूज्यश्री ने कहा, बस, अब सब पूरा हो गया है, अब कभी कुछ काम नहीं रहेगा ।'

मिलन ने कहा, **'साहेबजी ! ऐसा क्यों बोल रहे हो ?**

पूज्यश्री ने कहा, ऐसे ही ।'

पूज्यश्री को पता चल गया था, **'अब विदाई के दिन आ रहे है ।'** अतः उन्होंने ईशारे में कह दिया, **'अब कोई काम नहीं है ।'**

हर बार मुंबई या भिवंडी का कुछ न कुछ शासन उपयोगी काम बतानेवाले पूज्यश्री ने इस बार कह दिया, अब कुछ भी काम नहीं है ।

इससे ख्याल आता है कि वे अपनी भावी मृत्यु को भांप गए थे । और मृत्यु के स्वागत के लिए सुसज्ज भी थे ।

❀ पूज्य का सांसारिक भत्रिजा वंदन करने के लिए आया, तब पूज्यश्री ने कहा, **'रवि ! अब मेरा काम पूरा हो गया है ।'**

❀ शाम को साध्वीजी म. वंदनार्थ आए तब उन्हें भी ईशारे में कहा, **'अब नए देह को धारण करने का समय आ गया है ।'**

❀ इसी बीच बलेज तीर्थ के सरमणभाई पूज्यश्री से मिले तब आत्मा के विषय में विचार विमर्श किया ।

सरमणभाई ने कहा, **'अब मुझे भी ऊपर जाना है ।'** तब पूज्य पंन्यासजी म. ने कहा, तुमको तो अभी रहना है, मुझे तो 2-4 दिनों में ही जाना है ।

इस प्रकार हालारतीर्थ में अपने अंतिम दिनों में कई पुण्यात्माओं को प्रेरणा या उपदेश के माध्यम से अपने जाने के अंतिम दिनों का ईशारा कर दिया था । परंतु इस ईशारे को जानने व समझनेवाला कोई नहीं था ।

❀ जेठ वदी-अष्टमी के दिन आराधना धाम से विहार कर खटीयार पहुँचे ।

दिन में अनेक बार थोडी-थोडी देर के लिए सोते रहे परंतु जगने के बाद थोडा-थोडा स्तोत्र आदि का श्रवण कर स्वाध्याय किया ।

रात्रि में खूब गर्मी थी, 3 बजे पसीना हुआ और बुखार भी आ गया ।

पानी के पोते करने से थोडा बुखार उतर गया, फिर स्वस्थता पूर्वक प्रतिक्रमण किया ।

जागृत अवस्था में यह पंन्यासजी म. का अंतिम प्रतिक्रमण था ।

दूसरे दिन जामनगर की ओर आगे विहार था, परंतु B.P. में गडबड रही । 220 और 110 हो गया ।

विहार स्थगित कर डॉक्टर की सलाह से ट्रीटमेंट चालू की गई ।

दोपहर 12 बजे बुखार कम हुआ और B.P. भी 140-90 हो गया ।

सबको थोडी राहत हुई परंतु यह आशा ठगारी थी । शाम को पुनः Vomiting चालू हो गई और युरिन का कंट्रोल दूर हो गया ।

शाम को पूज्य पंन्यासजी म. को जाम नगर हॉस्पीटल में Admit किया गया । रात्रि प्रसार हुई ।

जेठ वदी-10 के दिन थोडा सा सुधार महसुस हुआ । थोडा भान भी आया । ईशारे में जवाब देने लगे । बोलने में जबान अस्पष्ट थी ।

शाम तक 10-20% स्वास्थ्य में सुधार हुआ ।

जेठ वदी-11 सोमवार के दिन स्थिति गंभीर हो गई । श्वास का Level कम-ज्यादा होने लगा ।

डॉक्टरी ट्रीटमेंट से थोडा कंट्रोल में आया, परंतु शाम को 4 बजे पुनः B.P. लॉ हो गया और ऑक्सीजन व पल्स भी घटने लगा ।

69 पूर्व संदेश का पालन

पूज्य पंन्यासजी म. के जीवन में अनेक बार गंभीर बीमारियां आई और अनेक बार वे उन गंभीर बीमारियों में से भी आबाद बच गए ।

स्वस्थ अवस्था में पूज्य पंन्यासजी म. का स्पष्ट आदेश कहो तो आदेश और भावना कहो तो भावना ।

'मेरा अंतिम समय उपाश्रय में ही व्यतीत हो, ऐसी मेरी भावना है । मेरी स्थिति कैसी भी हो परंतु अंतिम श्वास तो उपाश्रय में ही जाय, इस बात का खास ध्यान रखना ।'

पूज्यश्री की इस भावना से डॉ. एल.एस, वोरा भी अज्ञात नहीं थे, अतः उन्होंने ईशारा करते हुए कहा, **'अब पूज्यश्री को उपाश्रय में ले जाने का समय आ गया है ।'**

डॉ. के इन शब्दों को सुनकर **आ. हेमप्रभसूरिजी म.** को खूब आघात लगा ।

परंतु पूज्यश्री की तीव्र भावना को ध्यान में रखते हुए अब द्रव्योपचार को गौणकर भावोपचार की साधना हेतु पूज्य पंन्यासजी म. को ओसवाल कॉलोनी के **'दर्शन विला'** उपाश्रय में ले जाया गया ।

नमस्कार महामंत्र की सामूहिक धून चालू की गई । अंतिम निर्यामणां प्रारंभ की गई । चार की शरणागति आदि का मंगल पाठ चालू हुआ ।

पूज्य पंन्यासजी महाराजा की गंभीर स्थिति के समाचार वायुवेग से चारों ओर फैल गए ।

दर्शनार्थियों की भीड चालू हो गई ।

पूज्यश्री की अस्वस्थता के समाचार जानकर आराधना धाम से अनेक साधु-साध्वीजी भगवंत भी विहारकर पूज्यश्री की अंतिम निर्यामणा हेतु जामनगर पधार गए ।

नवकार की धून सतत चल रही थी । पूज्यश्री की आंखों में चमक दिखाई दे रही थी ।

पू.आ.श्री मनमोहनसूरिजी म. एवं पू.आ.श्री हेमप्रभसूरिजी म. के श्रीमुख से नवकार महामंत्र का श्रवण करते हुए अत्यंत समाधि के साथ वि.सं. 2077, जेठ वदी-11, दि. 5-7-2021 की रात्रि में ठीक 10.25 बजे पूज्य पंन्यासजी महाराज की आत्मा ने सकल संघ को निराधार छोडकर सदा के लिए प्रयाण कर लिया ।

दूसरे दिन उनकी भव्य पालखी निकली ! अग्नि संस्कार आदि के करोडों के चढावे हुए । कामदार कॉलोनी में उनका अग्नि संस्कार हुआ ।

70 पू.पं. श्री वज्रसेनविजयजी चातुर्मास सूची

क्रम.	वि.संवत्	स्थल	निश्रा
1.	2011	माधव बाग-मुंबई	पं. रोहित वि.
2.	2012	सायन	पं. भद्रंकर वि.
3.	2013	पाटण	मु. हर्ष वि.
4.	2014	जामनगर	महाभद्र वि.
5.	2015	जुनागढ	महाभद्र वि.
6.	2016	बेडा	पं. भद्रंकर वि.
7.	2017	भारजा (राज.)	महाभद्र वि.
8.	2018	पाटण	पं. भद्रंकर वि.
9.	2019	राधनपुर	मु. हर्ष वि.
10.	2020	दशापोरवाड सो. अहमदाबाद	मु. हर्ष वि.
11.	2021	नवागाम	पं. भद्रंकर वि.
12.	2022	बेडा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
13.	2023	लुणावा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
14.	2024	गढसिवाना (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
15.	2025	शिवगंज (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
16.	2026	सादडी (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
17.	2027	पिंडवाडा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
18.	2028	लुणावा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
19.	2029	लुणावा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
20.	2030	मुंडारा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
21.	2031	बेडा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
22.	2032	लुणावा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.

क्रम.	वि.संवत्	स्थल	निश्रा
23.	2033	पिंडवाडा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
24.	2034	पिंडवाडा (राज.)	पं. भद्रंकर वि.
25.	2035	पाटण	पू. रामचंद्रसू.
26.	2036	पाटण	पू. कनकचंद्रसू.
27.	2037	झिंझुवाडा	जंबूवि.
28.	2038	वडाली	खांति वि.
29.	2039	दिग्वि. जामनगर	खांति वि.
30.	2040	पन्नारुपा-पालीताणा	पू. रामचंद्रसूरि
31.	2041	गिरधरनगर (अह.)	स्वयं
32.	2042	विद्याशाला (अह.)	खांति वि.
33.	2043	ओस. जामनगर	पू. प्रद्योतनसू.
34.	2044	राधनपुर	चंद्रयशवि.
35.	2045	मांडवी	पुंडरिकवि.
36.	2046	डीसा	पू. प्रद्योतनसू.
37.	2047	गिरधर नगर (अह.)	पू. प्रद्योतनसू.
38.	2048	प्लोट-जामनगर	पू. प्रद्योतनसू.
39.	2049	पोरबंदर	पू. प्रद्योतनसू.
40.	2050	शांति भुवन जामनगर	स्वयं
41.	2051	जुनागढ	स्वयं
42.	2052	गिरधर (अहमदा.)	स्वयं
43.	2053	वढवाण	स्वयं
44.	2054	ओस.-जामनगर	स्वयं
45.	2055	कामदार जामनगर	स्वयं
46.	2056	ओस.यात्रिक-पालीताणा	पू. रविप्रभसू.

क्रम.	वि.संवत्	स्थल	निश्रा
47.	2057	महुवा	स्वयं
48.	2058	सेटेलाइट (अह.)	स्वयं
49.	2059	ओस. जामनगर	स्वयं
50.	2060	ओस. पालीताणा	स्वयं
51.	2061	सुरेन्द्रनगर	स्वयं
52.	2062	ध्रांगध्रा	स्वयं
53.	2063	पाटण (पोलनीशेरी)	स्वयं
54.	2064	बोटाद	स्वयं
55.	2065	नीलम वि. पालीताणा	स्वयं
56.	2066	बोथरा भवन पालीताणा	स्वयं
57.	2067	पिंडवाडा	स्वयं
58.	2068	ओस-जामनगर	स्वयं
59.	2069	डीसा	स्वयं
60.	2070	महोदय धाम (अहम.)	स्वयं
61.	2071	बोटाद	स्वयं
62.	2072	शांतिनगर (अहम.)	धुरंधर वि.
63.	2073	परिमल (अहम.)	स्वयं
64.	2074	ओस. जामनगर	स्वयं
65.	2075	पेलेस जामनगर	स्वयं
66.	2076	पाठशाला जामनगर	स्वयं
67.	2077	जेठी वदी-11 को कालधर्म	

71

गुरु स्तुति

औदार्य-कारुण्य जगत् प्रसिद्धं, दानैकदक्षं कृतयोगक्षेमम् ।
रोगोपसर्गेषु प्रसन्नमुद्रं, ध्यायामि शश्वद् गुरू वज्रसेनम् ।।

गुणानुरागेण प्रमोदभावं, श्रद्धादिशीलेन सुबद्ध-लक्ष्यम् ।
वाक्कायचित्तात् विगतानुरागं, ध्यायमि शश्वद् गुरू वज्रसेनम् ।।

परोपकारं सरलं स्वभावं, मोहारि जैत्रं, समता सुलीनं ।
मैत्र्यादि भावैर्कृतपुष्टदेहं, ध्यायामि शश्वद् गुरू वज्रसेनम् ।।

वैराग्यपूर्णं वचनं वदन्तं, भद्रङ्कराङ्गां हृदये धरन्तं ।
वज्राङ्क-हेम्नः प्रभया स्फुरन्तं, ध्यायामि शश्वद् *गुरू वज्रसेनम्*

(रचना – सा. श्री भाववर्धनाश्रीजी म.)

अश्रु साधर्मिक नयने वहे पण हृदय तो पूज्यश्रीनुं द्रवे,
सहाय गुणमय साधुता, परोपकारनुं व्यसन जगे,
पण नाम छे त्यां नाश छे, एक सिद्धांतनी दृढता रहे,
वज्र पुण्यना धणी, गुरू वज्रसेनने वंदना...।।1।।

पूज्य पंन्यासजी भगवंत, जेओना हृदयां जीवंत हता,
केटला सूरि गण वंदता, ने केटलानां आधार हतां,
गुरुथी अधिक थावुं नथी मारे ए हृदये राखी खेवना,
वज्र पुण्यना धणी, गुरू वज्रसेनने वंदना...।।2।।

सहुने समाधि केम रहे, ए रटण जेओनां मन रमे,
ग्लान वृद्ध-स्थिरवासी महात्मा मन शातानुं स्थान बने,
व्यक्ति परिस्थिति प्रतिकूलता ने जेओ सदा अनुकूल रहे,
वज्र पुण्यना धणी, गुरू वज्रसेनने वंदना...।।3।।

मौन रहे थोडुं कहे, थोडामां पण घणुं कहे,
हित-मितने पथ्य वाणीए, भाषा समिति सदा आदरे,
निर्भय-निःस्पृह स्पष्ट वक्ता, साचा मार्गदर्शक बने,
वज्र पुण्यना धणी, गुरू वज्रसेनने वंदना...।।4।।

72 एक जन्म्यो संघ सितारो

(राग : एक जन्म्यो...)

एक जन्म्यो संघ सितारो, शासन ने उजाल नारो,
केशु नुं नाम धरी ने, प्रगट्यो पुण्य सितारो,
हो...नथी सहेवातो विरह आपनो, क्यां जइ करुं पोकारो,
एक जन्म्यो संघ सितारो...॥1॥

फुल सम अंतरमां आपे, करुणा सागर भरियो,
ए उरमां अविरत चलकातो, साहसनो पण दरियो,
हो...आप विना ओ गुरुवर जीवतर तो छे खारो,
एक जन्म्यो संघ सितारो...॥2॥

आपनुं स्मरण करतां पण, आंखोमां आंसुओं छलकाता,
आपने भूलवानी वातो ए पण आंसुओं उभरातां,
हो...महाशुन्यताना लागे छे जीवनमां भणकारा,
एक जन्म्यो संघ सितारो...॥3॥

वज्रघात थयो सहु संघमां, शासन सितारो हटायो,
जाम नगर संघना आंगणिये, शोक सागर उभरायो,
हो...अमर रहेशे नाम सदाये, सूरज करे चमकारा,
एक जन्म्यो संघ सितारो...॥4॥

एकवार गुरुवर दर्शन देजो, करुणा करी कृपावृष्टि करजो,
कृपातणा किरणो वरसावी, भवजल पार उतारजो,
हो...स्वर्गे रही ओ गुरुवर, सार अमारी करजो,
एक जन्म्यो संघ सितारो...॥5॥

73

हे जिनशासन शणगार

(राग : हे त्रिशला ना जाया)

हे जिन शासन शणगारा, प्रेमे प्रणमुं पाया,
शासन गगने शोभी रह्या, पूज्य वज्रसेन गुरु राया ।
वज्रसेन जे अडग हता, पण समता रसना दरिया गुरु,
सौनी वच्चे थी विदाय लीधी, स्वप्न सम बनीने, हे जिन...

गंभीरता ऋजुता-मृदुता गुरुमा, गुणोना हता दरिया, गुरु
वात्सल्य प्रेमनी पराकाष्ठा, परोपकारथी भरीया गुरु
समुदायमां सौ शोधी रह्या छे, आंसुना वहे दरिया, हे जिन...

आंखोथी आजे दूर घणा पण, पण दिलथी नजीक छो गुरुजी तमे,
हृदयना द्वारे मूर्ति थी आपनी, याद अमर छे गुरुजी,
आंसुनी शाहीथी कलम कंडारीने लख्युं छे हृदयनुं वर्णन

हे जिनशासन शणगार...

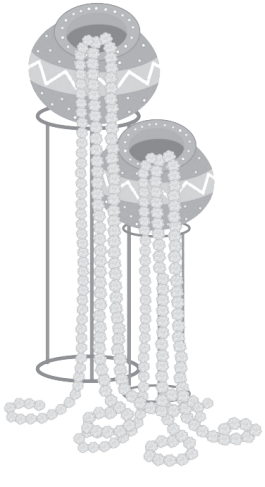

74

पूज्य पंन्यास श्री वज्रसेनविजयजी को

भाव भरी श्रद्धांजलि

(राग : जहाँ डाल डाल पर...ये भारत देश है मेरा)

जिनके नयनो से, बरस रही थी, करुणा वर्षा धारां,
श्री वज्रसेन गुरू प्यारा (2)

जिनशासन की बेजोड धरोहर, गाऊं गुण की गाथा,
श्री वज्रसेन गुरू प्यारा (2) जय गुरूदेव (4)

हालार की पावन भूमि पर जन्मे करुणा के सागर,
माणेकभाई और **जीवीबेन** के, पुत्र हुए कुलदीपक (2)
वर्धमान कुमार था नाम परंतु प्यार से **केशव** कहाया,
श्री वज्रसेन गुरू प्यारा (2) जय गुरूदेव (4)

अरिहंत देव है महाउपकारी, साधु महाव्रत धारक,
उनकी भक्ति और आज्ञामय था, बचपन से ही जीवन (2)
महामंत्र स्मरण और वैराग्य भाव से साधु जीवन पाया,
श्री वज्रसेन गुरू प्यारा (2) जय गुरूदेव (4)

नवकार के साधक / भद्रंकर गुरूवर, का सांनिध्य पाया,
गुरूदेव श्री कुन्दकुन्दसूरि के, शिष्य परम कहाया (2)
दोनों गुरूवर के हृदय कमल में, स्थान अनुपम पाया,
श्री वज्रसेन गुरू प्यारा (2) जय गुरूदेव (4)

स्वजीवन समाधिमय बनाकर, हुए समाधि दाता,
करते मुनिगण की अपूर्व भक्ति, देते थे सुख शाता (2)
समाधि मरण को पाकर जिसने जीवन धन्य बनाया,
श्री वज्रसेन गुरू प्यारा (2) जय गुरूदेव (4)

रचयिता : पू.मु. श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.

प्रकाशन-सहयोगी

निरंतर 18 वर्षीतप के तपस्वी
पूज्य पिताजी की पुण्य-स्मृति तथा
पूज्य माताजी सुशीलादेवी के जीवन में हुए विविध
सुकृतों की अनुमोदनार्थ

पूज्य पिताश्री प्रकाशचंदजी कालूरामजी धारीवाल

-: निवेदक :-

संघवी शाह कालुरामजी धारीवाल-परिवार
पाली (राज.)

विमल-विमला, सुशील-खुशबू, दीक्षित, रजत,
लब्धि, भव्या धारीवाल परिवार